यादों की परछाईं

(सामाजिक उपन्यास)

राजा गंगासिंह

ष्णा ब्रदर्स, अजमेर

यादों की परछांई

(सामाजिक उपन्यास)

लेखक
राजा गंगासिंह

कृष्णा ब्रदर्स
अजमेर

YADON KI PARCHHAI

(Novel)

by

Raja Ganga Singh

Rupees Four & Twenty-five paise

●

प्रथम हिंदी संस्करण
सितम्बर, १९६९

●

मूल्य
चार रुपये पच्चीस पैसे

●

प्रकाशक
जयकृष्ण अग्रवाल,
कृष्णा ब्रदर्स,
कचहरी रोड,
अजमेर।

●

मुद्रक
श्री जगन्नाथ यादव,
केशव आर्ट प्रिन्टर्स,
अजमेर।

दिवंगत माता पिता को
जो मुझे चार वर्ष का
छोड़ गये और विरासत
में ढेर सारी पुस्तकें और
रक्त में साहित्य के प्रति
अनुराग दे गए । उन्हीं
की स्मृति में यह पहली
रचना समर्पित है ।

प्रकाशकीय

राजा गंगासिंह कृत सामाजिक उपन्यास पाठकों के हाथों में सौंपते हुए हमें हर्ष हो रहा है। आपकी कहानियाँ आप में से बहुतों ने यदा-कदा पत्र-पत्रिकाओं में अवश्य पढ़ी होंगी।

आपने जीवन में न केवल उतार चढ़ाव देखे हैं बल्कि उसके वैविध्य में अवगाहन भी किया है। व्यवहार में यथार्थवादी होते हुए भी आदर्श से दृष्टि नहीं हटी है। उस सामंतशाही को भी बहुत नज़दीक से देखा है, जिसका जनाजा समाजवाद ढोये जा रहा है। यह सब विषय को रूप-रंग देने के लिये प्रचुर है। इसे अभिव्यक्त करने की शैली रोचक है। यही कुछ बातें हैं जो एक साधारण पाठक को आकर्षित करती हैं।

भाषा दिवस
१४ सितम्बर १९६९

जयकृष्ण अग्रवाल
संचालक

जिस समय कमल प्लेटफार्म पर पहुँचा, बम्बई जाने वाली डीलक्स रवाना होने वाली ही थी। उसके छूटने में केवल तीन मिनिट बाकी थे। कमल घबराया हुआ-सा था। उसे अभी वह चार्ट देखना था जिसमें उसके नाम के साथ सीट का नम्बर लिखा हुआ होगा। कुली के तकाज़े ने उसे और भी परेशान कर दिया था। उसके सामने जो चार्ट पड़ा था उसी को देखने में कमल जुट गया और सौभाग्य से उसी में उसका नाम मिल गया। डिब्बा सामने ही था। जिस समय कमल डिब्बे में घुसा, गाड़ी ने सीटी दे दी थी। उसने अपना बेग कुली से लिया और उसे पैसे देकर छुट्टी की और बेग उठाए हुए अन्दर चला गया। गाड़ी ने अभी प्लेटफार्म नहीं छोड़ा था। कमल को डिब्बा भरा-भरा दिखाई दिया जिस बौखलाहट और उजलत की दशा में कमल अन्दर गया था और जिस बेताबी से वह अपनी सीट ढूँढ रहा था, उसने अनेक आँखों को उत्सुकता लिये अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। उसके प्रति अन्य मुसाफिरों के आकर्षण का एक कारण उसकी वेशभूषा भी थी। कमल धोती और कुरता पहने था। कुरता गरम था, उस पर गरम जाकेट था और कन्धे पर तह किया हुआ एक भारी पर मुलायम शाल पड़ा हुआ था। डीलक्स गाड़ी अभी नयी ही चलना शुरू हुई थी और आधुनिक वेशधारी फैशनेबल समाज का इस गाड़ी पर एकाधिकार-सा लगता था। धोती या पाजामाधारी व्यक्ति शायद इस गाड़ी में सफर करने में संकोच करते या और कोई कारण रहा हो, मगर इस गाड़ी में वे एक दो ही थे।

आखिर कमल को अपनी सीट मिल ही गई। उसे डिब्बे में अधिक दूर तक नहीं जाना पड़ा था। उसने लगेज रैक में अपना यात्री बेग रख दिया और अपनी सीट पर बैठ गया। अब तक गाड़ी रवाना हो गई थी। इस दौड़-भाग में कमल कुछ गरमा गया था। डिब्बे में उसे

कुछ उमस और घुटन सी मालूम हुई। उसने अपना गरम जाकेट उतार दिया और शाल के साथ उसे पास की खाली सीट पर रख दिया। जनवरी का महीना था, बाहर बादल छाए हुए थे और काफ़ी सर्दी थी। देहली वैसे भी काफ़ी ठंडी जगह है, इस पर बादल, वर्षा और हवा, मगर डिब्बे का वातावरण उसे काफ़ी सुखदायी लगा। उसने आराम से अपने पैर फैला लिये और एक निगाह सारे डिब्बे पर डाली। उसकी सीट जिस पंक्ति में थी, वह दो-दो सीटों की पंक्ति थी और उसका रुख गाड़ी चलने वाली दिशा की ओर था। दूसरी पंक्ति तीन-तीन सीटों की थी। उस पंक्ति का रुख विपरीत दिशा में था। अब उसे डिब्बा काफ़ी खाली-सा लगा, शायद विदा करने वालों की भीड़ छँट जाने से और यात्रियों के यथास्थान बैठ जाने से। कई युवक और युवतियाँ थीं, आधुनिकतम परिधान में कई जोड़े थे जिनमें अधेड़ उम्र कुछ ही थे। उसने अब तक केवल एक सरसरी निगाह सारे डिब्बे पर डाली थी। उसने सोचा, अभी तो चौबीस घंटे इस डिब्बे में काटने हैं और इन्ही सबको देखना है सो देख ही लेगा और देखता ही रहेगा, क्या जल्दी है। उसने अपने आस-पास देखा। सामने की सीट पर एक ढलती उमर के सज्जन बैठे थे और उनके पास लगभग उन्ही जैसी आयु की एक स्त्री बैठी थी। :उसने अपना सर ढक रखा था। जब कमल बैठा ही था तो दोनों ने उसकी ओर मुड़ कर देखा था और जिस निगाह से चश्मे के भीतर से उपेक्षा की मुद्रा में उन सज्जन ने उसकी ओर देखा था, कमल अनुमान लगा सका था कि वह या तो कोई राज्य कर्मचारी होगा या किसी व्यापारिक संस्था का खुर्राट मैनेजर। वह महाराष्ट्री, गुजराती या पंजाबी उसे नहीं लगा, न ही वह दक्षिणी भारत का था। यही उस महिला की आकृति से लगता था। उसके पीछे वाली सीट पर भी एक वयस्क बैठे थे और उनके साथ एक नौ दस वर्ष की आयु का लड़का बैठा था। कमल ने स्वयं अपने को आश्वस्त-सा अनुभव किया और एक लम्बी साँस लेकर अपनी सीट में धँस गया। उसने अपने पैर और फैला लिये। अब उसने खिड़की के बाहर झाँका। खिड़की पर मावठ

की बूंदें पड़ रही थीं, बाहर बादल घिरे ही थे। उसे पुराना किला दिखाई दे रहा था।

कमल को न जाने कैसे विचारों ने घेर लिया। वह जब भी कोई ऐतिहासिक स्मारक देखता था, वर्तमान से अपने आप को अलग पाने लगता था और गुज़रे जमाने के ख्वाबों में खो जाता था। उसे कुछ ऐसा अनुभव होता था कि उसे चारों ओर से वही गुज़रा ज़माना घेरे हुए है, जकड़े हुए है, और उसके आसपास जैसे वर्तमान का कुछ है ही नहीं। कुछ क्षणों के लिए वह यह भी भूल गया कि वह गाड़ी में चल रहा है। वह पुराना किला अपने खंडहरों में अतीत के कितने चित्र छुपाए हुए है और उन खंडहरों को आसपास खड़े बबूल छुपाए हुए हैं। ये अतीत के चित्र कितने विचित्र हैं, कितने रंगीन हैं और कितने धुंधले। षडयंत्र, खून, वासना, वैभव, आतंक और अधिकार, न जाने क्या-क्या इन खंडहरों के पत्थरों ने देखा होगा। इन निर्जीव पत्थरों और उनकी सुषुप्त आत्मा ने जाने कितने व्यक्तियों का स्वामित्व सहन किया होगा। ये टूटे होंगे, गिरे होंगे और उठे होंगे। कमल अपने विचारों में खोया रहा। अतीत गौरवमय था, सुखमय था। वर्तमान कितना संघर्षमय है। सब ऐसा ही कहते हैं। कमल सोचता है, क्या वास्तव में ऐसा ही था। उसका मन इसे मानता नहीं है। अतीत के साथ जो भावना जुड़ी है, वह सुखद कल्पना भी तो हो सकती, है लेकिन इतिहास तो संघर्ष ही बतलाता है। क्या इतिहास विश्वसनीय है ? हो भी सकता है। मगर क्या उसमें मानव जीवन के हर पहलू को वर्णित किया जाता है ? नहीं। कमल तो अतीत के उसी जीवन में खो जाता है, उसकी कल्पना में। और वह जीवन ? कमल सोचता है, सुखद कैसे होता होगा और वह सुख दीर्घ-कालिक कैसे होता होगा। षडयंत्र, युद्ध, संघर्ष-ये ही उस काल के विशेष कार्य थे, तो सुख क्षणिक ही होगा और यदि वह अल्पकालिक होगा तो कितना रसमय होगा। कमल का मन उदास हो जाता है। उसके अंतर का यायावर जाग उठता है। पुराना किला पीछे छूट जाता है। गाड़ी की चाल के स्वर उभरने लगते हैं। खड़क खड़क, खड़क खट।

सहसा कमल को अपनी पत्नी की याद आ जाती है। वह क्या कर रही होगी ? बच्चे स्कूल से लौट आए होंगे और वह उनके खाने की व्यवस्था में व्यस्त होगी। कमल उसकी उदासी की कल्पना सहज ही कर सकता था। वह हमेशा यही शिकायत करती है कि जब कमल घर नहीं होता है, उसे सदा ही एक सूनापन घेरे रहता है। और कमल जहाँ भी होता है उसे भी अपनी पत्नी का अभाव महसूस होता है। वह सोचता है, आखिर ऐसा क्यों ? जब कमल अपने शहर में ही होता है और दिन भर अपने दैनिक काम से घर के बाहर रहता है, तो खाली क्षणों में उसे अपने आसपास अपनी पत्नी का आभास होता है। उसका चेहरा हमेशा कमल को अपनी आँखों में दिखाई देता है, अन्तःचक्षुओं में। इस स्थिति के लिए कौन और क्या उत्तरदायी है ? भावना या वासना ? वासना का आकर्षण तो क्षणिक होता है और जब तक किसी नये आकर्षण बिन्दु की ओर नहीं मुड़ जाता, शायद तब तक ही वह टिका रह सकता है, मगर भावना का आधार ज़रा अधिक स्थायी है। लेकिन ऐसे भाव बनते कैसे हैं ? क्यों बनते हैं ? क्या इनके पीछे संस्कार हैं ? एक दूसरे को समझ लेना है और इन दोनों कारणों से उत्पन्न निकटता और पारस्परिक निर्भरता है और फिर आगे की स्थिति प्रेम है, स्नेह है, ममता है। कमल को इस सफर में अपनी पत्नी का अभाव खटकने लगा। वह स्वयं जिस नवीन वातावरण का अनुभव कर रहा है, उसका आनन्द यदि वह अपनी पत्नी के साथ बाँट सकता तो कितना अच्छा होता। वह इस नवीनता के आनन्द से वंचित रहेगी, कमल इस भावना से अन्यमनस्क-सा हो उठा। कमल को हमेशा ऐसी ही कुछ अनुभूति होती थी, चाहे वह किसी नये रेस्तरों में जाये, कोई नयी वस्तु खाए या कोई सिनेमा अकेले, किसी मित्र के साथ देख ले। यह भाव कि काश उसकी पत्नी उसके साथ होती, उसके अन्तर्मन को कचोट लेता है। गाड़ी किसी स्टेशन को पार करने वाली थी। गाड़ी की चाल के साथ जो खड़क-खड़क का सम स्वर एक गति और ताल में चल रहा था, उसमें सहसा ही अन्तर आ गया, जैसे ताल की मात्राएँ

बदल गई हों और कमल जैसे सोते से जाग उठा हो। गति के व्यतिक्रम ने जैसे उसकी सुषुप्त अन्तर्वेदना के क्रम को तोड़ दिया हो।

कमल ने फिर अपने चारों ओर गौर से देखा, उसके आगे तो सीटों की केवल चार पंक्तियाँ ही थीं और इसी प्रकार उसकी बगल वाली दूसरी ओर की तीन सीटों वाली पंक्तियाँ थीं। देखने के लिए अब कुछ अधिक नहीं था, जब तक वह अपने पीछे डिब्बे के बड़े हिस्से को गौर से न देखे। लेकिन इतने ही समय में कमल ने देखा और अंदाज लगाया कि डिब्बे में ट्रांज़िस्टर सेट्स लगभग आधे दर्जन से ऊपर तो होंगे ही। बगल वाली तीन सीटों वाली पंक्ति में बिल्कुल उसके सामने एक जोड़ा बैठा था। पुरुष की आयु लगभग तीस वर्ष होगी और महिला की लगभग छब्बीस वर्ष। दोनों ही आधुनिक सज्जा में थे। कमल ने दोनों की ओर नज़र गड़ाकर देखा। पुरुष ट्रांज़िस्टर को बिल्कुल कान से लगाए उससे सुनने का प्रयत्न कर रहा था। चेहरे पर उत्सुकता मिश्रित भुंझलाहट थी। फिर उसने स्त्री की ओर देखा, हालाँकि कमल को न जाने क्यों महिलाओं की ओर देखने में और खासकर उनके चेहरों में झाँकने में संकोच और कुछ लज्जा-सी लगती थी। फिर भी उसका मन उसे बारम्बार ऐसा ही करने को बाध्य करता रहा था, और यहाँ वह अपने मन पर नियंत्रण नहीं कर पाता था। सहसा उस स्त्री ने भी कमल की ओर देखा और दोनों की आँखें एक दूसरे के चेहरों पर ठहर गईं। दूसरे ही क्षण कमल ने देखा कि स्त्री के चेहरे पर व्यंग्य और घृणा-मिश्रित एक हल्की मुस्कुराहट है और हल्के से झटके के साथ उसने अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ लिया। कमल भी मुस्कुरा दिया। स्त्री ने साड़ी पहन रखी थी। कन्धों पर एक केप था और सर पर एक ऊनी रूमाल बंधा था। बाल परमानेण्ट वेव से लगते थे, हालाँकि वे रूमाल में छुपे थे। चेहरा आकर्षक नहीं था किन्तु शृंगार उत्तेजक अवश्य था, खासकर काजल से खींची गई आँख की किनोरें। कमल को वातावरण में कुछ हल्कापन या यों कहिए कि छिछोरापन-सा अनुभव हुआ। वह फिर कुछ उदासी-सी अनुभव करने लगा। कुछ

शिथिलता और कुछ सुस्ती। वह उठा और डाइनिंग कार की ओर चल दिया। उसके चलते ही दोनों ओर से निगाहें उस पर उठने लगीं और फिर अखबारों में या खिड़की के बाहर उलझ गईं। उसे इसी प्रकार निगाहों की छाया में दो डिब्बे पार करने पड़े और उसे यह अनुभव कर सन्तोष हुआ कि कोई निगाह उस पर टिकी नहीं है और प्रायः सारी रिपटती चली जा रही हैं। कमल स्वभाव से कुछ संकोची है इसलिए वह भी धीर गति से सर झुकाए चलता चला गया। उसे केवल एक ही दिलचस्पी थी और वह थी अपनी वेशभूषा तथा चाल-ढाल की प्रतिक्रिया, रिपटती आँखों में झाँक लेने की। किन्तु वह संकोची जो ठहरा, आँखों में झाँकने का दुस्साहस नहीं कर सका। उसने जितना कुछ उन निगाहों में देखा, वह उसके प्रति उपेक्षा और नफरत थी और उसे इस प्रकार लोगों को चिढ़ाने में आनन्द आता था। कमल चलता रहा, मुस्कुराता रहा। डाइनिंग कार में जैसा उसका स्वागत होना था, उसे इसका हल्का-सा आभास था। इसलिए वहाँ भी आनन्द लेने वाली ही बात थी। कमल चिढ़ने और झुंझलाने की स्थिति से ऊपर उठ चुका था। कमल कुछ क्षण तक शीशा लगे दरवाज़े के सामने खड़ा रहा और फिर किवाड़ धकेल कर अन्दर घुस गया। खाद्यों और पेयों की मिश्रित गंध में वह पैठ गया। वह एक खाली टेबुल पर बैठ गया। जेब से सिगरेट निकाल कर उसने जला ली और खिड़की के बाहर देखने लगा। बादल छँट गये थे, बाहर सर्दी की शाम की पानी से धुली साफ धूप, धुले वृक्षों की हरी पत्तियों को चमका रही थी। हल्की-हल्की हवा अभी भी चल रही थी। सिगरेट का एक कश लेकर कमल ने डिब्बे में देखा और खासकर बैरों को। वह जानता था कि उसका नम्बर जल्दी नहीं आने वाला है। बैरों की रुचि तो स्लैक्स, स्लीवलेस बलाउज़धारी अथवा कुछ शलवारी युवतियों तथा चुस्त पतलून पहने युवकों की टोलियों में थी जो तीन-चार टेबुलों को घेरे बैठे थे। उन युवतियों में शायद कोई एक्ट्रेस थी या एक्स्ट्रा ही हो या इन स्थानों की उम्मीदवार, मगर वह मजमा दिलचस्प था। कमल ने सिगरेट का हल्का-सा कश लिया और

ऊपर छत की ओर मुख करके बड़ी निश्चिन्तता से धुआँ छोड़ने लगा। उसका दिमाग खाली था, सिर्फ काफ़ी के प्याले का खयाल ही वहाँ था।

'बोलो साब' कमल कुछ चौंक–सा गया। सामने बैरा खड़ा था। हावभाव में बेपरवाही, मुद्रा में चिरपरिचित उपेक्षा।

'एक खूब गरम कॉफ़ी लाओ।' बैरा झाड़न का एक हाथ मेज़ पर मार कर चला गया। कोई दस मिनट बाद वह एक ट्रे में कॉफ़ी ले आया। कमल ने सिगरेट ऐश ट्रे में बुझा दी और कप में कॉफ़ी उँडेल ली। एक चम्मच चीनी डाल ली और काली कॉफ़ी की एक चुस्की लगाई। उसकी जीभ जल गई, आँखों में पानी आ गया। उसने तुरन्त आसपास देखा, किसी ने भाँप तो नहीं लिया।

वह खिड़की के बाहर झाँकने लगा। अभी दिन अस्त नहीं हुआ था, धूप की चमक पीलेपन में अवश्य बदल चली थी। आसपास भूमि-खंड मनहर नहीं था। खुश्क-सा था, कुछ वीराना-सा। पौधे अभी हरे थे मगर अजीब टेढ़े-मेढ़े झुके हुए, बैठे हुए जैसे उनका रस सूख गया हो। वृद्धावस्था की नीरसता और भार से झुक गये हों जैसे। ज़मीन ऊसर थी, वीरान, जिस पर सफेद खारी जमी हुई थी। दृश्य रुचिकर नहीं था, आनन्दानुभूति देने वाला भी नहीं था। पेड़ पौधों की शोभा के लिए ज़मीन ही तो उत्तरदायी होती है, जैसी भूमि होगी वैसी ही उपज होगी। तो ऊसर ने इन पौधों को समय से पहले ही झकझोर डाला, उनका रस छीन लिया, उनका यौवन छीन लिया, उन्हें वृद्ध बना दिया और वे प्रकृति के शोभायमान अंग, देखने वालों के मन पर अपने प्रति विपरीत असर पैदा कर देते हैं। कमल सोचने लगा, मनुष्य के जीवन का ऊसरपन निर्धनता है, बेबसी है, और शोषण है। और कमल को अपनी पत्नी और बच्चों की याद आने। उसका छोटा पुत्र इस समय ऊधम कर रहा होगा। उसे उस समय की एक घटना याद आ गई जब बच्चा केवल दो वर्ष का था। भोजन का समय था। कमल, उसका बड़ा लड़का, जो उस समय सात वर्ष का था तथा पत्नी खाने बैठे ही थे कि छोटा रोने

लगा। पत्नी उसे गोद में उठा लाई और लिटा लिया। मगर वह अड़ा तो अड़ा ही रहा। कमल उसे गोद में लेकर टहलाने लगा। लेकिन वह चुप नहीं हुआ। पत्नी ने उससे भोजन करने का आग्रह किया और बच्चे को स्वयं ले लिया। कमल ने अपनी पत्नी के चेहरे पर देखा और उस पर एक बेबसी, ममता और त्याग की मिली-जुली छाया को तैरते पाया। बस यही तो कमल को उसमें आसक्त रखने वाली मुद्रा थी। कमल को सहसा ही बड़े ज़ोर का गुस्सा आया। उसने एक चाँटा बच्चे को लगा दिया और उसे पत्नी से छीन लिया। बच्चा एक-दम चुप हो गया। उसकी नाक से खून आ गया था। उस बच्चे के मासूम चेहरे पर आतंक था और बेबसी थी और आँखों में याचना हौले-हौले झाँक रही थी। कमल ने उसे अपने सीने से चिपका लिया और उसके आँसू ढलने लगे। उसने पत्नी की ओर देखा, भृकुटी चढ़ गई थी, व्यग्रता थी जिसमें क्रोध का छींटा भी था। उसने बच्चे को कमल की गोदी से झपट लिया। कमल उठा, आँसू ढालता अपने बिस्तर पर जा लेटा। कुछ समय बाद पत्नी उसके माथे पर हाथ फेर रही थी। कमल ने उसकी ओर देखा, मुख पर वही स्नेहमयी ममता थी। कमल के गले में गोला-सा अटकने लगा, उसने एक-बड़ा सा घूँट कॉफ़ी का लिया। ज़मीन की किस्म और उर्वराशक्ति पर बीज का विकास आधारित है। वह जितनी भारी, नमी को वहन करने वाली और गहरी होगी, पौधा उतना ही बलिष्ठ और मधुर फलदायी होगा। कमल को अपने घर की याद ने फिर उदास बना दिया। खड़क-खड़क, खड़क-खट। खड़क-खड़क खड़क-खट। कप प्लेटों, छुरी चम्मचों की खड़खड़ाहट ने तथा खाद्य और पेयों की मिश्रित गंध ने कमल को कल्पना से प्रत्यक्ष में ला पटका। उसने कॉफ़ी का आखिरी घूँट चढ़ाया, सिगरेट जलाई और अपने चारों ओर निगाह डाल कर फिर खिड़की के बाहर देखने लगा।

गंध का भी मन पर कुछ अलग ही असर होता है। न जाने कितनी स्मृतियाँ केवल गंध से ही उभर आती हैं। एक ही प्रकार की गंध

अनेक स्थानों और घटनाओं की याद दिला देती है। बाहर गोधूली का वातावरण था। जमीन का दृश्य वही था मगर आकाश की छटा बदल गई थी। शीत की संध्या। बादलों का रूप और रंग बड़ा आकर्षक था। नीले, भूरे और जामुनी छटा के बादलों की किनार पर कहीं सुनहरी रेखा उभर आयी थी। पृष्ठभूमि नीचे सिंदूरी थी और ऊपर नारंगी होती हुई गहरे पीले रंग में घुल गई थी। क्षितिज पर कुछ पक्षी बसेरों पर जाते दिखाई देते थे। तभी सफेद बगुलों की एक पाँत काले होते हुए गहरे नीले बादल की छटा के ऊपर से उड़ते हुए निकल चली थी। वृंदावन रोड स्टेशन पीछे छूट चला था। मथुरा निकट आ रही थी। गाड़ी एक अजीब मस्तानी अदा से खिंचती हुई-सी फिर बढ़ जाती थी जैसे पकड़ के बाद ढील और खिंचाव के साथ उसकी चाल धीमी होती जा रही थी। गाड़ी यार्ड में दाखिल हो चुकी थी। कमल ने डिब्बे में देखा, चहल-पहल बढ़ गई थी। उसने बैरे को निगाहों से ढूँढा और वह आता दिखाई पड़ा। कमल ने सन्तोष की साँस ली। बैरे ने प्लेट आगे बढ़ा दी उसमें बिल और कुछ रेजगारी थी। 'ले जाओ' बैरे ने इस बार कुछ अदब से कमल को निहारा।

'थैंकू साब, साब डिनर लेइंगा।'

'नहीं' और कमल अपनी सीट से उठ बाहर वाले दरवाज़े की ओर बढ़ गया। दो तीन नीचे उतरने वाले मुसाफिर और खड़े थे। गाड़ी रुकी और कमल मथुरा के प्लेटफार्म पर उतर गया।

गाड़ी से बाहर आते ही उसे सर्दी लगने लगी थी लेकिन भीड़-भाड़ और चहल-पहल में उसका मन रम गया। वह अपने डिब्बे की ओर बढ़ने लगा। उसके डिब्बे के सामने ही पत्रिकाओं और पुस्तकों का ठेला खड़ा था, वह उसमें रखी पुस्तकों के नाम पढ़ने लगा। पत्र और पत्रिकाएँ अधिकांश उसकी परिचित थीं। सहसा उसे श्रीमती पर्लबक की 'माइ सेवरल वर्ल्ड्स' दिखाई पड़ गई। उसने वह खरीद ली। पुस्तक लेकर जैसे ही वह चलने को मुड़ा, उसने देखा कि डिब्बे की खिड़की के शीशे से एक स्त्री उसकी ओर गौर से देख रही है। कमल

ने पलक झपकते उसकी ओर देखा और आगे बढ़ गया। एक क्षण कमल को लगा जैसे यह चेहरा उसका देखा-भाला हो पर दूसरे ही क्षण उसे वह भ्रम प्रतीत हुआ। अक्सर ऐसा भ्रम हो जाता है और कभी तो चेहरों की समानता अनर्थकारी भी हो जाती है। कमल अपनी सीट पर बैठ गया। गाड़ी प्लेटफार्म छोड़ रही थी। स्टेशन का कोलाहल पीछे छूटता जा रहा था। धीरे-धीरे फिर वही मन को उबा देने वाला वातावरण, वही क्रम खड़क-खड़क, खड़क-खट। खड़क-खड़क, खड़क-खट। उसने एक निश्वास ली और पुस्तक खोली 'माइ सेवरल वर्ल्ड्स।' विश्व की ख्यातिनाम नोबल पुरस्कार विजेता श्रीमती पर्लबक की जीवनी। एक महत्वपूर्ण पुस्तक। लेकिन कमल सोचता है कि संसार तो एक ही है। फिर जिन अनेकों संसारों की बात कही गई है, वे तो संसार ही के भाग हैं। मगर उन भागों की अपनी दुनिया अलग है। तो क्या करोड़ों लोगों की अपनी अनेकों दुनिया नहीं होतीं? जीवन तो किसी का भी समरूप नहीं चलता। यदि यह परिवर्तन न हो तो क्या हमेशा केवल दाल और वह भी मूंग की खाते रहने जैसी बात न होगी? फिर जीवन में रस कहाँ से आयेगा? जीने की साध मन में रखे व्यक्ति दिनों तक भूखा रहकर भी क्यों जीवित रहना चाहेगा। जीवन की यही विविधता ही तो जीवित रहने की प्रेरणा है। वही सेवरल वर्ल्ड्स। अनेकों के जीवन में विचित्र विविधताएँ मिलती हैं औपन्यासिक, मगर हरेक में उन्हें व्यक्त करने की, और वह भी मनोरंजक या सरसतापूर्ण ढंग से, क्षमता नहीं होती। कैसी कैसी घटनाएँ और कैसे-कैसे अनुभव मनुष्य के जीवन में होते हैं। कमल ने किताब बन्द कर दी और फिर सर घुमा कर डिब्बे को आद्योपांत देखा। उसे फिर कुछ ऐसा अहसास हुआ कि वही स्त्री उसकी ओर देख रही है जो मथुरा में उसकी ओर ध्यान से देख रही थी। उसने सोचा, उसका यह आभास कल्पना भी तो हो सकता है? उसके प्रति तो प्रायः अधिकांश मुसाफिरों में उपेक्षा का भाव था, लेकिन कोई तो उसकी ओर आकर्षित हो ही सकता है। भले ही वह जिज्ञासा के कारण ही क्यों न हो। उसने पुस्तक खोल

ली और पढ़ने लगा। देश-विदेश के विवरण और व्यक्तियों की जीवनी उसे अच्छे लगते थे। वह पढ़ता रहा। रोशनी ढल चली थी और तभी डिब्बे में प्रकाश हो गया। कमल ने किताब से आँखें उठाकर एक बार खिड़की से बाहर देखा। दूर भागते हुए क्षितिज पर, ऊपर उठती गहरी लाल रेखाएँ गुलाबी और जामुनी आभा में बदलती हुई अम्बर की नीलिमा और स्याही में विलीन हो चली थीं। वह प्रकृति की उस बदलती छटा को निहारता रहा। रंग घुलते रहे, नीलिमा और कालिमा में मिटते रहे और लाल, गहरी लाल रेखाएँ अब जल्दी फीकी पड़ रही थीं और फिर केवल प्रकाश की एक आभा ही क्षितिज पर रह गई। और एक ओर एक-सी ही उदासी भरी नीलिमा। सिर्फ पेड़-पौधों, तार के खम्भों की गहरी काली आकृतियाँ दौड़ती हुई उस सम को काटती जाती थीं। गाड़ी की वही गति, वही ताल। वह फिर पुस्तक पढ़ने लगा।

कमल की झपकी खुली तब गाड़ी आगे रुकने की तैयारी में रुक-रुक कर बढ़ रही थी। पहियों के पटरियों से टकराने के तालमय स्वर द्रुत से विलम्बित गत की ओर उतर रहे थे। गाड़ी धीरे से प्लेटफार्म पर आकर ठहर गई थी। उसने अपनी घड़ी में समय देखा, वह एक घण्टे से अधिक सो लिया था। उसे सिगरेट पीने की इच्छा हुई। वह उठा और उसने अपना शरीर लम्बा किया, उसे खींचा और अंगड़ाई ली।

'मिस्टर तुमने कुछ वांदा नेई तो अम बच्चे को इदर सुलादे।' कमल ने मुड़कर देखा, उसके पीछे बैठे वृद्ध सज्जन थे और उसकी सीट के आगे पैर रखने की जगह की ओर इशारा कर रहे थे।

'जरूर' और कमल डिब्बे से बाहर चल दिया। चलते समय अनायास ही उसकी निगाहें उस सीट की ओर उठ गईं जिस पर उसकी ओर घूरने वाली स्त्री बैठी थी। कमल ने अपने ख्यालात को झटका दिया। आखिर वह उधर क्यों देखता है? उस स्त्री के चेहरे में ऐसा क्या है? डिब्बे में कई सुन्दर असुन्दर सजी सँवरी महिलाएँ हैं। फिर वही क्यों? सीट खाली थी, पासवाली भी। खाना खाने चले गए होंगे। उसे कुछ

अभाव सा महसूस हुआ। वह प्लेटफार्म पर खड़ा था। स्टेशन था गंगापुर, यहाँ गाड़ी कुछ अधिक रुकने वाली थी। उसने कंधे पर शाल डाल लिया था, फिर भी बाहर उसे सर्दी लगी। उसने सिगरेट जलाई और टहलने लगा। सिगरेट वह धीरे धीरे पी रहा था। वह उसका ज़्यादा से ज़्यादा आनन्द लेना चाहता था। प्लेटफार्म पर उजाला अधिक नहीं था। वह गाड़ी से कुछ हटकर टहल रहा था। बहुत कम लोग बाहर थे, कुछ रेलवे कर्मचारी थे। तभी एक जोड़ा उसे डाइनिंग कार की ओर से उसके डिब्बे की ओर आता दिखाई दिया। रोशनी की कमी की वजह से वह उनके चेहरे अच्छी तरह से नहीं देख सका लेकिन उसने अंदाज़ा लगाया कि स्त्री वही थी और वह अब भी उसकी ओर देख रही थी। जोड़ा हँस रहा था। इस बार कमल को मन में जाने कैसा लगा। पुरुष ने अपनी सिगरेट नीचे फेंक कर जूते से मसल दी और डिब्बे में चढ़ कर दोनों हैण्डिल पकड़ कर दरवाज़े में खड़ा हो गया। स्त्री एक हाथ से हैण्डिल थामे गाड़ी के पीछे की ओर मुख किए प्लेटफार्म पर तिरछी खड़ी थी। कमल कुछ दूर था। वे आपस में बातें कर रहे थे जिसे कमल सुन नहीं पा रहा था। स्त्री बातें करते हुए भी कमल की ओर ही ताकते रहने की चेष्टा कर रही थी। उसके चेहरे पर रोशनी नहीं पड़ रही थी, डिब्बे की रोशनी को पुरुष की पतलून ने उधर ही रोक लिया था। गाड़ी ने सीटी दी और पुरुष मुड़कर अन्दर चला गया। वह मझोले कद का अधेड़ उमर का एक साँवला व्यक्ति था, उसकी रूपरेखा बहुत साधारण थी, नक़श तीखा नहीं था, चेहरे पर लालसा और विलासिता के भाव स्पष्टः झलकते थे। स्त्री लगभग दो मिनट तक उसी स्थान पर खड़ी रही। अब वह कमल की ओर सीधे देख रही थी और कमल भी उसी को देखने की चेष्टा कर रहा था। उसके चेहरे पर अब भी उजाला नहीं था, साड़ी और बालों की परछाई में कमल उसकी आकृति को आत्मसात् नहीं कर सका। गार्ड ने सीटी दी और लालटेन उठाकर हिलाने लगा। स्त्री डिब्बे में चढ़ गई। जब तक कमल दरवाज़े के पास आया, गाड़ी रेंगने लगी थी। वह ऊपर चढ़ गया और अपनी सीट पर जा

बैठा। अब तक लड़का पाँवदान में सो चुका था। वह कंबल से ढका था और उसके पैर खिड़की की ओर याने कमल की सीट की ओर थे। कमल आश्वस्त होकर अपनी सीट पर बैठ गया।

'तमकू कोई तकलीप तो नेई'

'जी नहीं, धन्यवाद।' कमल ने शाल उतार कर पास की सीट पर रख दिया। उसे फिर उस स्त्री का ध्यान आया और उसे लगा जैसे दो आँखें पीछे से मुँह बाये उसे निगल जाने की कोशिश में हो। उसके बदन में एक सिहरन हुई, शायद इस ख्याल से कि वह स्त्री उसे अब भी देख रही है या नहीं, यह बाहर की सर्दी और खुली हवा से इस उमस और घुटन में आ जाने से वह निश्चय नहीं कर पाया। वह सोचने लगा कि उसे इस स्त्री का ख्याल बार बार क्यों आता है? वह कौन है? न जाने किसकी बहिन है, किसी की पत्नी और शायद माता भी हो सकती है। क्या स्त्री के यही रूप हैं, इससे अधिक या कम वह किसी की क्या और कुछ नहीं हो सकती? जाने कहाँ की रहने वाली है, जाने कहाँ जायेगी और चली ही जायगी। इस यात्रा ही का तो साथ है और साथ भी कैसा, उसका साथी तो उसके साथ ही है, केवल एक डिब्बे में सफर करने का इत्तफाक ही तो है। फिर यह कशिश क्यों, यह आकर्षण क्यों, यह भावना क्यों?

कमल को अपनी पत्नी का ख्याल आ गया। क्या वह सो गई होगी? अरे नहीं? अभी से कहाँ। अभी तो घर का काम समेट रही होगी। उसका मन द्रवित हो आया। वह ज़रूर उसी के विषय में सोच रही होगी, कि उसने खाना खाया होगा या नहीं। वह आराम से सो भी सकेगा या नहीं। न जाने सर्दी से बचने के लिए कपड़े काफ़ी होंगे या नहीं। पन्द्रह वर्ष के विवाहित जीवन के आधार पर कमल अपने भावों की यथार्थता का दावा कर सकता है। आज उसे भूख नहीं थी। पत्नी ने चलते समय उसे नाश्ते की जगह लगभग खाना ही खिला दिया था। उसे याद आया, चलते समय उसकी पत्नी ने बड़े स्नेह से आग्रह किया था कि बैग में उसने थरमस में कॉफ़ी और टिफिन में सेंडविच रख दिए हैं, जिन्हें वह अवश्य ले ले। इस पर कमल ने हँस कर कहा था, 'तुमने

इनके लिए पेट में स्थान तो रहने ही नहीं दिया, फिर भी ये चीज़ें तुमने बनाई हैं, स्नेह से रखी हैं, इसलिए अवश्य खाऊँगा।' उसे यह बात याद आ गई। उसने उठकर बैग उतारा, तभी फिर उसकी दृष्टि उस स्त्री की ओर मुड़ गई और कल्पना में उसकी स्नेहमयी पत्नी आ खड़ी हुई। भावों का संघर्ष, आकर्षण का संघर्ष, एक स्थायी, एक अस्थायी। तब अस्थायी में ये कशिश क्यों। जब कि वह यह अच्छी तरह जानता था कि सफर का साथ कोई साथ नहीं होता। वह अपनी पत्नी की याद मात्र में उस स्त्री के प्रत्यक्ष अस्तित्व को उस समय भूल सा ही गया। उसने बैग पास वाली सीट पर रख दिया। लेकिन घुटने पर रख कर छोटा सा 'देवीदयाल' टिफ़िन खोल लिया, थर्मस के ढक्कन में से कप में कॉफ़ी उंडेल ली। कॉफ़ी काली थी जो उसे प्रिय थी। वह सेंडविच खाने लगा और कॉफ़ी का प्याला दो घूँट में साफ कर गया। टिफ़िन उसने वापस रख दिया, एक प्याला कॉफ़ी और ली और आँख मूंद, जायका ले लेकर चुस्की लेने लगा। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि उसकी पत्नी अपनी स्नेहमयी मुस्कान और ममतामय सौंदर्य लिये उसके सामने जैसे साकार खड़ी थी। वह इस सुखद स्मृति में वर्तमान भूल गया। कॉफ़ी का आखिरी घूँट खतम किया उसने। खड़क खड़क, खड़क-खट और विचारों के जाल से निकल वह अपनी सही स्थिति में लौट आया। उसने थर्मस बैग में रख दिया। उसकी इच्छा नहीं हुई कि बैग को तत्काल यथास्थान रख दे। वह कुछ शिथिलता अनुभव कर रहा था। आखिर उसने बैग बन्द किया और उठा कर रैक में रख दिया। तभी अनायास ही उसकी दृष्टि उस स्त्री की ओर फिर उठ गई।

कमल बैठ गया। इस बार लिवर दबाकर उसने अपनी सीट को लम्बा किया और पैर फैला कर लेट गया। उसे फिर कुछ ऐसा आभास हुआ कि दो आँखें उसे घूर रही हैं। उसे अब स्त्री के ख्याल से कुछ रोमांचक अनुभूति हुई। तभी वह अपनी पत्नी के विषय में फिर सोचने लगा। जैसे किसी निकटता की याद आने पर बेचैनी होती है, ऐसा कमल को महसूस हुआ किन्तु उसने यह भी अनुभव किया कि उसके मन

और भावना की एकाग्रता में वह अजनबी स्त्री एक व्याघात बन रही है। उसे उस स्त्री की बराबर मन में उठने वाली याद अपनी पत्नी की सुखद स्मृति का अतिक्रमण सा लगा। उसने उसे भुला देने का निरंतर प्रयत्न किया मगर न जाने कौन सा आकर्षण था उसमें जो बार बार कमल के विचारों पर छा-छा जाता था। आज से पूर्व अपने विवाहित जीवन में, कमल न जाने कितनी स्त्रियों से मिलता जुलता रहा था। देहली के आमोदमय जीवन में रोज़ ही तो वह सैंकड़ों स्त्रियों को देखता है किन्तु एक भी तो आज तक उसे अपनी पत्नी के समान सुन्दर और आकर्षक नहीं लगी। कभी एक पल के लिए भी किसी स्त्री का विचार अथवा उसकी ओर झाँकने की लालसा उसके मन में नहीं हुई। आज ये विचार उसकी संकुचितता या पिछड़ापन ही समझे जायेंगे या वह किसी सम्मोहन में था? कुछ भी हो पर इसमें बुरा क्या था? वह सुना करता है कि दीर्घकालीन विवाहित जीवन के बाद पुरुष अपनी पत्नी में रुचि खो देता है। होता होगा? कमल के कई परिचित उसे अपना यही अनुभव बतलाते रहे हैं। उनकी इस प्रकार पत्नियों में अरुचि का एक न एक कारण रहा है और जैसे जैसे वे घर के बंधनों से निकलते गए, स्वच्छन्द जीवन में उनकी पत्नियों के दोष और भी उभरने लगे। किन्तु उसके साथ ऐसा कभी भी क्यों नहीं हुआ? उसके जीवन में जकड़न कहाँ है और न उसने अपनी पत्नी को ही बांध कर रखा है। आज के समाज के जीवन में दोनों स्वच्छंद विचरते हैं फिर यह पारस्परिक प्रगाढ़ निष्ठा और एक दूसरे के प्रति अनुराग प्रगाढ़तर क्यों हो रहा है ? हालाँकि उसने सुना और पढ़ा है कि दीर्घकालिक वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे को इतना अधिक समझ लेते हैं, दोनों का एक-दूसरे का जीवन इतना पास आ जाता है कि भले ही परस्पर यौन आकर्षण शनैः शनैः समाप्त हो जाता है किन्तु एकात्मता प्रगाढ़ होती जाती है। फिर भी उसे स्वयं की स्थिति पर विस्मय होता है। लेकिन आज यह क्या हो गया है उसे ? वह अजनबी स्त्री की ओर क्यों आकर्षित हो रहा है ? उसका कुछ

ऐसा मत था कि ऐसी कशिश बिना आत्मिक सम्बन्धों या संस्कारों के नहीं होती, फिर उस स्त्री से कैसा आत्मिक सम्बन्ध ? एक हमसफर, साधारण यात्री और उसने उसे ठीक से देखा तक तो था नहीं, अन्यथा सम्भव था उसके चेहरे की बनावट या सौंदर्य में विशेष आकर्षण होता या वह उसके चेहरे पर से उसके मन की भावना को पढ़ सकता। एक के मन की तीव्रतम कशिश, जिसके प्रति हो, उसे अपनी ओर आकर्षित करने में कुछ तो कार्य करती ही है। टेलीपैथी की सार्थकता में अनेकों विद्वानों का विश्वास तो है ही। कमल ने इस उलझन भरे विचार से अपने मन को मोड़ने के लिए किताब पढ़ना शुरू कर दिया और उसका मन उसमें लग भी गया। गाड़ी ने एक हल्का सा झटका खाया और कमल उठ कर बैठ गया, सीट भी बैठने की स्थिति में आ गई। वह कुछ देर सो लिया था। गाड़ी एक स्टेशन में घुस रही थी, कोई बड़ा स्टेशन था, काफ़ी रोशनी थी, कुछ चहल पहल भी थी। दो-तीन आकृतियाँ उसको सामने की खिड़की के पास दिखाई दीं और फिर वे तेज़ी से आगे पीछे निकल गईं। पीछे सामान लिये एक कुली निकल गया। वह आश्वस्त होकर फिर पीछे की ओर ढल गया और उसने आँखें बन्द कर ली। गाड़ी फिर अपनी मंज़िल पर चल दी थी। डिब्बे की रोशनी मद्धिम हो गई थी। सब ओर उनींदा और अलसाया वातावरण था। उसने शाल अपने पैरों पर डाल लिया और आँखें बन्द कर लीं। उसकी अपनी आँखों के बंद परदे पर एक अनंत कालापन और उस पर एक आलोकमान पीला धब्बा हिला, फिर थर-थराया और एक छोटे बिन्दु के समान रह गया। वह बिंदु निरंतर थरथरा रहा था। फिर वह बिन्दु फट जाता है और उस काले पर्दे पर अनेक तारे चमकने लगते हैं और तभी सहसा उसकी पत्नी का उज्ज्वल सुन्दर मुस्कुराता हुआ चेहरा उस काले पर्दे को चीर कर उभर आता है, चेहरे पर चिरस्थायी रहने वाला वही ममतामय, स्नेहमय भाव था। तब एक एक कर उसके तीनों बच्चों के चेहरे अपनी मां की ममतामय मुस्कुराहट की छाया में मुस्कुराते हुए उभरने लगते हैं। बड़े

बच्चे के चेहरे पर बाल सुलभ गम्भीरता, सौम्यता का भाव लिये, छोटे का शरारत भरा, हँसता, बेफिक्र मुद्रामय चेहरा और बच्ची का भोला चेहरा जिस पर बेबसी जैसी एक छाया थी जिसे देखते ही दया उमड़ आती है। कमल इन्हीं में खो गया और सो गया। इसी तंद्रिल अर्द्ध नि-द्रामय अवस्था में उसे कुछ ऐसा आभास हुआ कि शायद वही स्त्री उसके पास वाली सीट के पास आकर खड़ी है। यह भावना कुछ इतनी तीव्र और मन और मस्तिष्क पर असर डालने वाली थी कि कमल बैचेन हो उठा। कुछ क्षणों के लिए वह जाग पड़ा और उसकी नाक में सेंट और पाउडर की गंध घुस गई। इसी तंद्रिल अवस्था में उसने खिड़की की ओर करवट बदली लेकिन तंद्रा उड़ती चली, उड़ गई और वह जाग गया। वह उठकर बैठ गया। उसने अपने आगे पीछे देखा। अगली सीट पर अधेड़ स्त्री खर्राटे ले रही थी, शायद उसका पति सीटों के बीच सो चुका था। पीछे की सीट पर बैठे सज्जन सीट को लम्बा किये कम्बल को सर तक ओढ़े सो रहे थे। कमल कुछ बेचैनी सी अनुभव कर रहा था। उसे सिगरेट पीने की इच्छा हुई। वह धीरे से उठा और मुख्य डिब्बे, संडास तथा बाहर खुलने वाले दरवाज़ों के बीच के कक्ष की ओर चल दिया। इस बार फिर उस स्त्री की ओर झाँकने की प्रबल इच्छा हुई मगर उसने मन को डिगने से रोका। उसकी सीट से कक्ष कुछ ही कदम पर था।

उसने कक्ष का द्वार बड़ी सावधानी से धकेला कि किसी यात्री को व्याघात न हो। हवा का झोंका एकदम अन्दर आया और उसके साथ सेंट और पाउडर की गंध। एकाएक उसकी निगाह दो प्राणियों पर पड़ी जो फ़ोल्डिंग सीट पर अधलेटे आपस में लिपटे हुए थे। कमल का एक पैर कक्ष में था और एक अन्दर। एक निमिष मात्र में उसने कदम पीछे लेने का निश्चय किया और उसी निमिष में वे दोनों प्राणी एक दूसरे को झटक कर खड़े हो गये थे और कमल कुछ भूला सा कक्ष में आ चुका था। उसकी निगाह सीधे उस स्त्री के चेहरे पर पड़ी और क्षण भर के लिए वहाँ स्थिर हो गई और कमल को ऐसा लगा

जैसे किसी ने उसके सीने पर घूँसा-सा मार दिया हो। उस मद्धिम प्रकाश में भी कमल अब उसे पहचान गया था, न केवल यही कि वह वही स्त्री है जो उसे घूरती रही है बल्कि वह कौन है। कमल ने एक झलक उस पुरुष के चेहरे की भी देखी और दूसरे ही क्षण वह लेवेट्री में घुस गया। उसका दिल धड़क रहा था, उसे पसीना आ रहा था, वह स्वयं को नर्वस अनुभव कर रहा था। इस सर्दी में भी उसका गला सूखने लगा था। उसने बेसिन का नल खोलकर कुल्ला किया। पानी में क्लोरिन, कोयले और धुंए की मिश्रित गंध थी। सहसा उसे ध्यान आया कि किसने और किन हालातों में वह पानी टंकी में भरा होगा। उसे कुछ ग्लानि हुई मगर गले की खुश्की, जलन ? वह दो तीन घूँट उस गंदे मगर ठंडे पानी के पी ही गया। उसे कुछ तसल्ली हुई। उसने पेशाब की और लेवेट्री को चारों ओर से देखा। एक जगह दिवार पर अंग्रेज़ी में एक अश्लील वाक्य लिखा था। तो यह डीलक्स की आधुनिक सभ्यता है जो आधुनिक कहलाने वाली भाषा में व्यक्त की गई है ? और जो कुछ उसने अभी अभी देखा था, वह क्या था ? उस स्त्री का चेहरा वह पूरी तरह पहचान चुका था। एक बार उसका शरीर रोमांचित हो उठा। वह लेवेट्री से बाहर आ गया था। वे दोनों कक्ष से जा चुके थे। कमल फोल्डिंग सीट पर जा बैठा। उसने इत्मीनान से सिगरेट सुलगाई। उसे लगा मानो उसके हाथ काँप रहे हैं। वह धीरे धीरे सिगरेट पीने लगा। वह कभी लम्बा कश तो लगाता ही नहीं था। और ! स्मृतियाँ तथा भावनाओं का तूफान उसके मस्तिष्क में उठने लगा। उस स्त्री की ओर आकर्षण का कारण, कुछ कुछ उसे अब समझ में आया। वह उसे जानता था, उसके चेहरे की पहली झलक ने ही कमल की स्मृति को झकझोर दिया था, उत्सुकता को मार्ग दिखा दिया था।

तो इस आकर्षण का कारण पूर्व परिचय या अतीव निकटता थी, जो कि उसकी केवल एक झलक कमल को बार-बार उसकी ओर देखने को प्रेरित करती थी। कमल के जीवन में किसी युवती से वही

पहली और अन्तिम निकटता या घनिष्ठता थी। इस बात को लगभग बीस वर्ष गुज़र चुके हैं। कमल सोचने लगा, क्या नीला उसे इसी प्रकार, इसी रूप में मिलती थी ? कमल को उससे कुछ ऐसी आशा तो थी। वह यह अनुमान केवल उस स्थिति के आधार पर लगा सकता था, जिसमें दोनों का साथ छूटा था और वह सदैव के लिए छूट गया था। कमल के जीवन की धारा बदल गई थी और उसका जीवन एक दिशा में चल पड़ा था। जीवन में एक स्थान यौन आकर्षण और यौन सम्बन्ध का भी होता है और कमल का जीवन इस दिशा में कुछ ऐसे चल रहा था जहाँ कि उसे बार-बार आकर्षित होने या नये-नये सम्बन्ध बनाने की आवश्यकता ही महसूस नहीं होती थी। वह अपने वैवाहिक जीवन से बहुत संतुष्ट था, सुखी था। जीवन में अनेकों संघर्ष आए मगर उसका जीवन समरस ही रहा। वह अपने जीवन में अनेकों स्त्रियों के सम्पर्क में आया था, यौन आकर्षण यदि कभी हुआ भी तो वह क्षणिक भावना मात्र तक ही सीमित रहा। नये यौन सम्बन्ध न बनने को उसके मित्र उसकी भीरुता और अतीव संकुचित प्रवृत्ति मानते थे, कई बार उसका मज़ाक भी उड़ाया करते थे। मगर कमल अपने मन को यह मानने के लिए कभी तैयार नहीं कर सका कि स्त्री केवल भोग्या से अधिक कुछ है नहीं। वह नहीं जानता क्यों, उसे स्त्री मात्र में मां का रूप सदा ही प्रमुख दिखाई दिया है, वह फिर बेटी हो, बहिन हो, पत्नी या प्रेयसी हो। स्त्री के इन विभिन्न रूपों में कहीं घुलामिली, कहीं उभरी हुई ममता और निश्छल स्नेह उसे निरंतर परिलक्षित हुआ था। लेकिन इस तर्क का उसके पास कोई उत्तर नहीं था। जहाँ तक इस लड़की का प्रश्न है, इससे भी कमल का यौन सम्बन्ध कभी नहीं रहा। ऐसा क्यों हुआ ? आज कमल ने इस स्त्री के प्रति अपने आकर्णण और उससे प्रेम होने के विषय में फिर सोचा और उसका विश्लेषण करना चाहा।

उसने दूसरी सिगरेट सुलगा ली। वह पुरानी स्मृतियों और उन सारी विगत घटनाओं के पुनरावलोकन और विश्लेषण में उलझ गया।

उसका मन फिर अपनी सीट पर जाने को नहीं हुआ। बीस वर्ष। खड़क-खड़क, खड़क-खट। उसने एक निश्वास छोड़ा। जैसे यह गाड़ी चली जा रही है, जीवन भी तो इन बीस वर्षों से चल रहा है। समान गति, धीमी गति और विरामों के साथ। बीस वर्ष पूर्व कमल के साथ घटी वह घटना और उसकी याद भी अब तक विस्मृत हो गई थी और आज अचानक एक दिन विचित्र स्थिति में उसकी सोई हुई स्मृति ने फिर करवट ली है, फिर रूप लिया है।

तो बीस वर्ष हुए। उसने उस वर्ष लखनऊ विश्वविद्यालय से प्रथम वर्ष की परीक्षा दी थी और परिणाम की प्रतीक्षा में था। लखनऊ उसके लिए नया नहीं था, चिरपरिचित था और उसका अपना एक दायरा विश्वविद्यालय में भी बना हुआ था। एक दिन वह एक संगीत गोष्ठी में अपने एक मित्र के आग्रह पर गया था। उपस्थिति सीमित और चुनींदा थी। यह आयोजन अर्धरात्रि के बाद तक चलता रहा था। कार्यक्रम की समाप्ति पर जब सब लोग जाने लगे तो बाहर बरामदे में प्रायः अधिकांश व्यक्ति एकत्रित हो, अतिथियों को धन्यवाद देकर, कलाकारों की सराहना करके उन्हें विदा कर रहे थे। एक छोटी सी भीड़ थी, कमल अपने संकोची स्वभावानुसार पीछे खड़ा था। सहसा उसे अपने कान के पास फुसफुसाहट में सुनाई दिया, 'आई लव यू'। वह चौंक गया। बगल में एक लड़की खड़ी थी। इकहरा बदन, गौर वर्ण, सुघड़ नक्श, उसे सामान्य सुन्दर माना जा सकता था, कद छोटा ही था लेकिन उसे नाटा नहीं कह सकते। वह हल्के नीले रंग की जार्जट की साड़ी पहने थी, चेहरे पर मेकअप नहीं था। वह उससे लगभग सटी हुई खड़ी थी। कमल के शरीर में सिहरन दौड़ गई और उसने गौर से उस युवती के चेहरे में देखा। युवती के चेहरे पर हल्की कामुकता मिश्रित लालसा की गुलाबी आभा थी, जो इस आकस्मिक परिचय और उसके फूहड़पन के कारण भी हो सकती थी। वसंत ऋतु की ढलती रात की हल्की मादक शीतलता और युवक शरीर से युवती का स्पर्श। कमल को रोमांच सा हुआ। लेकिन वह केवल मुस्कुराया। उसे उस लड़की में हल्केपन का

श्राभास हुआ। वह सोच नहीं सकता था कि कोई लड़की किसी अपरिचित युवक से ये शब्द अचानक कैसे कह सकती है। फिर भी उसे ये शब्द बुरे नहीं लगे। कितने आकस्मिक, नाटकीय से, और रोमांचकारी थे ये शब्द। कमल का शरीर झनझना रहा था, गरम हो रहा था। उसने दबी आवाज़ में कहा : 'जी ? क्या कहा आपने ?'

'ओह, आप कितने अच्छे हैं।'

'हूँ'

'कल कॉफ़ी हाउस में सात बजे मिलेंगे ?' और उसने कमल का हाथ दबा दिया। भीड़ छँट चली थी, वह आगे बढ़ गया लेकिन वह उसके साथ ही लगी रही। वे बाहर बगीचे में आ गए थे। इस बार कुछ साहस कर कमल ने पूछा :

'क्या आप अकेली हैं ?'

'नहीं, मैं अपनी मौसी के साथ आई हूँ। आप कहाँ जायेंगे?'

'पयागपुर हाउस'

'कैसे'

'पैदल'

'हम आपको छोड़ दें'

'जी नहीं, धन्यवाद'

'तो कल अवश्य। कॉफ़ी हाउस, सात बजे'

'सुबह या शाम ?' और दोनों हँस दिये।

'अच्छा नमस्ते' और कमल आगे बढ़ गया। उसके मित्र का कहीं पता नहीं था। उसने एक बार भी मुड़कर उसे देखने का प्रयत्न नहीं किया। उसका शरीर अब भी गर्म था, उसकी साँस अपेक्षाकृत तेज़ थी और वह मन में एक अजीब सी गुदगुदी अनुभव कर रहा था। वह धीर गति से चल दिया। उसने सिगरेट सुलगा ली।

कमल एक मेधावी युवक था और संस्कारी भी था। शरीर और मन दोनों से पुष्ट था और ये उसे विरासत में और घर के धर्माचरण-युक्त सुसंस्कृत तथा अनुशासन-युक्त वातावरण से मिला था। सिगरेट

पीने की आदत उसे दसवीं कक्षा से ही पड़ गई थी। अब तक इस आकस्मिक मुलाकात की खुमारी उस पर से उतर चुकी थी और उसने सारी घटना पर सोचना शुरू कर दिया था। यह अप्रत्याशित घटना उसे चलचित्र की कहानी सी लगी। प्रथम दृष्टि में प्रेम ? यह तो बड़ी मज़ेदार बात है। एक मज़ाक सा हो गया। मगर कमल को उस लड़की का उससे कहा गया प्रथम वाक्य 'आई लव यू' कुछ जँचा नहीं। जब जब ये शब्द उसके ध्यान में आते, उसे कुछ ग्लानि होती। कितना हल्कापन है। एक युवती, अपने स्त्री-सुलभ शील और संकोच को छोड़कर क्या इतनी लज्जाहीन भी हो सकती है ? वह भी बिलकुल प्रथम परिचय में ? यह भाव वह आत्मसात् नहीं कर सका। लेकिन इस मुलाकात ने उसे कितना रोमांचित कर दिया था। उस लड़की की मुखाकृति उसके मन पर छाई हुई थी। वह इस सुखद घटना को किसी जटिल सैद्धांतिक आधार पर भूल जाने को तैयार नहीं था। भावना ने विवेक पर विजय प्राप्त कर ली थी और यह आयु प्रमाण से, और उसके चारों ओर के वातावरण के हिसाब से स्वाभाविक भी था। फिर वह अपने विषय में सोचने लगा। उसमें ऐसा कौनसा आकर्षण बिन्दु है जिससे प्रभावित होकर यह लड़की उससे प्रथम दृष्टि में ही प्रेम करने लगी ? विश्वविद्यालय में यह उसका दूसरा वर्ष शुरू होने वाला था। कालेज के लड़के-लड़कियों के जीवन को वह समझने लगा था। उपन्यास भी उसने कई पढ़े थे और चलचित्र भी देखता ही था। वह भी रोमांस की कल्पना कर ही लेता था। अपने आदर्शों और मान्यताओं के आधार पर प्रेम की उसकी एक परिभाषा थी, और जो पूर्णतया रूढ़िवादी, आदर्शवादी भी नहीं थी। प्रेम के साथ वासना का भाव भी उभरता था किन्तु वह अपने पौरुष के चरम सुख की कल्पना रखता था। लेकिन इस अप्रत्याशित घटना ने तो उसकी मान्यताओं को हिला दिया था। वह हतबुद्धि हो गया था और उसे जो आनन्दानुभूति हुई थी, वह घबराहट मिश्रित थी। अब जब कि उसे सोचने का मौका मिला था, वह कुछ आश्वस्त हुआ था, उसकी शिराओं का तनाव कुछ ढीला पड़ गया था। किन्तु उस

लड़की के परिचय शब्द याद आते ही उसे कचोट लेते थे। कमल में ऐसा क्या आकर्षण था जो कई वर्षों में लखनऊ की किसी भी लड़की को अपनी ओर मुखातिब नहीं कर सका था। रंग उसका खुला हुआ गेहुँआ था, वह मझोले कद का गठे हुए, स्वस्थ शरीर का युवक था। उसकी आकृति कुछ कठोर थी किन्तु प्रभावकारी अवश्य थी, ऐसा उसके प्रायः सभी मिलने वाले कहते थे। और उसकी आँखें? उनमें कुछ अवश्य था, ऐसा बहुत कम व्यक्तियों ने कहा था, किन्तु जिन दो के इसी प्रकार कहने पर कमल को इस विषय पर विचार करना पड़ा, उनमें एक थी यही लड़की और दूसरी उसकी पत्नी थी, जो आज यह बात पन्द्रह वर्ष से बराबर दुहरा रही है। कमल सदैव सुरुचिपूर्ण कपड़े पहनता था और साफ सुथरा रहता था। वह कम बोलता था किन्तु सूम नहीं होकर विनोदी था इसलिए लोकप्रिय था। उसमें एक दोष था कि उसे क्रोध बहुत तीव्र आता था, जब भी आए, और उस समय वह अपनी विनाशकारी प्रवृत्ति पर अधिकार लगभग खो बैठता था, किन्तु ऐसे मौके कम ही आते थे।

कमल अपने क्वार्टर में आ गया था, उसने दरवाजा खटखटाया और नौकर ने किवाड़ खोल दिया। वह अपने सोने के कमरे में चला गया और कुर्ता उतार कर पलंग पर लेट गया। हवा बन्द थी और कमरे में उमस। उसने खिड़की खोल दी, उसमें से नीम के फूलों की भीनी भीनी महक आने लगी। वह खिड़की की ओर मुँह करके लेट गया। ढलती रात की शीतलता खिड़की में से हौले हौले कमरे में व्याप्त होने का प्रयत्न कर रही थी। नीम के फूलों की भीनी भीनी खुशबू वातावरण में मादकता भर रही थी और बार बार उसकी श्रवण चेतना में उस लड़की के मधुर स्वर टकरा रहे थे। उसकी बंद आँखों के सामने उस लड़की का चेहरा तैर रहा था। वह जितना ध्यान लगाता था, चेहरा उतना ही अस्पष्ट हो जाता था। उसे वह लावण्यमय तो नहीं कह सकता, सुन्दर अवश्य था। उसकी उत्तेजना फिर जागृत हो गई। कमल ने सोचा कितना प्रेम उमड़ रहा है। दूसरे ही क्षण

वह हँस दिया। प्रेम ! क्या आदर्श और पवित्र कल्पना है लोगों की। सीधे से वासना ही क्यों नहीं कह देते ? एक झूठा नाटक खेलकर अंत में पटाक्षेप तो इसी सत्य से होता है। उस लड़की का चेहरा उसके स्मृतिपट पर फिर कुछ स्पष्ट-सा हुआ। उसकी निकटता की कल्पना कमल करने लगा। काश वह यहाँ कमल के बहुत निकट, इस पलंग पर ही होती। और उसका शरीर फिर रोमांचित हो गया। उसने बेचैनी से करवट बदली और उठकर बैठ गया। उसने सुराही से गिलास में पानी भरा और एक ही साँस में पी गया। उसने फिर गिलास भरा और इस बार घूँट घूँट कर पीने लगा जैसे कुछ समय पूर्व की मधुर स्मृति को घूँट ले लेकर आत्मसात् कर रहा हो। उसने एक सिगरेट जलाई और लेट गया। वह छत की ओर निर्निमेश देख रहा था।

उस लड़की की आयु सोलह सत्रह वर्ष की होगी और वह उन्नीस वर्ष में जा रहा था। उसे कुछ विस्मय हुआ कि क्या केवल इस आयु में ही यह लड़की इतनी निःसंकोच हो सकती है ? क्या यह भी सम्भव है कि वह 'लव' की परिभाषा को समझ चुकी है। उसके मन में ये ख्याल आते ही ग्लानि, ईर्ष्या और क्रोध के भाव एक साथ ही आ गए। उसने निश्चय किया, वह कल उससे मिलने नहीं जायेगा। कैसी निर्लज्ज लड़की है। ज़रूर ही उसका पहले से किसी से सम्बन्ध बन चुका है। इस विचार से उसका शरीर शिथिल पड़ने लगा। उसने अंगड़ाई ली, सिगरेट बुझा दी और शरीर को ढीला कर दिया। करवट बदली और सोने का प्रयत्न करने लगा। हवा चलने लगी थी। उसमें ठंडक थी। लेकिन उस लड़की का मुखड़ा बरबस ही बार बार सामने आ जाता था। उसने टेबुल लैंप जला लिया। उठकर एक किताब लाया और लेटकर उसे पढ़ने लगा। यह रामायण थी। वह इसे रोज़ पढ़ता था और खासकर उस समय, जब उसका मन अशांत और उद्विग्न होता था। मन की शांति के लिए रामायण पढ़ने के ख्याल में उसे रूढ़िवादिता दिखाई देती थी और अंधविश्वास भी। वह इस ख्याल से हँस दिया करता था। किन्तु वह जब भी उसे पढ़ता था, उसे वास्तव

में शांति मिलती थी। क्यों ? ऐसा रामायण में क्या था ? वह समझ नहीं पाता था लेकिन उसमें बहुत कुछ स्पष्ट था और वास्तविक था, उसे उसका मन कभी भी अस्वीकार नहीं कर सका। प्रसंग था पार्वती विवाह। उसका मन लग गया और धीरे धीरे उसकी आँखें झपने लगीं। उसने लेंप बन्द किया और सो गया।

गाड़ी ने एक झटका खाया और कमल की चेतना लौट आई। वह कल्पना में सोते सोते वास्तव में सो गया था। वह गाड़ी की फ़ोल्डिंग सीट से उठा और डिब्बे में चला गया। इस बार उसने उस स्त्री की ओर सीधे देखा। वह अकेली अपनी सीट पर बैठी थी और उसका साथी शायद नीचे पाँवदान में सो गया था। हालाँकि उसने दरवाज़ा बड़ी सावधानी से खोला था फिर भी उस स्त्री ने पीछे झाँका और दोनों की आँखें चार हो गईं। कमल ने इस बार उसे अच्छी तरह देखा। वही थी। वह मुस्कुरा रही थी, चेहरे पर हल्की-सी निर्लज्जता थी। कमल को सहसा उसके चेहरे का वही भाव याद आ गया जो प्रथम मिलन के समय 'आई लव यू' कहते समय उसके चेहरे पर था। उसकी मानसिक स्थिरता फिर आलोड़ित हो गई। इन बीस वर्षों में कमल कुछ अधिक गम्भीर हो गया था और कुछ लम्बा और साधारण सा मोटा। उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। केवल वेशभूषा बदल गई थी। वह अपनी सीट पर आकर फैल गया। उसके दिल की चाल स्वाभाविक से कुछ बढ़ गई थी। उसने आँखें बन्द कर लीं और यादों की परछाई उसे फिर से ढकने लगी।

दूसरे दिन शाम पाँच बजे से ही उसके मानस में संघर्ष छिड़ गया। वह कॉफ़ी हाउस जाय या न जाय। एक ओर उस लड़की का आकर्षण था और दूसरी ओर उसके आचरण के प्रति शंका के कारण ग्लानि। आकर्षण और ग्लानि के भावों के संघर्ष में विजय आकर्षण की हुई। युवावस्था में किसी युवक के युवती के प्रति रुझान में शंका का स्थान कहाँ रहता है। वह झुकाव ही ऐसा होता है जो हज़ार ऐबों की तरफ से आँखों को मूंद देता है। केवल एक तस्वीर ही सामने

होती है और कोई बरबस ही इस ओर खिंचा चला जाता है। उसने साफ रेशमी कमीज़ पहनी, कार्ड्रॉय का पतलून पहना। गले में लाल छींट का रेशमी स्कार्फ बांधा और पैदल ही हजरतगंज की ओर चल पड़ा। मेफेयर के सामने उसे कुछ मित्र मिल गए। वह उनसे गप लगाने लगा। उसने फिर घड़ी देखी पौने सात बजे थे, एक काम का बहाना करके मित्रों से विदा ली। उसने सड़क पार की और दुकानों के बरामदे में से होता हुआ कॉफ़ी हाउस की ओर बढ़ गया। कॉफ़ी हाउस के बाहर एक बार उसने चारों ओर देखा। वह लड़की उसे कहीं नहीं दिखी। वह कुछ बैचेन सा कुछ समय और खड़ा इन्तज़ार करता रहा। उसने सिगरेट जलाई, माचिस की तीली को पैर से रौंदा और फिर सर झुकाए बरामदे के अन्दर चला गया।

'आप आ गए। चलिए ज़्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा।'

'मैं ठीक ही समय पर पहुँचा हूँ, आप कब से खड़ी हैं?'

मैं भी अभी कुछ ही समय हुआ, आई हूँ।'

'तब आइए' वे दोनों कॉफ़ी हाउस में दाखिल हो गए। नीचे का हॉल काफ़ी भरा हुआ था। उसने ऊपर देखा, वहाँ नफरी कम थे। वह उस लड़की के साथ ऊपर चल दिया। पास ही एक मेज़ से एक लड़के ने उसे आवाज़ दी : "हैलो कमल'

'हैलो' उसने बांया हाथ ऊपर उठाया, मुस्कुराया और सीढी चढ़ गया। वातावरण में कॉफ़ी, दोसा और सिगरेट की मिश्रित गंध, चिरपरिचित गंध, कई स्मृतियों को उभार देने वाली गंध भरी थी। कोने की एक खाली मेज़ पर दोनों बैठ गए। कमल ने सिगरेट बुझा दी। वेटर आर्डर लेने खड़ा था।

'क्या लेंगी ?'

'दोसा, सेंडविच और कॉफ़ी विद क्रीम।' कमल को यह बेतकल्लुफी खटकी। वह भावुक और बड़ा ही संवेदनशील है।

"बैरा, एक दोसा, एक प्लेट सेंडविच, दो काफी" कमल ने आर्डर दिया। वेटर चला गया। अब कमल ने आँखें उस लड़की के चेहरे पर

गड़ा दीं। लड़की बड़े इत्मीनान से मुस्कुरा रही थी। वही कामुकता लिये हल्की सी निर्लज्जता। कमल बराबर उसी प्रकार उसके चेहरे में घूरता रहा। सहसा उस लड़की के चेहरे पर लाली दौड़ गई और वह सकुचा कर नीचे की ओर देखने लगी। कमल उसकी इस मुद्रा से पुलकित हो गया : 'फरमाइए'

'कल संगीत कार्यक्रम में मैं आप ही के सामने बैठी थी, आप मुझे बड़े अच्छे लगे। मैं आप ही को देखती रही और आपसे परिचय प्राप्त करने की तीव्र लालसा हुई। ओह आपकी आँखें'

'परिचय प्राप्त करने का आपका ढंग तो विलक्षण था।'

वह खामोश रही और नीचे देखती रही। कमल को उसके बात करने के इस निःसंकोच तरीके से कुछ विस्मय हो रहा था, उसे कुछ अच्छा भी लग रहा था। उसने कुछ रुक कर उत्तर दिया :

'आप मुझे बहुत प्रिय लगने लगे। मैं क्या करती ? क्या करती भला बताइये ?'

'लेकिन आपने मेरा क्या परिचय प्राप्त किया ? न तो आपने मेरा नाम धाम मालूम किया और न अब तक अपना ही बतलाया है। मैं हूँ कमलाकान्त मिश्र। यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी हूँ। इस वर्ष प्रथम वर्ष बी.ए. की परीक्षा दी है। गोरखपुर के पास एक ताल्लुकेदारी का रहने वाला हूँ। यहाँ पयागपुर हाउस में एक क्वार्टर किराये पर लेकर रहता हूँ। अब आप अपनी सुनाइये।'

'मैं यहाँ अपनी मौसी के पास कुछ समय से रह रही हूँ। वे गर्ल्स कालेज में प्रिंसिपल हैं। मेरा नाम नीलमणि है।'

'और आपके माता पिता ?'

'मेरे पिता नहीं हैं, माता अलमोड़े में एक बच्चों का अंग्रेजी स्कूल चलाती हैं। मैं कुछ दिन बाद उनके पास जाऊँगी।'

'फिर लौटेंगी ?'

'कुछ तय नहीं है। गर्मी-गर्मी तो वहीं रहूँगी फिर माताजी निश्चित करेंगी कि मुझे कहाँ रहना है।'

'आप किस दर्जे में पढ़ती हैं।'

'इस वर्ष नवीं की परीक्षा दी है और पास हो गई हूँ।'

कॉफ़ी आ गई थी। टेबुल पर सब सामान जमाकर वेटर चला गया था। नीलमणि ने कॉफ़ी बनाई और क्रीम के जग के साथ प्याला कमल की ओर बढ़ा दिया। उसने जग लेकर एक ओर रख दिया और करीब आधा चम्मच चीनी कप में डाल कर चलाने लगा। नीलमणि विस्मय से उसकी ओर देखने लगी। अपने लिए क्रीम डालकर कॉफ़ी बना कर पीने लगी। कमल 'नीट' ही पीने लगा, उसे कॉफ़ी ऐसी ही अच्छी लगती थी। उसने एक सेंडविच उठा लिया और थोड़ा थोड़ा कुतरने लगा।

'खाइए' उसने दोसा की प्लेट नीलमणि की ओर खिसका दी।

'आपको कॉफ़ी ऐसी क्या अच्छी लगती है?' विस्मय भरी मुद्रा में नीलमणि ने कमल से पूछा।

'अपनी-अपनी रुचि है, कड़वाहट में भी तो अपना एक मजा होता है।' मुस्कुराते हुए कमल ने उत्तर दिया।

'आप कुछ खाइएगा नहीं?' नीलमणि ने आग्रह-सा किया।

'मुझे समय कुसमय खाने की आदत नहीं है।'

नीलमणि दोसा खा रही थी और कमल निरन्तर उसके मुख की ओर देखे जा रहा था। उसने सेंडविच खत्म कर दी थी और सिगरेट जला ली। जब वह सिगरेट पीने लगता था तो कुछ फिलॉसफर टाइप हो जाता था। जब भी नीलमणि उसकी ओर देखती थी, तुरन्त सर झुका लेती थी, उसके चेहरे पर रंग खेलने लगता था।

'तो आप मुझसे प्रेम क्यों करने लगी हैं और वह भी यकायक?'

'वैसे ही। मुझे आप बहुत अच्छे लगे।'

'प्रेम तो ऐसी चीज़ नहीं है जो वैसे ही हो जाय।' लड़की कुछ शर्मा गई और नीचे देखती रही।

'तो आप मुझे पसन्द नहीं करते?' उसने बड़ी निराशा मिश्रित मुद्रा से पूछा।

'पसन्द करना एक चीज है और प्रेम दूसरी। आपकी मुझमें

रुचि हो सकती है। आपके प्रति अब मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव करने लगा हूँ, किन्तु रुचि भी तो सहसा ही पैदा नहीं हो जाती। प्रेम तो ज़रा दूर की चीज़ है। केवल शरीर के प्रति आकर्षण को मैं प्रेम नहीं मानता। यह तो केवल वासना है। मैं समझता हूँ, आपके मुझसे प्रेम का अर्थ यह नहीं होगा। आप आखिर मेरी किस बात से प्रभावित होकर मुझमें रुचि रखने लगी हैं या आप ही के अनुसार प्रेम करने लगी हैं ?'

'आपकी आँखें'

'और यदि वे जाती रहीं तो आपका आकर्षण केन्द्र समाप्त हो जाएगा और आपका मेरे प्रति प्रेम खत्म हो जायगा।' नीलमणि निरुत्तर हो गई और शर्मा गई। उसके चेहरे पर निराशा के बादल छाते दिखाई दिए। उसने बड़े गिरे हुए स्वर में कहा : 'तो आप मुझे अच्छा नहीं समझते ?'

कमल ने उसके निराशा भरे भोले चेहरे की ओर देखा, उसकी आँखों की कोरें आर्द्र हो गई थीं। कमल को उस पर दया आ गई। वह कितनी आशाएँ अपने हृदय में संजोकर कमल से मिली थी। उसकी कमल में जो रुचि बनी थी, उसे कायम रखने के लिए वह अनायास ही निर्लज्ज बनने को तैयार हो गई थी। इस भोली लड़की की बेबसी ने कमल को द्रवित कर दिया। वह स्वयं को उसके और भी निकट पाने लगा। आखिर वह बोला :

'क्षमा कीजिएगा, मैंने आपकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई। मुझे आपसे सहानुभूति है, मुझे आपमें रुचि है और मैं आपके अधिक निकट भी आना चाहूँगा और मुझे कितनी प्रसन्नता होगी जब मैं आपका प्रेम पा सकूँगा।' नीलमणि ने सीधे कमल के मुख की ओर देखा। वह धीरे धीरे मुस्कुरा रही थी। और उसने अपना हाथ कमल के हाथ पर रख दिया था। कमल भी मुस्कुराने लगा। वह उठ खड़ी हुई और दोनों नीचे चले आए। कमल ने काउण्टर पर जाकर पैसा चुकाया और दोनों बाहर आ गए।

'चलिए आपको घर छोड़ आऊँ।'

'फिर कब मिलेंगे कमल जी ?'

'अभी तो साथ ही चल रहा हूँ, यह तो विदा होते समय निश्चय कर लेंगे : मैं तो कुछ ऐसा अनुभव कर रहा हूँ कि आपकी निकटता मुझे नया उल्लास और चेतना दे रही है। मैं वास्तविक जगत से ऊपर एक स्वप्निल संसार की सैर कर रहा हूँ। यह सब कुछ बड़ा अनोखा, उल्लासमय और विचित्र सा लग रहा है।' उसने एक रिक्शा ले लिया। नीलमणि ने स्थान बतला दिया और दोनों चल दिए। हजरतगंज की चमक दमक से निकलने पर सड़कें कुछ सूनी सी लग रही थीं और उन पर जलने वाले लेंप बड़े बुझे बुझे से। नीलमणि कमल से बिलकुल सट गई थी और उसने अपना सर कमल के कंधे पर रख दिया था। कमल स्वयं में एक अजीब-सी पुलक और रोमांच अनुभव कर रहा था। उसने अपना हाथ पीछे से नीलमणि के कंधे के नीचे बाँह पर जमा कर उसे अपने निकट खींच लिया और दबा लिया।

खड़क-खड़क-खड़क खट, खड़क खड़क खट। सहसा वह फिर स्वप्न लोक से वास्तविक जगत में लौट आया। उसके पीछे की सीट वाला बूढ़ा खाँस रहा था। गाड़ी अपनी गति से चली जा रही थी। पहियों की पटरी पर रगड़ और जोड़ों की ठोकर समरस ताल और लय में चिरपरिचित आवाज़ कर रहे थे। कमल ने शाल पैरों पर फैला लिया और करवट बदल ली। इस बार उसने सोने के प्रयत्न में अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसे फिर अर्द्ध चेतना में स्वप्न आने लगे। चित्रपट की तरह बीस वर्ष पुरानी घटनाएँ एक एक कर उसके स्मृति पट पर आने लगीं। कमल नीलमणि से प्रायः रोज ही मिलता था, कभी कॉफ़ी हाउस में, कभी ब्रॉडवे में, कभी अपने क्वार्टर में और कभी उसकी मासी के बंगले पर। वह अपनी पढ़ाई लखनऊ में ही कर रही थी। दोनों में घनिष्ठता बढ़ रही थी। साथ साथ घूमते थे, सिनेमा देखते थे, सौदा खरीदते थे और कुछ दिनों में वे कालेज में चर्चा का विषय भी बन गए थे। कुछ घटनाएँ अपना विशेष महत्व रखती हैं जो कभी विस्मृत नहीं होतीं। समय और परिस्थिति की अनुकूलता से वे साकार

हो उठती हैं।

एक दिन दोनों गोमती के किनारे टहल रहे थे। संध्या ढल रही थी। वातावरण गरम था। सड़क पर सवारियाँ दौड़ रही थीं। सैलानी भी पर्याप्त संख्या में थे। चबैना, चना और अन्य खोंचे वाले वातावरण की अशांति बढ़ा ही रहे थे। कमल ऐसे वातावरण में अपने चित्त को स्थिर नहीं रख पाता था, उसे बड़ी बेचैनी सी होती थी और खास कर उस समय जब नीलमणि उसके साथ हो। उसने दो कप आइसक्रीम खरीदी और किनारे एक खाली बैंच पर वे जा बैठे। उस पार बस्ती के ऊपर आकाश धूमिल था। एक मटमैली नीलिमा आकाश से नीचे की ओर उतर रही थी। क्षितिज से ऊपर के धूल मिश्रित मटमैले प्रकाश में, बसेरे पर जाने वाले पक्षियों की छाया मात्र कभी दिख जाती थी। आकाश में ऊपर एक दो तारे चमकने लगे थे। प्राकृतिक प्रकाश का स्थान कृत्रिम प्रकाश ले रहा था। और बिजली की रोशनियों की पीली सफेद आभा काले पड़ते आकाश को आलोकित करने में असमर्थ सी मालूम पड़ती थी। वातावरण में कुछ उदासी थी, घुटन थी। दोनों आइसक्रीम खा रहे थे। कमल खा चुका था और उसने अपना कागज का कप फेंक दिया था। नीलमणि अभी खा रही थी। कमल ने रूमाल से अपना मुँह पौंछा और सिगरेट सुलगाली। वह अब भी वैसे ही अपने सामने की ओर शून्य में निरुद्देश्य-सा देख रहा था।

'तुम इतने मौन और गम्भीर क्यों रहते हो कमल?' वह मुस्कुराया और मुड़ा, नीलमणि उसकी ओर निहार रही थी।

'इस प्रश्न में क्या नवीनता है नीला, केवल यही कि यह तुमने इतनी मुद्दत बाद किया है, क्या तुम्हें मेरा यह स्वभाव अच्छा नहीं लगा है?'

'ऐसी बात नहीं, यह तो मेरे मन में तुम्हारे प्रति एक आकर्षण है कमल, लेकिन मुझे ऐसी उदासी भरा वातावरण अच्छा नहीं लगता।'

'तो चलो हजरतगंज चलें। तुम क्या समझती हो कि तुम्हारी उदासी मुझे अच्छी लगती है? लेकिन न जाने क्यों कोलाहलपूर्ण

वातावरण में मैं तुम्हें अपने निकट अनुभव नहीं कर पाता हूँ ।'

भीड़ छँट रही थी । रात झुक चली थी । कमल ने नीला को अपने पास समेट लिया ।

'खुश हो नीला ?'

'मैं तुम्हारे साथ हर परिस्थिति में खुश रहना सीख चली हूँ, तुममें जाने कैसी कशिश है ।'

'तो प्रेम करना सीख रही हो या सिखा रही हो ?' दोनों हँसने लगे । नीला ने उसके कंधे पर सिर रख दिया । सन्नाटा और बढ़ चला था । कभी कोई मोटर-रिक्शा या इक्का सड़क पर से गुजर जाता था । पेड़ों के साये सड़क की मैली बत्ती की रोशनी में दूर तक फैल गये थे और जहाँ दोनों बैठे थे, धूमिल सा अंधकार था । हवा से पेड़ों की डालियाँ हिलने से, प्रकाश की कुछ किरणें पत्तियों से छन कर उन दोनों पर पड़ जाती थीं । रात ढल रही थी । दूर कहीं सियार बोल रहे थे और उस ओर बस्ती के कुत्ते भौंकने लगे थे । कमल को ऐसा आभास हुआ, जैसे नीला सिहर उठी हो । वह सहसा उससे अलग हो बैठ गई, कमल अब सामने ही देख रहा था । नीला का एक हाथ उसके घुटने पर रखा था, उसी पर उसने अपना हाथ रख दिया ।

'कमल देखो वह क्या है ।

'शायद जीवन का अंत । तुम्हें डर लग रहा है ?'

'हाँ । कैसा दमघोट वातावरण है ।'

'मेरे पास आ जाओ ।'

दूर नदी के किनारे आग जल रही थी, शायद कोई मुर्दा जल रहा था । नीला एकाएक कमल से लिपट गई, निढाल हो कर । कमल उसके स्पर्श से उत्तेजित हो गया । उसने ज़ोर से उसे अपने शरीर से कस लिया और अपने होठ उसके होठों पर रख दिए । उसकी श्वास की गति बढ़ गई थी । वह बहुत अधिक उत्तेजित हो उठा था । उसने नीला की कमर में हाथ डालकर उसे ताकत से अपने शरीर से दबा लिया । तभी एक गुजरने वाली मोटर की रोशनी उन पर पड़ी और कमल ने अपनी

पकड़ ढीली कर दी। पास आती गाड़ी के प्रकाश में कमल ने देखा, नीला का मुख उत्तेजना से लाल हो गया है। वह इस समय अधिक सुन्दर लग रही थी। उसके चेहरे पर कामुकता और वासना की रेखाएँ अधिक उभर आई थीं। कमल ने नीला को एकदम छोड़ दिया और तभी वह मोटर सर्र से गुजर गई।

'चलो नीला'

'नहीं कमल अभी नहीं, तुम मेरे पास बैठे रहो।'

कमल ने स्नेहपूर्वक उसके कंधे पर हाथ रखा और उसे कुछ खींचता हुआ सा चलने लगा। कुछ आगे चलकर उसने एक खाली रिक्शे को रोका और दोनों उसमें बैठकर नीला के घर चल दिये।

'कमल अपने क्वार्टर पर ही चलो न'

'नहीं नीला, तुम्हारे घर। अभी भोजन का समय नहीं हुआ। तुम ठीक समय पर घर पहुँच जाओगी'

'सिनेमा खत्म होने का समय तो अभी नहीं हुआ है। मैं मौसी से कह दूँगी हम पिक्चर गए थे।'

'सिनेमा को यहीं खत्म समझो नीला, मैं इण्टरवल में ही छोड़ रहा हूँ।'

नीला कुछ हाँप रही थी। वह फिर कमल से सट गई। उसने अपना एक हाथ कमल की पीठ पर से निकाल कर, उसके गाल पर उंगलियाँ जमा दीं और ऐसा दबाव दिया जैसे वह कमल के मुख को अपनी ओर खींचना चाहती हो। कमल का शरीर फिर से झन्ना उठा। उसने नीला की आँखों में देखा, उनमें वासना पूर्ववत तैर रही थी। उसने एक सिगरेट सुलगा ली। नीला की अंगुलियाँ उसके गाल को सहला रही थीं। कमल स्वयं पर नियन्त्रण रखने के लिए अपना ध्यान दूसरी ओर हटाने की कोशिश करता रहा। नीला ने अपना गाल कमल के गाल से सटा दिया। कमल थर्रा उठा, बड़े जोर से उसके मन में आया कि वह नीला को जकड़ ले, चूम ले। उसने सिगरेट का कश जोर से लिया और उसे खाँसी आ गई, सर में बहुत हल्का सा चक्कर

भी श्रौर उसने सर झटक दिया। उसे श्रपने श्राप पर नियन्त्रण रखना बहुत भारी पड़ रहा था। नीला श्रब भी उससे सटी, उत्तेजना से हाँप सी रही थी श्रौर निराशा में काँप रही थी। कमल उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा जैसे देर तक ज़िद में रोते बच्चे को तसल्ली दे रहा हो। वे नीला के घर पहुँच गए थे। कमल का शरीर इतना श्रकड़ा हुश्रा था कि उसे रिक्शा से उतरने में संकोच हुश्रा।

'श्रच्छा नीला विदा' वह उसी रिक्शा में लौट जाना चाहता था।

'श्राज हमारे यहाँ ही खाकर जाइए'

'नहीं मुझे जाने दो'

'मेरा इतना श्राग्रह भी नहीं मानोगे ?'

'जैसी तुम्हारी मर्जी, पेट को खुराक की ज़रूरत भी थी। वहाँ न खाया, यहाँ खाया।'

उसने रिक्शा को विदा कर दिया। श्रब तक वह श्रपनी स्वाभाविक स्थिति में लौट श्राया था। वह नीला का हाथ थामे श्रन्दर चला गया। वह बरामदे में एक कुर्सी पर श्राराम से बैठ गया। नीला श्रन्दर चली गई। कमल ने सिगरेट सुलगाई, तभी जाली का स्प्रिंगदार किवाड़ खुला श्रौर उसे एक प्रौढ़ा की झलक दिखलाई दी जो निःसन्देह नीला की मौसी ही हो सकती थी। न जाने मर्यादा की किस प्रेरणा से कमल ने कुर्सी के पाए श्रौर श्रंगुली के पोरुए की सहायता से सिगरेट बुझाई श्रौर पतलून की जेब में ठूँस ली। उसने खड़े होते हुए दोनों हाथ जोड़कर श्रभिवादन किया।

'बैठो बेटा, नीला बाथरूम गई है' यह कहते हुए मौसी एक कुर्सी पर बैठ गई, 'उसने बतलाया तुम यहीं भोजन करोगे। बड़ा श्रच्छा है, कभी कभी श्रा जाया करो। हमारा भी मन लग जाया करेगा।'

'जी श्रवश्य' नीचे झाँकते हुए उसने उत्तर दिया। वह कुछ नर्वस महसूस कर रहा था।

'बेटा तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं ?'

'वे सिरपुर रियासत के मैनेजर हैं'

'तुम्हारी माता जी हैं ?'

'जी। मैं उनका इकलौता बेटा हूँ' कमल ने आगे आने वाले प्रश्नों की कल्पना करके ये जोड़ दिया।

'मैंने तुम्हारे बारे में प्रायः जिससे भी सुना, तुम्हारी तारीफ ही सुनी है. बेटा कमल। मुझे प्रसन्नता है, नीला को अच्छा मित्र मिला है।'

फिर इधर उधर झाँककर, स्वर को कुछ दबा कर उनने कहा, 'मेरी इच्छा थी तुम अच्छे साथी भी बनो, मैंने नीला की माँ को लिखा है' फिर कुछ रुक कर बोलीं, 'क्या विचार है बेटा तुम्हारा ?'

'विचार तो बुरा नहीं है मौसी जी, मगर इस प्रश्न का उत्तर देना, समय से कुछ पूर्व तो नहीं होगा ?'

'नीला तुम्हें बहुत चाहती है। तुम भी तो उससे प्रेम करते हो ?' कमल इस अप्रत्याशित और सीधे प्रश्न से कुछ सकपका गया। झेंपता हुआ-सा नीचे देखने लगा। उसे मौन देख मौसी फिर कहने लगीं,

'बेटा तुम्हें संकोच छोड़ देना चाहिए। मुझसे संकोच कैसा ? क्या मैं तुम्हारे प्रति स्नेह नहीं रखती ?'

'मैं आपसे इस विषय में क्या कह सकता हूँ ?'

'तुम अपने विचार निःसंकोच हो मुझे बतलाओ।'

कमल ने सोचा कि आसानी से पीछा छुटने वाला नहीं है अतः साहस कर वह बोला, 'फिर भी मौसी जी,....खैर, मुझे नीला में रुचि अवश्य है। मेरी हार्दिक इच्छा है, इसे घनिष्ठता में बदलने की, और मुझे आशा है जब नीला और मैं एक दूसरे को समझने लगेंगे और इस प्रकार और पास आने से जो स्थिति बनेगी, वह वास्तविक और शायद स्थायी परस्पर प्रेम होगा।'

'तुम बात करने में बड़े पटु मालूम होते हो, कमल' मुस्कुराते हुए मौसी बोलीं, 'क्या नीला से विवाह के विषय में भी कुछ सोचा है'

'अभी से ? यह भाव मेरे मन में बनता तो जा रहा है लेकिन अभी तक पूरा निश्चित नहीं और मैं निर्णय लेने में अपने को स्वंतन्त्र नहीं मानता। फिर अभी विवाह तो बहुत जल्दी होगा।'

'तुम ठीक कहते हो बेटा। मेरी दृष्टि में तुम एक योग्य लड़के हो और तुम्हारे संरक्षण में नीला का जीवन संयत और सुखी रह सकेगा' कुछ रुक कर, धीर, गम्भीर और धीमी आवाज में नीचे देखते हुए मौसी ने अपनी बात जारी रखी, 'फिर भी बेटा सामाजिक मान्यताओं को देखते हुए इस मेल जोल की एक सीमा तो होनी ही चाहिए।'

'जैसी आपकी आज्ञा हो। मेरे हृदय में नीला को पथभ्रष्ट करने की तो कोई भावना नहीं है। मैं उससे मेल जोल बन्द भी कर सकता हूँ। किन्तु नीला से मुझे कुछ लगाव हो गया है। इस धागे को तोड़ने में कुछ कष्ट तो होगा ही।'

'नहीं नहीं कमल बेटा, तुम अन्यथा मत सोचो। तुम जैसे चरित्रवान युवक से मैं नीला के अनिष्ट की अपेक्षा नहीं करती। मैं तो केवल इतना चाहती थी कि तुम्हारा यह सम्बन्ध चिरकाल तक बना रहे और सामाजिक मर्यादाओं में।'

'यह असम्भव तो नहीं है किन्तु इसमें नीला का सहयोग भी चाहिए। मेरा ऐसा ख्याल है कि मैं अपने व्यवहार में असंयत नहीं हूँ फिर भी मैं भविष्य में उससे मेल जोल कम रखने का प्रयत्न करूँगा।'

'नहीं बेटा कमल। मेरा यह अभिप्राय कभी भी नहीं है। बल्कि मैं तुम्हारी सोहबत में नीला को अधिक सुरक्षित समझती हूँ। उसमें कुछ विवेक आएगा और उसका व्यवहार संयत बनेगा। मैं नहीं चाहती कि वह अब अपनी अज्ञानता से फिर आवारा सोहबत में पड़ जाय। उसकी रक्षा करने तथा उसे सही मार्ग पर ले जाने के लिए मैं तुम्हें योग्य मानती हूँ।'

'यह तो आपका बड़प्पन है मौसी जी' इतना कह कमल कुछ अधिक गम्भीर हो गया। मौसी के ये शब्द 'फिर आवारा सोहबत में न पड़ जाए' उसके मस्तिष्क को झकझोर देने के लिए काफ़ी थे। तभी नीला ने भीतर से खाना परोसे जाने की सूचना दी। खाते समय तीनों मौन थे। मौसी के अन्तिम वाक्य अब तक उसके लिए पहेली बने हुए थे वह कुछ सोच नहीं पाता था या यों कह सकते हैं कि किसी निर्णय पर

नहीं पहुँच पाया था। वह चुपचाप खाता रहा और सोचता रहा। मौसी और नीला कुछ न कुछ लेने के लिए आग्रह करते रहे और वह ससंकोच आवश्यकतानुसार लेता रहा और खाता रहा। खाना खाकर वह उठ बैठा और वाश बेसिन से हाथ धोकर पुनः मेज़ के पास आ गया। नीला और मौसी अभी खा रही थीं।

'अब जाना चाहता हूँ मौसी जी, भोजन के लिए धन्यवाद।' नीला ने उसकी ओर झाँका। उसकी मुद्रा में याचना थी शायद उसको रोकने के लिए।

'बेटा, मैं तो तुम्हें पुत्रवत् मानने लगी हूँ। तुममें ऐसा जाने क्या है जो तुम्हारे प्रति स्नेह और विश्वास उत्पन्न कर देता है। कभी कभी आते रहा करो।'

'जैसी आज्ञा। अच्छा नमस्ते।' कमरे से निकलते-निकलते उसने नीला की ओर देखा। वह आँखों की कोरों में उसे ताक रही थी जिनमें अनुराग मिली उदासी थी। उसने बाहर निकल कर सिगरेट जलाई और संयत चाल से बगीची पार करने लगा तभी रातरानी की मादक सुगन्ध की एक लहर उसके आस-पास से गुजर गई। उस भीनी गंध ने नीला की रसभीनी निकटता की याद कमल में लगा दी। नीला के प्रति शंका और उदासी का भाव उस लहर में बह गया। उस सुगन्ध के समान नीला भी उसके मन में बस गई और एक क्षण के लिए उसकी तीव्र इच्छा हुई कि नीला उसके पहलू में हो। उसने सिगरेट का एक कश लिया और दूसरे ही क्षण वह सड़क नाप रहा था।

कमल ने अपनी सीट पर करवट बदली। खड़क-खड़क, खड़क--खट। वह डिब्बे में सम्पूर्ण अंधेरा चाहता था। उसने शाल उठाकर अपनी सीट पर सर के ऊपर डाल लिया। उसने फिर सोने की कोशिश की लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। विचारों की शृंखला वहीं से चल पड़ी, जहाँ छुटी थी।

घर आते हुए कमल के दिमाग में एक तूफान उठा हुआ था। मौसी के शब्दों के साथ ही नीला के प्रथम मिलन के समय के कहे गये

वाक्य, दोनों ही मिलकर एक विशेष भावना बना रहे थे। कमल संवेदनशील लड़का था। वह हेप्पी गो लकी किस्म का नहीं था वर्ना नीला को वह वासना की दृष्टि से ही देखता और वह अब तक उसके लिए पुरानी हो गई होती। तो नीला अछूती नहीं है? यह यदि सत्य होता तो बड़ी बात थी किन्तु इस विचार का आभास मात्र भी कमल को स्वीकार नहीं था। तो वह कैसी मानसिक स्थिति थी जो एक पन्द्रह सोलह वर्ष की लड़की को निर्लज्ज बना सकती थी।

उसने सोचा शायद नीला के माता पिता ने उसे बचपन से ही स्वाधीन रखा है और उसके ऐसे स्वच्छंद जीवन का कारण उसके मन पर अधिक सिनेमा देखने का, सिने पत्रिकाओं में विशेष रुचि रखने का प्रभाव हो सकता था। वासना मूलक सस्ते पाश्चात्य साहित्य का, उसके मन पर अवश्य ही गहरा नाटकीय प्रभाव पड़ा है। आयु के हिसाब से उसका मानसिक विकास कम हुआ है। वह जीवन को रंग-मंचीय बनाने में आनन्द लेती है। लेकिन अगर वह वास्तव में पतित हो चुकी है तब? कमल को उस पर क्रोध आने लगा और उसे नीला का हर पहलू समझ में आने लगा जो इसकी कल्पना से उसे अरुचिकर था। उसका छिछोरापन, पेटूपन, और सबसे अधिक स्त्री सुलभ शील और संकोच की कमी। उसने मन ही मन तय किया कि वह अब नीला से कभी नहीं मिलेगा। उसका मुख नहीं देखेगा। उसकी भी तो अपनी कल्पना का एक जगत है। उसकी प्रेम की अपनी परिभाषा थी, जिसमें वासना का स्थान कहीं दूर, एक अतीव स्थिति में दिखाई पड़ता था। रंग-मंचीय आधार पर नाटकीय हाव भाव तो उसे हमेशा हल्के और अरुचिकर लगते थे, एक वैश्या के कृत्रिम हावभाव जैसे घृणित। लेकिन इतने पर भी उसके मन के किसी मुलायम कोने में नीला सुरक्षित बैठी थी, वह उसे बिलकुल ही त्याग देने के लिए मन को तैयार नहीं कर पाता था। वह कैसी भी क्यों न रही हो, आज तो वह उसके लिए निधि बन गई थी। जैसे टूटी हुई गुड़िया तक को एक बच्चा अपने से छिनवा लेना कभी भी पसन्द नहीं करता।

युवक के लिए एक युवती और उसका सान्निध्य कुछ ऐसा प्रलोभन है कि युवती का बड़े से बड़ा दोष भी एक बार दोनों को विलग करने में सक्षम नहीं होता। उसकी बुराई का कड़वापन एक बार तो निकटता की मधुरिमा में छुप ही जाता है, शक्कर चढ़ी कड़वी बादाम की तरह। कमल के मन में नीला के प्रति रोश की एक चिनगारी ज़रूर सुलग उठी थी, लेकिन नीला के विचार मात्र से उस सुलगती चिनगारी पर राख की परत-सी जम जाती थी और कमल अपना मन नीला को विसार देने के लिए कैसे भी तैयार नहीं कर पाया। उसके कल्पना जगत में नीला उसकी चिरसंगिनी के स्थान के लिए, वह सब कुछ बनती जा रही थी जिसकी कमल अपनी जीवन साथिन में अपेक्षा करता था। उसके मानस पट पर नीला का बेबस उदास चेहरा उभर आया और कमल द्रवित हो गया। नीला के प्रति रोष और कटुता उसके मन से धुल धुल कर साफ हो चले थे। उस चिनगारी पर राख की परत पर परत जमती जा रही थी, वह चिनगारी धीरे धीरे ठंडी पड़ती जा रही थी, बुझती जा रही थी। इन्हीं ख्यालों में कमल जाने कब सो गया।

कमल अपने हाथ पर एक शीतल स्पर्श पाकर एक दम चौंक कर जाग गया। खड़क-खड़क, खड़क-खट। उसने मुड़ कर देखा, पास की सीट पर नीला बैठी थी। उसने झटक कर अपने सिर के ऊपर से शाल उठा लिया और आँख भर कर नीला को देखा। वास्तव में नीला ही थी। कमल का दिल धड़कने लगा। कितनी दूरी और सहसा कितने निकट। बीस वर्षों के बाद यह अप्रत्याशित मुलाकात। नीला को वह अब तक बिलकुल भूल गया था। विवाह होने के बाद से कमल सुखमय पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रहा था। उसके तन और मन में कोई रिक्तता नहीं थी। लेकिन इतने वर्षों बाद भी नीला के इतने सामीप्य ने उसे सहसा विचलित कर दिया। उसी एक मात्र नीला के सामीप्य ने जो एक बार उसके जीवन में उसकी निकटतम रही थी, और फिर इतनी अधिक दूर कि कमल की कल्पना मात्र से उसका अस्तित्व सदा के लिए समाप्त हो गया था। फिर वही नीला अचानक ही उसके

इतने निकट थी कि उसका स्पर्श प्राप्त हुआ था।

'मुझे पहचानते हो कमल ?'

उसको एकटक निहारते हुए ही कमल कुछ खोया खोया सा बोला,

'तुम कितनी बदल गई हो नीला।'

'और तुम कमल ?' कितने निखर आए हो।' उसकी उनींदी अलसाई आँखों की तरलता में लाल रेशे तर रहे थे। कमल उसकी इस मुद्रा को समझ नहीं पाया, वह हर्ष था या विषाद, या दोनों ही, जो एक के बाद एक उन नयनों की तरलता में डूब और उतरा रहे थे।

'तुम सुखी हो नीला ?' नीला ने एक निश्वास छोड़ा और कमल का हाथ दबा दिया। उसकी आँखें और भी तरल हो गईं। उसने मुँह फेर लिया। कमल के हृदय में कहीं एक टीस उठी और नीला के प्रति मन में दया उमड़ आई। वह उसके नयनों की तरलता के अर्थ समझने में खो जाना चाहता था। क्या ये विश्वास और आत्मीयता के द्योतक आँसू नहीं हैं ? जैसे किसी बालक की वेदना माँ की गोद में पहुँच कर आँसू बन कर उमड़ आती है। वह विचार-मग्न था कि कुछ भर्राई हुई आवाज में नीला ने उत्तर दिया,

'नहीं। और इसके लिए तुम उत्तरदायी हो कमल।' दोनों मौन एक दूसरे को खुलकर देखते रहे। नीला उसमें क्या देख रही थी, खोज रही थी, वह क्या जाने। लेकिन वह जिस नीला को अपने सामने देख रहा था, वह एकदम नयी थी, वह बिलकुल बदली हुई थी। वह बीस वर्ष पहले की नीला नहीं थी और होती भी कैसे। उसका चेहरा फीका पड़ गया था और रूखा हो गया था। चमड़ी रूखी और सिकुड़ गई थी और विषयलोलुपता की छाया आँखों के नीचे घेरा डाले हुए थी। उसके जबड़े कुछ फैल गए थे और निचला ओठ कुछ मामूली सा नीचे की ओर लटक आया था। नीला के चेहरे की एक एक रेखा और सूक्ष्मतम भंगिमाओं से कमल परिचति था। और इसलिए हल्का से हल्का परिवर्तन भी उसकी आँखों को आज खटक रहा था। उसे इस प्रकार जो ग्लानि हुई, वह तुरन्त ही दया में बदल गई। कमल ने अनुभव किया कि इतने

वर्षों बाद और इन परिस्थितियों में भी वह उसमें अपनापन नहीं खो सका। उसका गला भर आया। बेचारी नीला। और उसकी आँखें भी तरल हो गईं।

'ये तुम्हारे पति हैं?' कमल ने नीला से उस पुरुष के विषय में पूछा जो उसके साथ था। एक व्यंग्यपूर्ण मुस्कुराहट के साथ नीला का निचला होठ कुछ अजीब तरह से मुड़ गया। उसका चेहरा कुछ विकृत हो गया और उस पर कटुता और घृणा उभर आई।

'नहीं।' फिर कुछ रुक कर नीला बोली,

'मैंने तुम्हारा हाथ पकड़कर सुख के जिस साफ रास्ते पर चलना चाहा था, मेरी उस आस्था को तुमने धोखा दिया। तुम बीच में ही छोड़कर चल दिए। आज तुम्हारी आँखों में यह नमी देखकर मुझे हँसी आती है।'

'तुम पहले की तरह ही मुझे अब भी गलत समझ रही हो नीला। क्या सच ही तुम मेरा हाथ पकड़ कर चलना चाहती थीं? तुमने कई बार मेरे हाथ को झटक दिया था। जब मेरे प्रति तुम्हारी उपेक्षा मेरी सहनशक्ति से परे हो गई तो मैं तुम्हारे रास्ते से यदि नहीं हटता तो क्या करता? अल्मोड़ा यात्रा के समय तुम्हें अपने साथ ले चलने का मेरा अंतिम प्रयास भी नाकामयाब रहा। बताओ, नैनीताल में मैंने तुम्हें छोड़ा था या तुमने मुझे?' नीला ने कोई उत्तर नहीं दिया। कमल ने कहना जारी रखा,

'मुझे दोष मत दो नीला। हाँ, हो सकता है मैं आवेश में अपनी दृढ़ता और मानसिक संतुलन खो चुका होऊँ। तुम, केवल शारीरिक सुख के पीछे, आत्मिक और चिरन्तन सुख की नीरस प्रतीक्षा, लम्बे समय तक करने के लिए अपना मन नहीं बना सकीं। मैं क्या करता नीला? मैं तुम्हें क्षणिक ऐंद्रिक सुख मात्र देने के लिए अपने मन को कभी भी तैयार नहीं कर सका। मैं ऐसी स्थिति को समय पूर्व समझता था। लेकिन तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम और स्नेह में कभी भी शिथिलता आई थी क्या? क्या तुम इसे अस्वीकार करती हो? तुम मेरे हृदय में नहीं

पैठ सकीं। न तुमने मेरी भावनाओं को ही समझा। काश तुम मुझे समझ सकतीं नीला।'

नीला ने दोनों हाथों में अपना मुँह छुपा लिया। वह सिसक रही थी। कमल का हृदय भी उमड़ आया। वह स्नेह से उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगा। 'शांत हो नीला।' मगर वह सिसकती रही। फिर एकाएक वह कमल की ओर झाँकने लगी। उसकी मुद्रा सहसा ही कठोर हो गई थी।

'तुम्हें मैंने भीरू समझा, एक आदर्शवादी मूर्ख युवक। तुममें बहुत से युवक युवतियों के आधुनिक जीवन के अनुसार रंगीनी कहाँ थी, गति कहाँ थी, हाथ पकड़ कर खींच ले जाने, प्रतिपक्षी से टक्कर लेने की भावना कहाँ थो ? स्त्री हमेशा हिम्मतवर में ही अपना आराध्य ढूँढती है। मैं इसी भावना में ढल गई थी। फिर मेरा स्वयं का अहं भी तो जागा और तभी से नारी को अबला मानने वाले पुरुष को मैं अब तक चुनौती देती रही हूँ। लेकिन अब मुझे ये सब व्यर्थ लगता है। मैं एक बार जीवन में लुढ़की तो लुढ़कती ही गई। मेरा अहं क्या था, कहाँ था, कहाँ गया और मैं सबला कब बनी ? आज भी तो अबला ही हूँ। शरीर के सुख और वैभव की कामना में, मैं अनायास ही पुरुष की वासनामय पशुता का शिकार बन गई। और आज ?....तुम पूछते हो, यह मेरा साथी, मेरा कौन है ? छिः बस एक गंदगी में कुलबुलाता कीड़ा, नीच और लंपट। लेकिन मेरी कुछ मजबूरियाँ हैं कमल। अब मेरा पुरुष मात्र में विश्वास उठ गया है। मैंने इस दौड़ में क्या पाया कमल, केवल शरीरिक सुख, वैभव, कपड़े, मोटरें, ऊँचा समाज। नीला के चेहरे पर उपेक्षा और घृणा भरी व्यंग्यात्मक मुस्कुराहट झलक आई। उसने कहना जारी रखा, 'विदेश यात्रा, अच्छा भोजन, आभूषण सब आए और गये। और मैं जो कुछ अपना कह कर इन बीस वर्षों में संजो सकी हूँ, वह मेरी केवल एक निधि है, निराशा। मेरे हृदय का एक टुकड़ा भी मैं अपने में से निकाल कर संजो नहीं सकी और मैंने अपने ही रक्त मांस के उन अंशों में धड़कन पड़ने से पूर्व ही उन्हें मसले जाते देखा है, उन

जन्मदाता मानवों द्वारा जिनके धन की छाया में मैंने आश्रय पाया। मैं स्वयं इस सबके लिए उत्तरदायी नहीं हूँ, ऐसा नहीं है। मैं अपनी वेदना को इन बीस वर्षों में विष की तरह पीती रही हूँ, किन्तु वह विष आज तक मादक नहीं बना। आज मैं एक ऐसी स्थिति में आ पड़ी हूँ जहाँ से, अब मुझे कोई मार्ग नहीं सूझ पड़ता है। समय की गति और परिस्थितियों की लहरों में मैंने अपने को छोड़ दिया है। मेरी सारी ही लालसाएँ अब मर चुकी हैं लेकिन मैं खुद जीवित हूँ। कई बार मैंने आत्महत्या करनी चाही मगर मैं अपनी हिम्मत भी तो खो चुकी हूँ कमल। केवल जीवित रहने के लिए और सुख से मरने की साध लिये मैं परिस्थितियों की दास, बिना हाथ पैर हिलाये, इस विकृत समाज की धारा में बह रही हूँ जहाँ मैं केवल वासना, तृप्ति और स्वार्थ सिद्धि के लिए, एक जड़ माध्यम के रूप में काम में लाई जा रही हूँ। और इसके एवज में मुझे मिलते हैं आश्रय, तन ढकने की व्यवस्था, उदर पोषण से जीवित रहने का अधिकार। चंद चाँदी के टुकड़ों के सिवाय दुनिया में मेरा अपना कुछ भी नहीं, मेरा अपना कोई नहीं। मैंने काहे की कल्पना की थी और मुझे मिला क्या ?' वह उत्तेजना से हल्की सी हाँपने लगी थी। उसका चेहरा जैसे रो देने को तैयार हो। कुछ आश्वस्त होकर वह फिर कहने लगी,

'कमल क्या तुम विश्वास करोगे ? लगभग पाँच वर्ष पूर्व तुम मेरे मानस पट पर एक बार उभरे थे। तब मुझे अपने जीवन से इतनी ग्लानि और निराशा होने लगी थी कि मैं अपने इस जीवन का अंत कर डालना चाहती थी। तब मैंने पुरानी यादों को कुरेद कर अपने सामान से पुराने कागजों का एक बंडल निकाल लिया, जिसमें तुम्हारे कई पत्र थे। उन्हीं में मुझे तुम्हारा एक फोटो मिल गया। मैं उसे निर्निमेश देखती रही और तुम्हारे चेहरे में मुझे एक ऐसी आभा दिखाई दी जो औरों से बिल्कुल भिन्न थी और जो स्वाभाविक थी और जिसमें थी ईमानदारी। मुझे कितना विस्मय हुआ उस समय। जिस ईमानदारी को तुम्हारे चेहरे पर मैं तुम्हारे उस फोटो में उस

दिन देख रही थी, उसके प्रति अब तक मेरी आँखों पर कौन सा पर्दा पड़ा रहा। मैंने तुम्हारे सारे पत्र पढ़े और मुझे उनमें कुछ ऐसी बात मिली जिसे मैं पहले कभी नहीं देख पाई थी, न समझ पाई थी। और तब मैं चाह कर भी तुम्हारे निकट आने से बची। अपने विगत जीवन की ओर देखकर मुझे तुम्हारे सामने आने की हिम्मत नहीं हुई और सच पूछो तो उस समय मैं तुम्हारे प्रति आश्वस्त भी नहीं थी। मेरे हृदय के किसी कोने में तुम्हारी आदर्शवादी भीरूता छिपी हुई थी। मैंने तुमसे सम्पर्क साधने का विचार छोड़ दिया लेकिन तुम मेरे मानस पट पर दिनों तक छाये रहे। मैं अपनी भावना को दबा नहीं सकी और शायद जीवन में उस दिन पहली बार मैं जी भर कर रोई थी। उन दिनों मैं कलकत्ते में एक मुसलमान व्यापारी के पास थी। और उस दिन की घटना मेरे मन पर गहरी उदासी बन कर कुछ ऐसी छायी कि मेरा वह आश्रयदाता पशु मुझसे रुष्ट रहने लगा। उसने मुझे अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन बनाया और वह स्वार्थ था वही पैसा जिसके पीछे मुझे तो सारा संसार ही पागल नज़र आया। ऐसा पागल जो सिर्फ दूसरों की ही चमड़ी नहीं चीरता, कभी कभी अपने कपड़े भी फाड़ने लगता है। एक मजबूरी मुझे विवश करती रही। मेरी आत्मा विद्रोह करती रही और मैं देश के एक बड़े नेता की रखैल बन गई। तब से कमल, एक अनबूझी टीस हृदय में लिये मैं तुम्हें निरंतर याद करती रही हूँ। इस बार कोई भी सम्मोहन, कोई भी प्रलोभन, मेरी भावना में आई तब्दीली को नहीं बदल सका। मैं अपनी मज-बूरियों से, संज्ञाविहीन सी, स्थितिप्रज्ञ सी, जीवन के बहाव में बहती चली जा रही हूँ। और तुम मुझे जैसे सदैव पतवार थामे एक माँझी से, मंझधार में खड़े दिखते रहे हो। मैं तुम्हें अभी तक छू नहीं सकी कमल, और आज भी तुम मेरी पहुँच से बहुत दूर खड़े नजर आते हो मेरे संबल।' वह एक निश्वास छोड़कर खामोश हो गई। उसने कातर दृष्टि से कमल को निहारा और हताश धीमी आवाज में कहने लगी,

'उस नेता के बढ़ते हुए राजनैतिक प्रभाव के साथ, मैं उसके लिए

पुरानी पड़ती गई और एक दिन फिर इस असार संसार में नये आश्रय को खोजने लगी। अब पिछले लगभग ड़ेढ साल से इस व्यक्ति के साथ हूँ जिसे तुम मेरा पति समझ रहे हो। कमल, मैं अब उस अधिकार से तुमसे प्रेम का दावा नहीं कर सकती। मैं तुम्हारी आँखों में पहले से ज़्यादा दृढ़ता और ईमानदारी देखती हूँ। तुम्हारी आँखों में कभी कभी उतर आने वाली वासना अब स्नेह में ढल गई दिखाई पड़ती है। मैंने तुम्हें कुछ भी क्यों न समझा हो कमल, तुम्हारी सच्चाई और निष्ठा के आगे, तुम्हारे पौरुष के आगे मैं आज नतमस्तक हूँ।'

वह निढाल होकर सीट के पीछे की ओर लुढ़क पड़ी। कमल को याद आया, उसके थर्मस में कुछ कॉफी बची थी। उसकी आँखों के आगे उसकी पत्नी का लावण्यमय स्नेह-सिक्त मुख घूम गया। उसने बैग उतार कर अपने पैरों पर जमा लिया और उसमें से थर्मस निकाल कर उसे वापस रख दिया। थर्मस में लगभग दो प्याले कॉफी थी उसने एक प्याला भरा और नीला की ओर बढ़ा दिया। उसने चुपचाप प्याला ले लिया। कॉफ़ी काली थी। नीला उसे देख कर मुस्कुराई और उसने कमल की ओर एक चिरपरिचित मुद्रा में प्रश्न भरी दृष्टि डाली और चुपचाप कॉफ़ी पीने लगी जैसे एक आज्ञाकारी बालक माँ के हाथ से इच्छा न होते हुए भी दूध का प्याला लेकर पीता है।

'तो अब मुझे बनाने लगी हो नीला, क्यों?'

नीला उसकी ओर देखकर हँस दी। कमल मौन उसके मुख की ओर देखता रहा। उसके मुख की गम्भीर मुद्रा मुस्कुराहट में घुल गई थी। इस बार नीला के चेहरे पर शांति और आत्मविश्वास था।

'देखो नीला, मुझे अब भी गलत मत समझना। यह मत सोच लेना कि मैं तुम्हारे अहं को चुनौती दे रहा हूँ। मैंने तुमसे प्रेम किया है और आज बीस वर्ष बाद वह प्रेम स्नेह और सहानुभूति में परिवर्तित होकर उभर आया-सा लगता है। तुम्हारी मान्यताएँ भी अनुभव की चपेट में ढह गई जान पड़ती हैं। तुम अपने आचरण में

संयत नहीं रहीं। तुम वासना के पीछे भागीं और इन बीस वर्षों की कशमकश और भाग दौड़ के बाद आज अपने जीवन के किस जर्जर कगार पर आ खड़ी हुई हो। यौन सम्बन्ध और कामेच्छा शरीर की एक आवश्यता है और शरीर की अन्य आवश्कताओं के समान ही उसकी पूर्ति भी ज़रूरी है किन्तु अन्य आवश्यकताओं की अपेक्षा इसकी पूर्ति के लिए संयम और कुछ सामाजिक मान्यताओं का पालन करने में विवेक से अधिक काम लेना पड़ता है। अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जब व्यक्ति उच्छृंखल हो जाता है तो उसका समाज पर बुरा असर पड़ना स्वाभाविक है और जब अनेक व्यक्ति अपने व्यवहार में असंयत हो जाते हैं तो प्रायः सारा समाज ही उच्छृंखल हो जाता है। अर्थमूलक समाज में ये दोष जल्दी बढ़ते हैं और तब व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के नाम पर शोषण होता है जो समाज को नैतिक पतन की ओर ले जाता है और इस प्रकार सारी जाति ही खत्म हो सकती है। शिक्षा और संस्कार ही व्यक्ति और समाज को इस पतन से बचा सकते हैं। मैं भी तुम जैसा ही साधारण प्राणी हूँ।' कमल कुछ रुका। नीला आश्वस्त हो ध्यान से उसकी बात सुन रही थी, उसने अपनी बात जारी रखी,

'जिस आयु में हम तुम एक दूसरे के पास आए थे, वह समय था हममें वासना के सहज उद्रेक का। उसमें एक रस होता है, मादकता होती है, और वह उद्रेक बड़ा भीषण होता है। सारी ऐंद्रिक लालसाओं में केवल इसी पर काबू पाना केवल कठिन ही नहीं अपितु असम्भव होता है। जब जब भी तुम मेरे निकट होती थीं, मेरे बहुत निकट, मैं अपना मानसिक संतुलन लगभग खो देता था। मैं तुम्हें बहुत प्रेम करता रहा हूँ नीला, और शायद वही प्रेम मेरे मन में कुछ ऐसी भावना या विवेक उत्पन्न कर देता था कि कहीं एक बार भी तुमसे यौन सम्बन्ध बन जाने से हमारे परस्पर प्रेम की मधुरता फीकी न पड़ जाय। यह मेरी खामख्याली भी हो सकती है और भीरुता भी। तुम जो भी समझो, लेकिन मैं कभी भी ऐसे किसी भी कृत्य की कल्पना

नहीं कर पाता था जिससे हमारा प्रेम क्षणिक अथवा अल्पकालिक हो जाय। विवाह के बाद मेरी मान्यताएँ बदली हैं।' वह फिर रुका। उसे पानी पीने की इच्छा हुई जो उपलब्ध नहीं था। वह कुछ उखड़ा उखड़ा सा इधर उधर देखने लगा। नीला ने कुछ भाँपते हुए पूछा,

'क्यों, कुछ चाहिए कमल ?'

'पानी पीना चाहता था।' नीला के मुख पर प्रश्नवाचक चिन्ह अंकित हो गया।

'चलो जाने दो' अपना गला साफ करते हुए कमल ने फिर कहना शुरू किया,

'हाँ तो मैं कह रहा था, मेरी मान्यताएँ पिछले इन वर्षों में बदली हैं। लेकिन मैं आज तक प्रेम और शारीरिक सम्बन्ध के बीच के अंतर को ठीक ठीक समझ नहीं सका हूँ। अभी भी मेरा कुछ ऐसा विचार है कि वासना तृप्ति और प्रेम की समरसता दीर्घकालिक तभी हो सकती है, जब दोनों पक्ष एक दूसरे को खूब समझते हों, एक दूसरे में आत्मरत हों, दो शरीर एक प्राण जैसे। मैं वासना और प्रेम को एक दूसरे का पूरक मानता हूँ। पन्द्रह वर्ष के सुखी विवाहित जीवन में इस विचार की सार्थकता को मैंने एक सीमा तक अनुभव किया है। सब के साथ यह स्थिति सम्भव नहीं हो सकती और न होती ही है किन्तु यह असम्भव नहीं है। मैं कुछ ऐसी ही सुखद कल्पना तुम्हारे लिए भी अपने हृदय में संजोए हुए था नीला। मैंने तुम्हें कई बार समझाने का प्रयत्न भी किया। यही कारण है कि तुमसे मेरा इतना प्रेम होते हुए भी, तुम्हारे इतने निकट होते हुए भी, मैंने तुमसे यौन सम्बन्ध कभी भी नहीं बनाया। न मैं तुमसे कभी पूरी तरह से पत्नी का भाव ही बना पाया था। वैसे कहीं दूर मैं तुम्हें स्वप्नों में कभी कभी पत्नी के रूप में देख अवश्य लेता था कि तुम मुझसे छिटक गईं।'

नीला ने एक निश्वास छोड़ी और वह कामना और ईर्ष्या भरी निगाहों से गौर से कमल के मुख पर देखती रही। दोनों की आँखें चार होते ही नीला ने इस बार नज़रें झुका लीं। कमल ने अपनी बात जारी

रखते हुए कहा,

'इसीलिए मैं तुम्हें बहन भी तो नहीं मान पाया था। केवल इस शारीरिक निकटता के कारण हमारी सामाजिक मर्यादाएँ यह कहाँ सोचने देती थीं। और सच कहना नीला, यदि मेरा यह भाव तुम जान पातीं तो क्या मेरे इतने निकट भी आई होतीं ?' कमल ने प्रश्न भरी दृष्टि नीला के चेहरे पर डाली। वह विचारमग्न पूर्ववत् नीचे देख रही थी।

'किन्तु आज बीस वर्ष बाद इस तन्हाई के प्रायश्चित से घुल कर अथवा समाज की सभ्य दुरात्माओं के द्वारा तुम्हारे अहं के कुचल जाने के बाद, तुम्हारी आत्मा का गला घुट जाने के बाद और तुम्हारे शरीर के नुच जाने के बाद, तुमसे मेरा वह प्रेम और तुममें मेरा वह भाव आज स्नेह और ममता में बदल गया है। आज से तुम मेरी बहिन हो नीला। तुमने आज वर्षों से दबी हुई मेरी भावनाओं को फिर से उभार दिया है, मेरे जख्मों को कुरेद दिया है। अब तुम्हारा भाई के प्रति ममतामय स्नेह ही इन ज़ख्मों को भर सकेगा। मैं बहुत दुखी हूँ नीला, मेरा जी तुम्हें देखकर भर-भर आता है। तुम चाहो तो मेरी एक बात को आज भी असत्य मान सकती हो। तुम जहाँ भी रहो नीला, सुखी रहो, यही कामना मैं करता हूँ। यदि तुम्हें अपने इस सम्बन्ध में थोड़ा भी विश्वास है तो सच मानना, इसे कभी दूर नहीं पाओगी। इस बार संसार में तुम अपने को निराश्रित न मानना, भाई का द्वार बहिन के लिए सदैव खुला मिलेगा, नीला। मुझे भी बहिन की ममता और स्नेह की चाह है·····'अब जाओ और सो जाओ।' कमल ने भावावेश और स्नेह से भर उसके सर पर हाथ फेरा और नीला गद्‌गद् हुई चेहरे पर मुस्कुराहट लिये नैनों में आँसू भरे, उसकी ओर अपलक निहार रही थी।

'कुछ अपनी भी कहो न कमल'

'अब तक अपनी ही तो कहता रहा हूँ नीला। और क्या सुनोगी ?'

'तुम्हारी पत्नी कैसी है, बच्चे कितने हैं, तुम करते क्या हो, कहाँ रहते हो ?

कमल हँसा, 'इतने सारे सवाल एक साथ ही कर डाले ?'

'क्यों, अच्छा नहीं लगा ?' नीला ने कहा,

'नहीं तो' वह अपनी पत्नी के विषय में पूछे प्रश्न को याद कर फिर हँस दिया। कितना स्त्री सुलभ प्रश्न है। वह उत्तर टालते हुए बोला,

'मैं लोक सभा का सदस्य हूँ, आजकल दिल्ली रहता हूँ, सामान्यतया घर या फिर लखनऊ।'

'दिल्ली सपरिवार रहते हो ?' बीच में ही नीला ने पूछा।

'मैं जहाँ भी रहता हूँ, सपरिवार ही रहता हूँ। सपरिवार याने सपत्नीक। तीन बच्चे हैं, दो लड़के, एक लड़की और परिवार में कोई नहीं बचा है। क्या आज तुम इस परिवार में नई सदस्य बन कर आना स्वीकार करती हो।'

'क्या तुम्हारी पत्नी बहुत सुन्दर हैं ? तुम उन्हें बहुत चाहते हो ?'

'जिस वस्तु में चाहत होती है, वह सुन्दर, अति सुन्दर होती है, और किसी स्त्री के सामने किसी अन्य स्त्री की सुन्दरता की बड़ाई करना सुनने वाली का अपमान करना होता है। तुम स्वयं ही देख लेना अपनी आँखों से। मेरी आँखों में तो उसका रूप लावण्य अब तक बस चुका है।'

'काश मैं उन्हें देख सकती, उनकी ममतामयी छाया में अपने दिल के फफोले फोड़ सकती, अपने पापों का प्रायश्चित कर सकती।' नीला ने निश्वास छोड़ी और कहना जारी रखा,

'और तुम्हारे प्रतिरूप उन बालकों को अपने अंक में भर सकती, अपनी मातृत्व की घुटन को मिटा सकती। मगर कमल·······काऽश ऐसा हो जाय'

'क्यों ? निराश क्यों होती हो ? क्या तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं ?'

'ऐसे नहीं मेरे कमल, काश तुम मेरी मजबूरियों को समझ सकते, मेरी वेदना को महसूस कर सकते।'

कमल का गला भर आया। उसकी आँखें डबडबा आईं। उसने फिर नीला के सर और पीठ पर हाथ फेरा। एक अन्य स्त्री और उसके

स्पर्श से कमल की धमनियों का खून ज़रा रफ्तार पकड़ गया। लेकिन उसका मन निर्मल ही बना रहा। नीला उदास मन उठी, डबडबाई आँखें लिये, नीची गरदन किये, धीर गति से चल कर अपनी सीट पर जा बैठी और सीट को पीछे झुकाकर निढाल होकर लुढ़क गई।

खड़क-खड़क-खड़क-खट। बुड्ढा बराबर खाँसे जा रहा था। कमल के पैरों में सोया बालक कुनमुनाया। सामने बैठी अधेड़ महिला ने एक ज़ोर की उबासी ली और रोज़मर्रा की आदत के अनुसार रामनाम का उच्चारण किया। फिर सहसा अपने आसपास देखकर चुप हो गई। शायद उसने सोचा हो कि इस प्रकार रामनाम लेने के लिए स्थान उपयुक्त नहीं था। खिड़की से बाहर प्रातःकाल का झुटपुटा प्रकाश दिख रहा था। डिब्बे का वातावरण अलसाया, उदासी भरा और बोझिल लग रहा था। कमल उठा, उसने बैग से शेविंग का सामान, ब्रुश, मंजन तौलिया आदि निकाले और लेवेट्री की ओर चल दिया। उसने नीला की ओर देखा, वह सो रही थी और धीमी बोझिल साँस से, कंबल के नीचे उसकी छाती उठ बैठ रही थी।

कमल जब फारिग होकर निकला, सुबह का प्रकाश फैल चला था। वह फोल्डिंग सीट पर बैठ कर सिगरेट पीने लगा। बाहर कोहरा छाया हुआ था, पिछले दिन की वर्षा और बादलों के परिणामस्वरूप। समय के हिसाब से अभी उजाला काफ़ी नहीं हुआ था। खिड़की का काँच कुहासे से मटमैला हो रहा था और बाहर का दृश्य साफ नहीं दिखाई पड़ता था। सिगरेट खतम करके कमल डिब्बे में चला गया। उसने नीला की ओर देखा, वह पूर्ववत् सो रही थी। उसका साथी भी अभी नहीं उठा था। उसके हृदय में नीला के प्रति दया फिर से उमड़ आई। बेचारी बेबस नीला। उसके उस कुरूप साथी को वह उसका पति शुरू से ही स्वीकार नहीं कर सका था। ब्यूटी एण्ड द बीस्ट। वह मुस्कुराया और अपने स्थान पर बैठ गया। रात की सारी घटना पर जब उसने विचार किया तो प्रातः के प्रकाश में उसे वह सपने-सी लगी। डिब्बे की रोशनी बुझ गई थी। कई यात्री उठ गए

थे, जगार हो गई थी। उसने अपनी खिड़की का परदा उठा दिया। बाहर कुहरा ऊपर उठ गया था और प्रभात का मद्धिम प्रकाश चारों ओर फैल चला था। वातावरण में सर्दी की चुभन थी। कमल ने शाल को अपने चारों ओर कस लिया।

बाहर के दृश्य बड़े मनोहारी थे। या शायद कमल को ऐसा लग रहा था। रात की सारी घटना अलिफलैला की हज़ार रातों की एक रात के समान उसके मन पर छाई हुई थी और सुबह का प्रकाश उस तिमिर की उदासी और घुटन को जैसे साफ कर रहा था। प्रातः की धूप में चमकती प्रकृति उल्लासमय और मनोहारी ही थी उसके लिए। ऊँची नीची पहाड़ियों पर पीली घास फैली हुई थी। नालों में पहाड़ियों की परछाई अब भी अंधेरा किये हुये थी। सागवान के लम्बे सीधे पेड़ों के चौड़े पत्तों से कुहासे की नमी, बूंदें कभी कभी चमक उठती थीं। कहीं सालर के पेड़ों का समूह दृश्यावलि को वीराना सा बना रहा था लेकिन उनके माथों पर बारीक बारीक पत्तियों की हल्की हरियाली वातावरण में कुछ तो जीवन का आभास करा ही रही थीं। बीच बीच में कर्हे के चिकने सफेद गुलाबी पेड़ दृश्य की समरसता को मिटाते हुए उसे नयनाभिराम बना रहे थे। कमल पक्षियों के कलरव की कल्पना में आनन्द अनुभव करता था जो गाड़ी की खड़क-खट में डूबा हुआ था। टेलिग्राफ के तारों पर चिड़ियाँ सैंकड़ों की तादाद में पंक्तिबद्ध बैठी धूप सेक रही थीं। कुछ कुहासे से भीगे अपने पर फड़फड़ा रही-थीं, कुछ पर फैला रही थीं और कुछ उन्हें चोंच से सहला रही थीं। गाड़ी के निकट आते ही सारा समूह फर्र से उड़ जाता था। पहाड़ियों और टेकरियों के बीच खुली जगहों में या उथली वादियों में, छोटे छोटे खेतों में रबी की हरी फसल लहलहा रही थी। अलसी के आसमानी फूलों से भरा खेत का टुकड़ा और कहीं चने का नीलिमा युक्त हरियाली लिये टुकड़ा, गेहूँ या जौ के खुले हरे रंग के टुकड़े थे। खेतों में झोंपड़े एक एक कर फैले हुए थे। आसपास की पहाड़ियों पर सूखी घास की पीली छटा के बीच आसमानी और गहरे हरे धब्बों से खचित

हरियाली भरे खेत बड़े नयनाभिराम लग रहे थे। चिड़ियों के अलावा जीवन के नाम पर, इन्ही वादियों में कहीं कहीं गायों और बैलों को घेरते हुए लड़के दिखाई पड़ जाते थे। दृश्य भागते जा रहे थे, एक के बाद एक और वह कोलाहल रहित ग्रामीण जीवन पीछे छूटता जा रहा था। कमल का मन उस दृश्यावली और जीवन की झलक में रम गया था।

डिब्बे में अधिकांश व्यक्ति जाग गए थे। दोनों ओर आवाजाई शुरू हो गई थी। डिब्बे का बोझिल वातावरण हल्का हो चला था। डाइनिंग कार से चाय वाले आ गए थे और दो आने में एक कप के हिसाब से यात्रियों को चाय दे रहे थे। कमल ने एक कप चाय ले ली। उसने मुड़ कर फिर नीला की ओर देखा, वह अब भी सो रही थी। उसका साथी बगल की सीट पर बैठा था और चाय पी रहा था कमल को यह साधारण-सी घटना भी चुभ गई। क्या उस आदमी ने नीला को जगाने का प्रयत्न किया था ? क्या उसके हृदय में यह भाव भी जागा था कि अपनी साथिन की आवश्यकता के विषय में भी सोच ले, उसके लिए जिसने अपना सर्वस्व उस पशु को अर्पित कर दिया था ? या शायद नीला जगाने पर भी न उठी हो। कैसा आदमी है यह ? क्या यही स्वार्थपरता, और उपेक्षा ही वह कारण है जो गहरे धँसे काँटे के समान निरन्तर नीला के मन में चुभा करती है और वह इस जीवन से निराश हो चुकी है ?

नीला उठ गई थी। वह कमल की ओर की लेवेट्री की ओर शायद जानबूझ कर जा रही थी। जाते जाते वह कमल की सीट के बराबर आकर थमते थमते आगे बढ़ गई। इन्हीं भावों में दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। नीला मुस्कुराई। उसके चेहरे पर निश्चिंतता के चिन्ह थे। कमल गम्भीर था और उसका चेहरा भाव-रहित था। कमल ने 'माइ सेवरल वर्ल्ड्स' खोली और पढ़ने की चेष्टा की। 'माइ सेवरल वर्ल्ड्स' यह क्या हुआ, कमल को लगा जैसे वह स्वयं भी तो रात ही से किसी दूसरी दुनिया में उतर आया था। वह किताब पढ़ने लगा, पढ़ता रहा।

उसे भूख लगने लगी थी। शाम जब घर से चला था, तभी खाया था, बीच में दो सेंडविच खा लिये थे। उसने घड़ी देखी। आठ बज कर दस मिनट हुए थे। प्रातः की नमी भरी सर्दी डिब्बे में भी थी। उसने शाल उतारा और तहाकर रख दिया और जाकेट पहन लिया। वह उठा और नाश्ता करने डाइनिंग कार की ओर चल दिया। उसका रुख नीला की सीट की ओर था। दोनों सीटें खाली थीं। उसने सोचा नाश्ता करने गए होंगे।

डाइनिंग कार के बाहर काफ़ी लोग खड़े थे। दो डिब्बों के जोड़ में भी कुछ युवक युवतियाँ खड़ी थीं। कमल झिझक कर उधर ही रुक गया। एक युवक सीटी में जाज़ की एक तर्ज़ बजा रहा था। दूसरा एड़ियों से गाड़ी के फर्श पर ताल दे रहा था और युवतियाँ मुस्कुरा रही थीं। उनमें एक कुछ मौन और गम्भीर थी, उसने सलवार और कमीज़ पहन रखी थी। उन्हें कमल की उपस्थिति कुछ खटकी थी। सब खामोश हो गए। सीटी बजाने वाले युवक ने बड़ी उपेक्षा से कमल की ओर देखा और वह एक ओर हट गया। कमल ने एक झलक में सबके चेहरों पर उपेक्षा देखी, किसी के चेहरे पर घृणा मिश्रित थी और वह सर झुकाए जोड़ को पार कर गया। डाइनिंग कार के बाहर के गलियारे में भी कई व्यक्ति खड़े थे। बाहर खुलने वाले दरवाज़े की ओर नीला और उसका साथी खड़ा था। कमल उधर ही दब गया।

'अरे मिस्टर मिश्र !' नीला बड़े विस्मय भरे स्वर में बोली,

'आप कहाँ ?'

कमल कठिनाई से अपनी हँसी दबा सका, 'ओह आप हैं। कहिए कैसी हैं। बड़ी ही मुद्दतों के बाद अचानक मिलना हुआ। आपने खूब पहचाना।'

'ये मेरे पति हैं मिस्टर एम० एल० चिताम्बरे'

कमल ने बेपरवाही से दोनों हाथ जोड़ दिए और शिष्टाचार युक्त शब्द उपेक्षा से ही बोला,

'नमस्ते, आपसे मिलकर हर्ष हुआ।' वास्तव में उसे ग्लानि हुई

थी। तभी एक बैरा ने डाइनिंग कार के दरवाज़े के बाहर सर निकाल कर उन्ही की ओर इशारा कर कहा,

'आप तीन'

पहले नीला, उसके पीछे उसका साथी और फिर कमल डाइनिंग रूम में दाखिल हो गए। दरवाजे के पास ही बाँए हाथ पर पहली मेज पर चार में से तीन स्थान खाली हुए थे। नीला आगे थी, वह दोनो खाली सीटों की ओर बढ़कर आखिरी पर बैठते हुए बोली,

'आइए कमल जी'

कमल उसके सामने बैठना नहीं चाहता था इसलिए वह 'धन्यवाद' कहकर उसके बगल की कुर्सी पर बैठ गया। मि० चिताम्बरे सामने बैठ गए। एक व्यक्ति उस मेज पर अभी नाश्ता खत्म कर ही रहा था। तीनों मौन थे। चिताम्बरे पैनी आँखों से कमल को देख रहा था। उसके चेहरे पर कमल के प्रति उपेक्षा और हिकारत के भाव साफ मालूम पड़ते थे। एक परछाई ईर्ष्या की भी आ जा रही थी। वह उसका परिचय प्राप्त करने के लिए व्यग्र मालूम होता था। उस मेज़ पर बैठा चौथा व्यक्ति नाश्ता खतम कर चुका था और चाय के अन्तिम घूँट ले रहा था, तभी वेटर एक खाली ट्रे में उसका बिल लेकर आ गया। उस व्यक्ति ने पैसे चुकाए। जो टिप छोड़ा था उसके लिए वेटर ने बंधा हुआ सलाम मारा और बर्तन समेटने लगा और आर्डर लेने के लिए बारी बारी से तीनों की ओर झाँका। कमल ने नीला की ओर मुखातिब हो कहा,

'पहले महिलाएँ। क्या लीजिएगा?'

'आमलेट, टोस्ट बटर, जेम और चाय। बैरा फ्रूट क्या है?'

'केला है मेम साब'

'अच्छा, ले आना'

'साब तुम' उसने चिताम्बरे की ओर रुख किया,

'पोच्ड एग्स, टोस्ट बटर और चाय'

'फरूट नई साब'

'नहीं मांगता'

'और तुम साब' अब कमल का नम्बर आया।

'फुल ब्रेक फास्ट' बैरा चला गया। कमल को इस बात से सन्तोष हुआ कि उसने 'एक खाली', की आवाज नहीं लगाई। चिताम्बरे की व्यग्रता कमल का परिचय पाने को बढ़ रही थी, किन्तु आयु प्रमाण से वह गम्भीर बना हुआ था। कुछ श्रेष्ठत्व की भावना भी थी। तभी नीला बोली,

'ही इज मिस्टर कमलाकान्त मिश्र, माइ वेरी ओल्ड फ्रेंड। वी वर रीडिंग टुगेदर। वी हेव मेट आफ्टर सच अ लांग लांग टाइम। आई एम ऑलसो क्युरियस टु नो अबाउट हिम।' कमल ने अपनी हँसी को हल्की-सी मुस्कुराहट में दबा लिया, वाह रे तिरिया चरित्र।

'यह मुलाकात मेरे लिए भी बड़ी विचित्र है, हम लोग लगभग बीस वर्ष बाद मिले हैं। तो लिजिए, मैं स्वयं ही अपना परिचय दिए देता हूँ। जितना आप मुझे जानने के लिए उत्सुक हैं, उससे कुछ अधिक ही आपकी पत्नी होंगी मेरे विषय में जानने के लिए। मैं और ये लखनऊ में साथ पढ़ा करते थे। आपके लिए तो मेरा इतना परिचय ही काफ़ी है।'

'लेकिन मैं तो यह जानने के लिए उत्सुक हूँ कि आजकल आप कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं आदि' नीला ने बड़ी ही अदा से कुछ इस मूड में कहा जैसे वह कुछ जानती ही न हो और इस अचानक मुलाकात से हतप्रभ हो गई हो। कमल इस नाटक का शीघ्र अन्त चाहता था। बैरा ...कर टेबुल लगा गया था।

'मैं आजकल देहली रहता हूँ और लोक सभा का सदस्य हूँ।'

'मेम्बर पार्लियामेण्ट, अ कांग्रेसाइट' विस्मय में चिताम्बरे ने पूछा। उसके चेहरे से श्रेष्ठत्व का भाव कुछ पुंछ सा-गया था। उसकी आँखों में चमक आ गई। वह कभी कमल और कभी नीला की ओर देख रहा था।

'नो जेण्टलमॅन' आई डू नॉट बिलोंग टू एनि पोलिटिकल पार्टी, आइ ॲम इण्डिपेण्डेण्ट' कमल ने उत्तर दिया। सहसा ही चिताम्बरे ने फिर

पूछ लिया, 'हाउ ओल्ड आर यू ?' 'व्हट एन इरेलेवण्ट क्वेश्चन, वेल, आइ ऍम रनिंग फॉर्टी एथ ईयर' कमल संकोची अवश्य था किन्तु मुँहफट था।

'बट यू डोण्ट लुक सो ओल्ड' चिताम्बरे ने मत दिया।

'आप तब से स्वस्थ भी अधिक लगते हैं, किस चक्की का पिसा खाते हैं ?' नीला ने कहा।

'यह कहावत तो अब पुरानी पड़ गई नीलमणि अब तो सब पनचक्की का पिसा खाते हैं और अब तो ज़्यादातर किसी बड़े फ्लार मिल में पिसा किसी खास ब्रांड का रेडिमेड आटा बाज़ारों में मिलने लगा है।' तीनों हँस दिए। चिताम्बरे वैसे तो गम्भीर बना हुआ था मगर उसके चेहरे पर एक के बाद एक रंग न जाने क्यों बदल रहे थे। पहले तो ईर्ष्या की कुछ झलक थी, अब स्वार्थपरता के छींटे उभरने लगे थे।

'इज़ दिस युवर फर्स्ट चांस इन द पार्लियामेंट ?'

'जी नहीं, यह मेरा दूसरा सत्र है' इस बार तो नीला ने भी उसकी ओर मुड़कर उत्सुकता से देखा। वेटर टेबुल पर नाश्ता चुन रहा था। कमल को भूख लगी थी। उसके सामने केवल कार्न फ़्लेक्स और दूध अभी आया था और केला। कमल खाने लगा। नीला चिताम्बरे और स्वयं के लिए चाय बना रही थी। कमल को लगा जैसे चिताम्बरे उसे घूर रहा था। उसने सिर उठा कर उसकी ओर देखा तो चिताम्बरे फौरन आँख चुरा गया और खिड़की से बाहर देखने लगा। कमल ने इस बार चिताम्बरे को अच्छी तरह देखा, ब्यूटी एण्ड द बीस्ट। अजीब भोंडा आदमी था। उसका कपाल छोटा था और सर पीछे से कुछ चपटा-सा होकर ऊपर को उठ गया था और चोटी के स्थान से एक कोण सा बनाता हुआ पीठ की ओर झुक आया था। उसके बाल मोटे, सख्त और खड़े से थे, जिन्हें ब्रिलियंटाइन से चिपकाने का जैसे प्रयत्न किया गया हो। कनपटी के पास बाल सफेद हो रहे थे। सकड़े कपाल के नीचे भौंहें घनी थीं और उनके

नीचे छोटी गैनी आँखें, जिनकी कोर सुर्ख थीं। कोए फूले हुए थे, जिनसे उसकी पीने की आदत और वासनामय जीवन का आभास होता था। नाक छोटी और नथुने फैले हुए थे। कपोलों की हड्डी उभरी हुई थी और गाल कुछ अन्दर को धँसे हुए थे। कान चौड़े और खड़े, जिनके किनारों पर बाल थे। होठ मोटे, बेतरतीब गोलाकार, घिनौने सुअर जैसे। ऊपर के होठ पर मूँछों की एक लकीर जिसके बाल सख्त और खड़े हुए और चौड़ी ठुड्डी। रंग मैला सा कत्थई और चेहरे पर छितरे चेचक के दाग, हाथों पर रीछ जैसे घने कड़े बाल, गोलाकार छल्लियों की शक्ल में। यह था मि० एस० एल० चिताम्बरे और उसकी आयु होगी पेंतालीस से ऊपर। उसकी नीला से कोई तुलना नहीं थी। वाह रे भाग्य, हाय रे बेबसी।

तीनों मौन नाश्ता करते रहे। कमल का आमलेट, टोस्ट और चाय का कोर्स वेटर रख गया था और खाली प्लेटें उठा ले गया था। नीला कमल के लिए चाय बनाने लगी।

'धन्यवाद, आपने क्यों कष्ट किया ?' कमल ने कहा। नीला के चेहरे पर स्नेह की आभा झलक आई। उस पर निगाह पड़ते ही कमल को अपनी पत्नी की याद बहुत जोर से आने लगी। स्त्रियों में ममता की ये रेखाएँ जब भी उभरती हैं तो कैसी एक समान सी भावना परिलक्षित होती है। बगल में बैठी नीला और सामने बैठा चिताम्बरे जैसे घने कुहासे में विलीन होने लगे और उसकी पत्नी का चिरपरिचित लावण्यपूर्ण मुख उभर कर उसकी नज़रों में छा गया, जो उसकी रग रग में बस चुका था। रोज सुबह नाश्ते के समय वह कितने आग्रह से कमल को खिलाया करती है। जब कमल चाय का दूसरा कप भरने लगता है तो वह सदा ही बड़े आग्रह से कहती है कि वह चाय कम क्यों नहीं पीता। यह क्रम निरन्तर चला आ रहा है और कमल दो ही कप पीता है, कम नहीं। यही सुखद वातावरण कमल के स्वास्थ्य का रहस्य है। उसकी पत्नी कितनी ममतामयी है, उसका कितना ख्याल रखती है, जैसे बच्चे का। स्त्री के चरित्र में कितनी विविधता है, माँ

की ममता, बहिन का स्नेह, पत्नी का प्रेम, प्रेयसी की लालसा और सबसे महान वस्तु त्याग। कमल इन्हीं सुखद स्मृतियों में खो गया था, इतना अधिक कि वह अपने आसपास के जीवन से बेखबर-सा हो गया।

'आप तो बहुत ही गम्भीर हो गए हैं, पहले तो आप ऐसे नहीं थे, नीला ने मौन भंग किया। कमल हँस दिया और उसने हँसते हुए ही कहा,

'अब मैं कालेज का मामूली विद्यार्थी नहीं रहा।'

'आपको मेरे लिए तो नहीं बदलना चाहिए।'

'बिलकुल नहीं, अगर चिताम्बरे साहब को आपत्ति न हो।'

वातावरण मुखर हो उठा, चिताम्बरे भी विकृत-सी हँसी हँसा। मगर वह खुश्क ही बना रहा।

'मेरी तो कहानी सुन ली आपने, अब अपनी भी सुनाइए नील-मणि जी।' नीला चुप ही रही किन्तु चिताम्बरे बोला, 'आप दोनों का बोलचाल बड़ा औपचारिक-सा है।' वह हिन्दी ठीक से नहीं बोल पाता था।

'हमारा परिचय भी तो औपचारिक ही रहा है। आप क्या उसे घनिष्ठ समझने की गलती कर रहे थे ?' कमल ने उत्तर दिया। नीला ने टेबुल के नीचे अपने पैर से कमल का पैर धीरे से दबा दिया। चिताम्बरे के चेहरे का खिचाव कुछ कम हो गया था। कमल और नीला मुस्कुरा रहे थे। चिताम्बरे की मुद्रा कुछ कठोर हो गई। शायद दोनों की मुस्कुराहट के कारण या इसलिए कि वह नीला के आचरण से परिचित था और अविश्वास के कारण। वे दोनों अपना नाश्ता खत्म कर चुके थे, कमल अभी खा रहा था। नीला बोली, 'चाय और लेंगे ?'

'जरूर' कमल ने उत्तर दिया और वह चाय बनाने लगी। कमल टोस्ट के टुकड़े पर जैम लगाने लगा। वह टोस्ट कुतर-कुतर कर खाता रहा और चाय घूँट घूँट पीता रहा। चिताम्बरे नीला की ओर देख रहा था।

'तो चिताम्बरे साहब आप क्या करते हैं ?'

'मैं बिजनेस करता हूँ।'

'क्या बिजनेस करते हैं?'

'कई काम हैं। कई सोल डिस्ट्रीब्यूटर हैं, इम्पोर्ट एक्सपोर्ट का काम है, अभी एक नया फैक्ट्री डाल रहे हैं जिसमें इलेक्ट्रिकल गुड्स तैयार होगा। हमने भान्दुप आगरा रोड पर प्लाट ले लिया है। कंस्ट्रक्शन चल रहा है। हम अभी देहली कुछ लाइसेन्स लेने गया था।'

'तब तो आप बहुत बड़े आदमी हैं।'

'सब आप जैसा नेता लोखों का बदोलत है। हमारा महाराष्ट्र का कुछ मिनिस्टर सेंट्रल में है। एम० पी० लोख है, सेक्रेटरी लोख है। तिकड़म का जमाना है। एप्रोच होने से सब होता है।'

'इसमें ये सिद्धहस्त हैं।' नीला ने कहा।

'नीला बी बड़ा काम का लोख है। इसकी बदोलत अपना खूप काम निकलता है। मैं इसीलिए इससे मेरेज किया।'

कमल ने नीला की ओर देखा, उसके चेहरे का जो पहलू वह देख सका, उससे ऐसा लगा जैसे उसके चेहरे पर घृणा की रेखाएँ उभर आई हैं। लेकिन वह अपने पर नियंत्रण रखने में सिद्धहस्त हो गई थी। चिताम्बरे खिसियाना-सा मुस्कुराया। कमल अपना नाश्ता खत्म कर चुका था। उसने जेब से सिगरेट निकाली और पीने लगा। चिताम्बरे ने भी सिगरेट निकाला और सुलगा कर जोर का कश लिया। कमल के सिगरेट पीने के तरीके में एक शालीनता थी। तीनों मौन थे। चिताम्बरे ने मौन भंग किया,

'आप तो बड़ा काम का आदमी है, आपसे मिलकर बड़ा खुसी हुआ'

'आप भी कम समझदार आदमी नहीं है। अब समझे हैं आप कि मैं काम का आदमी हूँ और मुझ से मिलने की खुशी जाहिर की है। धन्यवाद। औपचारिकता में तो ये वाक्य मैं मुलाकात के साथ ही सुना करता था। अगर मैं काम का आदमी नहीं होता या नीलमणि यहाँ भी माध्यम नहीं होती तो शायद आपको मिलकर खुशी न होती और अपने ये उद्गार आप मिलते ही प्रकट कर देते। क्यों चिताम्बरे साहब?'

नीला खिलखिलाकर हँस दी। चिताम्बरे कुछ खिसिया गया।

'खैर छोड़िये इसे। तो दिल्ली में आप काम बना आए हैं।'

'अबी तो पूर्ण नेई, कुछ दिन बाद फिर से जाने होइंगा। इस बार आपसे ज़रूर मिलेंगा। अब तो मुकालात हो गिया। 'मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, नीलमणि को भी लाइएगा। क्यों आइएगा न ?' उसने नीला की ओर मुखातिब होकर कहा।

'ज़रूर ज़रूर' उत्तर चिताम्बरे ने दिया। नीला न जाने क्यों उदास हो गई।

कमल ने चिताम्बरे के विरोध करते करते तीनों की ओर का बिल चुकाया और तीनों उठकर अपने कम्पार्टमेंट में चले आए। चिताम्बरे ने आग्रह करके कमल को अपने पास बैठा लिया। नीला खिड़की के पास बैठी थी, बीच में चिताम्बरे।

'आप कोई बिजनेस करता है ?' चिताम्बरे का प्रश्न था।

'जी नहीं'

'तो करता क्यों नहीं। बिजनेस में बड़ा कमाई है। अमारा एक स्कीम है, उसमें अम आपको और नीलमणि को बी पार्टनर रख प्रायवेट लिमिटेड कंसर्न बना लेगा, बहुत अच्छा होगा।'

'मुझे इसमें रुचि नहीं है। मैं अपनी स्थिति से संतुष्ट हूँ, धन्यवाद।'

'जब एम० पी० नहीं होगा, तब क्या करेगा ? एम० पी० से चार गुना तनखा, बत्ता तो अम अपना मैनेजर को देता।'

'जब एम० पी० नहीं रहूँगा तब आपको मेरी पार्टनरशिप की तो शायद ज़रूरत नहीं रहे, अगर चाहें तो मैनेजर की जगह रख लीजिएगा।'

कमल ने व्यंग्यात्मक ढंग से कहा। नीला फिर खिलखिलाकर हँस दी। चिताम्बरे फिर खिसिया गया। 'आप तो बड़ा मज़ाक करता है कमलाकांत जी। बिजनेस का मुखाबले मजा नहीं। खूब पैसा ही पैसा। सब तरे का ठाटबाट, बंगला, मोटर, बड़ा बड़ा आदमी से मुलाखात, विदेश यात्रा, फारने बैंक्स में भी पैसा और बड़ा इज्जत, खूब मजा।'

उसने कमल की ओर देखकर एक आँख दबाई।

'तब भी मजा, जब सेंट्रल इंटेलिजेंस, फॉरेन एक्सचेंस रेगुलेशंस की तहत फॉरेन बैंक्स के बेलेंस को जब्त करवाती फिरे और हमें आपको घसीटती फिरे ?'

'नेंई नेंई ऐसा किऊ होगा, हमेसा थोड़े हो सकता ?'

'लेकिन हो तो सकता है। मेरा विचार इससे कुछ अलग है चिताम्बरें साहब। यों तो लालसा की सीमा ही नहीं है। एक बंगले और मोटर से संतोष न हो तो दो, फिर तीन, फिर चार। आखिर इसकी क्या सीमा है। इस मृगतृष्णा के पीछे भागते चले जाइये और लालसाओं को बढ़ाते चले जाइए। इनका कभी अंत नहीं है। और समाज को भूल जाइए। सामाजिक एकता और समानता की बात भाषण और नारों तक ही सीमित रखिए। उनके भुलावे में लोगों का गला काटिए, शोषितों का और शोषण कीजिए। आप स्वयं अपने लिए हैं, समाज के लिए थोड़े ही आपका कुछ उत्तरदायित्व है। और समाज के लिए जहाँ सेवा का प्रश्न आए, किसी अंतर्राष्ट्रीय क्लब या सोसायटी के सदस्य बन जाइए, मुख्य तो उसकी आड़ में बिजनेस रिलेशंस बढ़ाइए, लेकिन जाहिरा में अपनी आय का मुश्किल से आधा प्रतिशत देकर प्यासों को सिर्फ पानी पिलाइए, याने प्याऊ लगवाइए, मंदिर बनवाइए, घाट बनवाइए, पार्क बनवाइए, इसका खूब विज्ञापन कीजिए और परोपकार लूटिए। वह कुछ रुका और फिर उसी रौ में कहता चला गया'

'जैसे जैसे लोगों के पास पैसा बढ़ता जाता है, वैभव और प्रतिष्ठा भी बढ़ते जाते हैं और वे मानव के नाते अपनी असलियत भूलते जाते हैं और इंसानियत सिर्फ दिखावा मात्र रह जाती है और सुनिए दुनिया से चलते समय ऐसे सब लोग शायद अपना सारा वैभव छाती पर रखकर अवश्य ले जाते होंगे। यदि नहीं तो उन्हें इसका ब्रीमा अभी से करा लेना चाहिए वर्ना कहीं ऐसा न हो कि सब यहीं धरा रह जाय और इस सब के अभाव में वहाँ भी तिकड़म लगाने में अड़चन आए या पीछे छूट गए वैभव की याद से छटपटाते रहें।'

'अरे भई कमलाकांत जी, आप तो बिल्कुल फिलासफर है। आगे का किसने देखा है। इदर ही सब है, जब तक जीन्दा है, ईट, ड्रिंक एण्ड बी मैरी।' फिर कुछ रुककर चिताम्बरे बोला, 'सोसायटी का जिम्मेदार है सरकार, हम आप सब टेक्स देता। सरकार पब्लिक का वेलफेयर का काम करता। हम सोसायटी का क्या कर सकता और क्यों करने मांगता।'

'आप शायद ऐसा समझते हैं कि राज्य आपसे भिन्न कोई वस्तु है। जहाँ तक न्याय और व्यवस्था का सवाल है, वह सर्वसाधारण से भिन्न है किन्तु सरकार में हम आप ही तो हैं। यदि हम सब केवल अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के विषय में ही सोचते रहे तो लोक कल्याण या सोशियल जस्टिस के लिए हम किसे उत्तरदायी मानेंगे ? देखिए भौतिक विकास के निमित्त औद्योगीकरण के कारण समाज आज अर्थमूलक बन रहा है और उसमें धन के प्रति लिप्सा बढ़ती चली जा रही है। अपरीग्रह की भावना व्यक्ति में से समाप्त होती चली जा रही है और आचरण में शुचिता कम हो रही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि समाज में अनैतिकता बढ़ रही है। केवल स्वार्थ सिद्धि ही व्यक्ति का मूल चिंतन रह गया है और इसके लिए वह सब कुछ करने के लिए तैयार हो जाता है। दूसरे की निष्ठा, श्रम, आचार, शरीर, आत्मा और अस्मत को खरीद लेता है, छीन लेता है और तब कहता है 'सरवाइवल ऑफ़ दि फ़िटेस्ट।' यह युक्ति सत्य है लेकिन 'फ़िटेस्ट' की परिभाषा यहाँ कितनी विकृत होकर रह गई है। यही कारण है कि गरीब और भी गरीब होता जा रहा है। पिता अपनी पुत्री की अस्मत दानिश्ता बेच रहा है। पति अपनी रूपवती पत्नी को दूसरे की वासना का शिकार बनाकर अपना मतलब निकालता है। और ऐसा करते समय, ऐसे लोगों को किंचित भी आत्मग्लानि नहीं होती। और, ऐसे कामों को सहज, स्वाभाविक बतलाकर, मनुष्य आज अपने आपको इतना उदार घोषित करता है। जिस समाज का इतना नैतिक पतन हो चला हो, वह अपनी राष्ट्रीयता और अपनी संस्कृति की रक्षा कैसे कर सकता है ? और जब तक ये दोनों सुरक्षित नहीं

हैं, व्यक्ति की स्वतंत्रता कैसे सुरक्षित रह सकेगी ?' चितांबरे कुछ देर तक सोचता रहा और फिर बोला,

'प्लीज एक्सक्यूज मी इफ़ आइ स्पीक इन इंगलिश। आइ कांट एक्सप्रेस माइसेल्फ फुली इन हिन्दी'

'श्योर, इफ़ यू लाइक सो'

'आइ होप यू डोण्ट माइंड दिस'

'ऑफ़कोर्स आइ माइंड इट लिटिल, ये अंग्रेज़ी का इतना अधिक हम लोगों में घुस जाना हमारी मानसिक गुलामी को ही प्रकट करता है। मैं तो इस असूल का कायल हूँ कि अंग्रेजी केवल वहीं बोली जाय जहाँ उसके बगैर काम चलता ही न हो। और कम से कम भारत में तो यह भाषा ज़रूरी नहीं।'

इस बार चिताम्बरे अंग्रेज़ी में ही बोला, आप जिस आदर्श की बात करते हैं, वह है कहाँ ? मैंने स्वयं देखा और अनुभव किया है। जो लोग समाज के नेतृत्व का दावा करते हैं, लोगों को आदर्श का सबक सिखाते हैं और उन्हें कर्तव्यपरायणता और मेहनत का पाठ पढ़ाते हैं, उनमें से अधिकांश लोग स्वयं अकर्मण्य बने समाज पर परजीवी की तरह रहते हैं। ऐसे ही आदर्शवादी कहलाने वाले कई लोग जो भ्रष्टाचार, मुनाफ़ाखोरी और अनेक समाज विरोधी बातों की आलोचना करते हैं, समाज के सामने आदर्श की बातें करते हैं। जब स्वयं ड्योढ़ा और दुगुना मुनाफा अपने कारोबार में ले लेते हैं तो उसे धंधे का सिद्धांत बतलाने लगते हैं। आप क्या ऐसे व्यवहार को उचित समझते हैं, कमलाकांत जी ? तो मेरा तात्पर्य यह है कि ऐसे व्यक्तियों को जो वर्तमान समाज व्यवस्था, शासन अथवा उसकी नीतियों की आलोचना करते हैं, केवल इसलिए कुछ विश्वास और नेतृत्व मिल जाता है कि समाज का एक बहुत बड़ा भाग, करों के बोझ, मंहगाई अथवा अन्य कठिनाइयों से पीड़ित रहता है। तो ऐसे व्यक्तियों से आप क्या यह आशा करते हैं कि वे अधिकार प्राप्त करके सार्वजनिक जीवन में समाज का कुछ हित कर सकेंगे, जो स्वयं अपने जीवन में न तो

कर्तव्यपरायण हैं, न अनुशासित हैं, न उत्तरदायी ही हैं। वर्तमान समाज और राज्य व्यवस्था के विरोध में अथवा किसी ऐसे सामाजिक संगठन या राजनैतिक दल के प्रति ऐसे व्यक्तियों की निष्ठा जो दोनों ही संस्थाओं का विरोध करती हो, क्या उनकी आदर्शवादिता और समाज की ठेकेदारी के औचित्य को मानने के लिए पर्याप्त है? मैं तो यह समझता हूँ कि प्रजातंत्र के साथ व्यक्ति स्वातंत्र्य आने से देश में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बढ़ती चली जा रही है जो नेतागिरी के चक्कर में अपनी कर्मण्यता और उत्तरदायित्व की भावना को खो चुके हैं या खोते चले जा रहे हैं और उनमें अधिकार और अहंकार का भाव बढ़ गया है। राजनैतिक या सामाजिक जीवन में अपनी प्रतिष्ठा को टिकाए रखने के लिए केवल एक ही आधार शायद उनके पास रह जाता है कि वे कम से कम किसी संस्था या विचार दिशा के साथ आँख बन्द करके चिपके रहें और समाज और राज्य पर परजीवी की तरह जीते रहें। आप खुद सोचिए, ऐसे व्यक्तियों से समाज का क्या भला होता है?'

कमल चिताम्बरे की उपरोक्त बात सुन, कुछ देर मौन रह, उस पर मनन करता रहा। फिर कहने लगा,

'मैं आपसे सहमत हूँ चिताम्बरे जी। देश की वर्तमान दशा में राजनैतिक प्रभुत्व कुछ प्रमुख हो गया लगता है और सत्ताधारी दल के साथ लगे रहने से राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक हितों का साधन सहज ही हो जाता है। लेकिन जो कुछ आप से कहा है, वह तो सारे समाज की बात है, किसी एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का प्रश्न नहीं है। जिस नैतिकताविहीन समाज की मैंने चर्चा की है, उससे तथाकथित आदर्शवादी नेताओं या परजीवियों को अलग नहीं छोड़ा है। हाँ इनका उल्लेख मैंने अलग से इंगित कर नहीं किया। इसलिए समाज को बदले बिना देश का हित होने वाला नहीं है। समाज को बदलने के लिए एक-एक व्यक्ति को बदलना पड़ेगा और यह सम्भव होगा उचित शिक्षा के माध्यम से। शिक्षा को मैं स्कूली, कालेज शिक्षा, डिग्री प्राप्ति या किताबी ज्ञान तक ही सीमित नहीं समझता। शिक्षा के अन्य माध्यम,

लेकिन केवल कानून और दंड के आधार पर समाज सुधार का दावा नहीं किया जा सकता। सारे विश्व में कानून और दंड व्यवस्था चिर-काल से प्रयोग में लाये जा रहे हैं। कठोरतम दंडों के बावजूद भी अपराध कहीं भी कभी भी समूल नष्ट नहीं हुए। आपने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा, अमेरिका जैसे देश में अपराधों की संख्या इन दिनों में अधिक बढ़ रही है। जहाँ सम्पन्नता और शिक्षा अधिक है, समाज सुसभ्य और प्रगतिशील माना जाता है। और यह सब बावजूद इसके है कि वहाँ दण्ड विधान कठोर है। इसी प्रकार रूस को लीजिए, वहाँ भी कठोरतम दण्ड के बावजूद अपराध वृत्ति समाप्त नहीं हुई है। प्रायः न्यूनाधिक यही दशा अनेक पाश्चात्य देशों की है। जहाँ प्रति व्यक्ति आय विश्व में सबसे अधिक हो, वहाँ बैंकों में सनसनीखेज डकैति होने का क्या मतलब ? इसी प्रकार जहाँ यौन सम्बन्धों को विपरीत समय में एक आयु में सहज और स्वाभाविक माना जाता हो, और जहाँ समाज में बिना जाति, धन, आर्थिक और सामाजिक मर्यादाओं और बन्धनों के इन सम्बन्धों को रुचि अनुसार बना लेने पर बुरा समझने की परम्परा न हो, वहाँ बलात्कार की घटनाएँ होना युक्ति-युक्त नहीं प्रतीत होता।'

चिताम्बरे कुछ सोच में पड़ गया। 'लेकिन फिर भी आपका आदर्श-वाद मुझे तो कुछ यथार्थ नहीं जँचता। आखिर आप इस पिछड़े हुए समाज को कैसे सुधारना चाहते हैं' उसने कहा।

'यह एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद विषय है, कभी फुर्सत के समय इस पर चर्चा की जा सकती है। यह स्थान भी ऐसी चर्चा के लिए उपयुक्त नहीं है, फिर भी मैं संक्षेप में आपकी शंका के समाधान का प्रयत्न करूँगा।' कमल कुछ रुका।

उसकी सिगरेट पीने की तीव्र इच्छा हुई। उसने नीला की ओर देखा तो वह बात सुनने के लिए उत्सुक जान पड़ी। कमल कुछ सतर्क सा बैठ कहने लगा, 'सुनिए मिस्टर चिताम्बरे, उचित शिक्षा, धर्माचरण और समाज की मर्यादाओं का अनुशासन से पालन करने की परिपाटी की स्थापना समाज के जीवन तथा आचरण को सुधारने तथा अनैतिकता

को समाप्त करने के लिए आवश्यक माध्यम हो सकता है। इन सारी प्रवृत्तियों के पीछे व्यक्ति की मनोदशा मुख्य होती है और शरीर तथा मन से बलवान मनुष्य ही, अपने को अनेकों प्रलोभनों से बचा सकता है।

'ठीक और स्वच्छ मनोदशा में ही व्यक्ति धन उपार्जन, संग्रह और वितरण की सही दिशा को सोच सकता है, और अपनी लालसाओं और लिप्साओं पर नियन्त्रण रख सकता है, इस समाज में अनैतिकता, अपराध तथा शोषण की संभावना कम से कम रह सकेगी। मानव मात्र को ऐसा बनाने के लिए और समाज की शिक्षा और आचरण पर कुछ मर्यादाओं के बंधनों को उत्तरदायी माना जायगा जिन्हें आप धर्माचरण कह सकते हैं। लिहाज़ा धर्मविहीन समाज से आप कभी भी नैतिकता की आशा नहीं कर सकते। दुर्भाग्य से हमारे धर्मनिर्पेक्ष राज्य में हमारी धार्मिक मान्यताओं का आधार विशृंखल हो गया है। हालाँकि भारत में ब्रिटिश शासन भी धर्मनिर्पेक्षता के ही आधार पर चलता था लेकिन उनने इसकी विधिवत घोषणा नहीं की थी। परिणामस्वरूप चाहते हुए भी कुछ व्यक्ति सामाजिक मर्यादाओं को नहीं तोड़ सके थे। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद, विदेशी पूँजी के आने से, और खासकर अमेरिकन धन के साथ जब वहाँ की संस्कृति भी आई तो हमने उनका पहनावा, चाल-ढाल और रहन सहन को अपनाना शुरू किया, वहाँ दूसरी ओर समाजवादी समाज व्यवस्था के नारे से, सामाजिक मर्यादाओं का धार्मिक आधार लोप होने लगा। यह हमारी सदियों पुरानी मानसिक दासता का प्रतीक है। हमारी मानसिक दशा की कमज़ोरी इससे प्रकट होती है कि हम बिना सोचे समझे, बिना समुचित ज्ञान रखे बहुत ही मामूली आधार को लेकर किसी के पीछे भागने में कितनी उजलत करते हैं। इस मनोदशा के लिए उत्तरदायी है हमारे देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली। हमारे शिक्षित-युवकों में आत्मनिर्भरता, परिश्रम करने की क्षमता और निराश्रयता कितने प्रतिशत बढ़ी है ? अब तो इस देश के मालिक हम हैं, बतलाइये तो कि देश में कितने शिक्षित व्यक्तियों में

नागरिकता के कर्तव्यों के प्रति दायित्व और उत्कट राष्ट्रीय भावना आ सकी है ? हम आज पाश्चात्य सभ्यता की बात करते हैं और आचरण में उसी का अनुसरण करने में अपने को प्रगतिशील मानने का गौरव अनुभव करते हैं। लेकिन उनकी सभ्यता के किस पहलू का ? अनुशासनप्रियता, नागरिक कर्त्तव्यों का ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना पाश्चात्य समाज में खूब है। काश इसी का अनुसरण ही हम कर सकते। हम तो उनकी पोषाकों, नाच गानों, बोलचाल के तरीकों, कुछ देशज स्थितियों के प्रतिकूल सामाजिक मर्यादाओं के अनुकरण करने में ही जुटे हैं। हर समाज में गुण और दोष दोनों ही पाए जाते हैं लेकिन हम क्या ग्रहण करते हैं, ये समझने की बात है। परिणामस्वरूप जो रूप समाज का आज भारत में दिखलाई पड़ रहा है, वह गौरव करने जैसा तो नहीं है, यह तो आप मानेंगे न। हमारी दशा तो आज कुछ ऐसी ही हो रही कि 'न खुदा ही मिला न विसाले सनम, न इधर के रहे न उधर के रहे।' क्यों चिताम्बरे साहब।'

नीला खिलखिलाकर हँस पड़ी। चिताम्बरे गम्भीर हो गया।

'कमलाकान्त जी, आपकी बात ठीक तो मालूम होती है। मगर मेरे गले कुछ उतरती नहीं, फिर भी मेरे पास आपकी युक्तियों का उत्तर नहीं है। यू आर क्वाइट क्लेवर एण्ड इम्प्रेसिव इन एक्सप्रेशन, नो डाउट।'

'मैं आपको अपनी बात मानने के लिए विवश नहीं करता हूँ। आप इस पर विचार तो कर ही सकते हैं।'

'आप बम्बई जा रहे हैं ?' चिताम्बरे ने प्रसंग बदलते हुए प्रश्न किया।

'जी'

'किस सिलसिले में, कब तक ठहरेंगा ?'

'साहित्यकारों की एक गोष्ठी में जा रहा हूँ। तीन दिन ठहरने का विचार है।'

'किदर ठहरेंगा।'

मेरे कुछ परिचित बम्बई में हैं लेकिन ठहरता अक्सर मैं होटल में ही हूँ। वैसे मैंने अपने पहुँचने की सूचना एक परिचित को दे दी है।'

'हमारे साथ ठहरने में कोई वांदा है क्या, क्यों नीला तुम क्या केता है।'

'मुझे तो बहुत ही प्रसन्नता होगी, इतने वर्षों बाद एक पुराने मित्र मिले हैं।' नीला ने बड़ी उत्सुकता से, अपनी सीट पर कुछ आगे झुककर कमल की ओर याचना भरी निगाहों से निहारते हुए कहा।

'बम्बई तो पहुँचने दीजिये, निश्चय कर लेंगे। वैसे मुझे तो कोई आपत्ति हो नहीं सकती। हाँ, आपको कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए। अच्छा अब दोनों सज्जन मुझे आज्ञा दीजिये, कुछ आराम करना चाहता हूँ। आपका बहुत समय लिया, क्षमा कीजियेगा।'

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही कमल उठकर अपनी सीट पर चला आया। जब वह बैठने के लिए मुड़ा तो उसकी निगाह बरबस ही नीला की ओर उठ गई। उसने देखा नीला गरदन मोड़े याचना भरी उदास आँखों से उसकी ओर देख रही है। उसका चेहरा सफेद था, ओठों पर लिपस्टिक करीने से लगा हुआ था, बाल बिखर कर कपाल और कपोलों पर आ गए थे। वह भोली और सुन्दर लग रही थी। जब भी कमल किसी स्त्री की ओर देखता था और उसकी रूप रेखा उसे ठीक लगती थी, उसे न जाने क्यों अपनी पत्नी याद आ जाती थी। और जब वह दोनों चेहरों को बराबर पर खड़ा कर लेता था तो उसे विश्वास हो जाता था कि उसकी लावण्यमयी पत्नी के सौंदर्य के सामने दूसरा चेहरा बहुत फीका पड़ गया है। पत्नी की याद में उसका मन फिर से रम गया। काश वह आज साथ होती, सारी घटना का पर्यवेक्षण करती और अपना निर्णय भी कमल को चुपचाप दे देती, वह कितनी उदार है। खड़क-खड़क, खड़क-खट, गाड़ी चली जा रही थी।

कमल ने खिड़की के बाहर देखा। गुजरात की शस्य श्यामला पर सोना फैला पड़ा था। अधिकांश खेतों में कपास के डंटल खड़े थे।

कुछ में कपास की आखिरी तुड़ाई के लिए सफेद रूई के गोले मोतियों के समान चमक रहे थे। बीच बीच में केलों के खेत अपनी अलग छटा बिखरा रहे थे। किन्हीं किन्हीं खेतों में गेहूँ और चने की पिछाती फसल अपनी मनोरम हरियाली से दृश्य को बहुरंगी और चित्र विचित्र बना रही थी। शरद ऋतु की स्वच्छ धुली हुई सुनहरी धूप में सारा भूखण्ड चमक रहा था।

कमल फिर ख्यालों में खो गया। वह उस आरोप की सार्थकता के विषय में सोचने लगा जो नीला ने उस पर लगाया था। क्या वास्तव में नीला की इस दशा के लिए वह उत्तरदायी था? इसका निर्णय कैसे हो, कौन करे? अपने दोष को देखने और स्वीकार करने की क्षमता किस किसमें है? लेकिन कोई यदि अपनी गलती स्वीकार भी करता है तो केवल मन में। उसे जाहिर करने की हिम्मत शायद ही किसी में हो—कमल ने सोचा कि वह सारी घटनाओं का पुनरावलोकन करे और निष्पक्ष होकर कम से कम यह तो निर्णय करे कि वास्तव में उसका कितना दोष था और अब तो वह अपने दोष को स्वीकार करने जैसा मन कुछ कुछ बना ही चुका था और अगर वह दोषी है तो नीला से अवश्य ही क्षमा मांग लेगा। फिर वह सोचने लगा कि क्या केवल क्षमा मांग लेने से ही इतनी बड़ी भूल का प्रायश्चित हो जाएगा? नहीं, अब उसे नीला को फिर अपनाना पड़ेगा और इस बार स्नेहमयी बहिन के रूप में। ऐसी दशा में उसकी पत्नी के विचारों का सवाल था। कमल बहुत पहले ही अपने तथा नीला के सम्बन्धों के विषय में उसे बता चुका था। कमल के नाम नीला के सारे पत्र वह उसे दे चुका था। फिर भी अब नीला के उसके घर में प्रवेश की क्या प्रतिक्रिया उसकी पत्नी पर होगी? सारी घटनाएँ कमल ने सत्य ही स्वीकार की थी और यह भी बतलाया था कि इतनी घनिष्ठता और निकटता के बाद भी उसने नीला से यौन सम्बन्ध नहीं बनाया था। इस पर उसकी पत्नी कुछ अविश्वासपूर्ण भंगिमा में मुस्कुरा दी थी,—'अच्छा?'

'क्यों विश्वास नहीं होता?'

'पुरुषों पर ?'

'ग्राप पर ?' कुछ सोचकर उसने कहा था, 'ग्रापकी बात ग्रब तक तो ग्रौर है, ग्रागे ईश्वर जाने ग्रौर उसने सर झुका लिया था। यह बात विवाह के कुछ समय बाद की ही है। ग्रब तो विवाहित जीवन के कई वर्ष निकल गए हैं। क्या ग्रब तक भी उसके मन के किसी कोने में ग्रविश्वास का सूक्ष्मतम ग्रंश छुपा पड़ा होगा ? कमल ने विचार किया। स्त्री को यह किंचित सा भी ग्राभास हो जाय कि उसके पति के मन में, केवल पल मात्र के लिए भी किसी ग्रन्य स्त्री का ध्यान ग्राया है तो वह उसे विचलित करने के लिए पर्याप्त है, ग्रौर वह ग्रपने ग्रधिकार का सूक्ष्मातिसूक्ष्म ग्रतिक्रमण भी शायद स्वीकार न करे। पुरुष का वह भाग जिसमें स्त्री की सारी ग्रास्था, सारा प्रेम, सारा स्नेह, सारी क्षमता ग्रौर सारी वासना केन्द्रित हो, वह ज़रा भी बाँटने के लिए तैयार नहीं होगी, खासकर एक स्त्री के साथ। सौत तो मिट्टी की भी ग्रच्छी नहीं होती। तो क्या उसकी पत्नी इतनी जानकारी ग्रौर विश्वास के बाद भी नीला में ग्रपनी सौत की ही कल्पना करेगी। कमल ने नीला में बहिन के भाव को ग्रारोपित कर दिया है ग्रौर उसका ग्राधार उसने नीला से यौन सम्बन्धों का न होना माना है। लेकिन जितनी शारीरिक निकटता उसकी नीला से रही है, क्या उसके साथ वासना का उद्रेक नहीं था ? कभी उसने नीला को ग्रपनी पत्नी बनाने का भी निश्चय किया था। जिसमें बहिन का भाव मात्र ही ग्रारोपित हो, उसके साथ ऐसी ग्रौर इतनी शारीरिक निकटता तथा वासना का विचार तो कल्पना से दूर की वस्तु है। कमल ने ग्रपनी पत्नी से इस निकटता की बात छुपाई नहीं थी। ग्राज कमल नीला में बहिन को देखता है, तो क्या यह ग्रावश्यक है कि उसकी पत्नी भी उसमें ननद का भाव बना सके ? नीला, कमल की पत्नी से, कुछ तो उसका ग्रधिकार छिनाएगी ही। वह भाव पवित्र ही क्यों न हो स्नेहमय ग्रौर ममतामय भी क्यों न हो लेकिन पत्नी के एकाधिकार का कुछ तो ग्रतिक्रमण होगा ही ग्रौर जीवन की समरता में यह एक व्याघात तो हो ही सकता है। चाहे कारण

कितना ही सूक्ष्म क्यों न हो। जितना वह अब तक अपनी पत्नी को समझ सका था उसे तो विश्वास था कि वह नवीन परिस्थितियों में गम्भीर ही बनी रहेगी। उसमें वेदना को पी जाने की विशेषता थी, अतीव दुखद घड़ियों में भी वह अपने आँसुओं को नैनों की कोर तक ही आने देती थी और वापस पी जाती थी। और वे आंसू उसके अंतर में जलन बनाए रखते थे जिसकी शिकायत कभी उसकी वाणी में नहीं होती थी। लेकिन वह वेदना मुख की रेखाओं में तो साकार हो ही जाती थी। यदि नीला के प्रति अपने प्रायश्चित को पूरा करने के विचार से वह उसे अपने परिवार में स्थान दे, तो सारी परिस्थिति में जो परिवर्तन होगा और उसकी पत्नी की सूक्ष्म अनुभूतियों में जो तूफान आएगा, उसमें नीला अपना भाग कैसे निभाएगी इस पर भी तो बहुत कुछ आधारित होगा।

आज नीला अपने इस जीवन से निराश हो चुकी है। वह अपने हृदय में वेदना को संजोए हुए है और पश्चात्ताप से दग्ध है। क्या नई परिस्थिति में वह अपने उत्तरदायित्व को समझ सकेगी? कमल के सुखी और प्रेममय पारिवारिक जीवन की उसके मन में क्या प्रतिक्रिया होगी? कहीं ईर्ष्या तो उसके हृदय में नहीं पनप उठेगी? कमल को विश्वास है कि उसकी पत्नी नीला के प्रति अपनी सारी सहानुभूति को स्नेह और ममता के रूप में बिखेर सकेगी। किन्तु इस सुखद वातावरण का नीला की घुली हुई निर्मल मनःस्थिति पर स्वास्थ्यकारी प्रभाव पड़ेगा और स्वस्थ होने पर उसकी वासना फिर भी तो उभर सकती है। कमल पर वह भी तो अपना अधिकार समझती है और उसका यह अधिकार एक स्त्री के नाते पहला है, इसका गर्व भी तो उसे हो सकता है। कमल के सानिध्य से उसकी इस अधिकार भावना को और भी बल मिल सकेगा। और उसे जो स्नेह कमल से मिलेगा वह धीरे-धीरे उसके हृदय में प्रेम को अंकुरित कर सकता है, जो कालांतर में, उसमें फिर से कमल को प्राप्त कर लेने वाली वासना को भी तो जगा सकता है। उसका वासनामय, प्रपंचमय, उच्छृंखल विगत जीवन, परिवार में

प्रपंच और संघर्ष और साथ ही कलह को भी सम्भव बना सकेगा शायद। अपने प्रति कमल की पत्नी के सहानुभूति और स्नेहमय व्यवहार को वह उसकी कमज़ोरी भी तो समझ सकती है और कमल की अपनी पत्नी में आसक्ति को, वह उसकी, अपने प्रति उपेक्षा भी तो मान सकती है। ऐसी मनोदशाओं के संघर्ष में कमल का जीवन क्या बन जाएगा ? एक त्रिकोण, जिसकी भुजाओं की लम्बाई कभी भी एक नहीं होगी। तीनों कोणों का नाप मिलकर एक समरेखा अवश्य बनाएगा किन्तु तीनों कोणों का अपने-अपने स्थानों पर नाप भिन्न रहेगा। काश यह सीधी रेखा बन जाय और बनी रहे या त्रिकोण के तीनों कोण ही समकोण बन जायं।

तो नीला जो उसके इतने निकट थी, उससे इतनी दूर कैसे हो गई ? बीस वर्ष दूर रहकर कल तक भी तो दूर थी किन्तु नियति ने उन्हें अचानक और ऐसे मिला दिया। क्यों ? यह अभी भी एक प्रश्न है और आगे भी बना रहेगा और शायद सारे जीवन ही बना रहे। विगत सारी घटनाएँ किसी उपन्यास के पृष्ठों के समान एक-एक कर उसके सामने खुलने लगीं : कमल जब घर से वापस लखनऊ आया तो सीधा नीला के घर गया। मौसी ने बड़ी सहृदयता से उसे अपनाया लेकिन वे कमल को अपेक्षाकृत कुछ चिंतित नजर आईं। नीला घर पर नहीं थी और न वह उसे मिल ही सकी। काफी प्रतीक्षा के बाद वह अपने क्वार्टर पर चला आया। वह आशा करता था कि नीला स्वयं उसके पास आयगी मगर वह नहीं आई। कमल का स्वाभिमान और आक्रोश दोनों ही जाग गए। रात भर उसे नींद नहीं आई। हर समय नीला का ही ख्याल उसे घेरे रहा। नीम के फूलों की मादक मंद सुगंध से, सड़क के बिजली के खम्भे के छन कर आते प्रकाश से, सुराही से गिलास में ढलते पानी की आवाज़ से, गिलास के होठों से लगने से, इन सभी से और अन्य अनेक बातों से, नीला की याद तीव्र हो उठती थी और कमल के मन में सूनापन छा जाता था। काश नीला उसकी वेदना को समझ सकती। उस दिन के बाद कमल नीला के घर नहीं गया, न वह उसे मिली और

उसकी रातें अब आँखों में ही कट जातीं। उनके परिचय की यह दूसरी ग्रीष्म थी। कमल सोच नहीं पाता था कि आखिर नीला को क्या हो गया है। चौथे दिन गमगीन गर्मी की शाम को कमल चुपचाप अपने पलंग पर छत की ओर ताकता लेटा हुआ था। कमरे में अंधेरा हो चुका था। उसका नौकर जब बत्ती जलाने आया तो कमल ने उसे मना कर दिया। छत पर जो आकृतियाँ कमल अपनी कल्पना में देखता था, वे नीला के ही अनेक रूप होते थे और तभी एक झोंके के साथ महिलाओं में से आम तौर पर आने वाली सौंदर्य प्रसाधनों की गंध कमल के चारों ओर बस गई, उसने अपनी दृष्टि को छत से उतारा और उसके सामने नीला साकार खड़ी थी।

"कमल......" कुछ और कहते-कहते नीला रुक गई। क्योंकि तभी कमरे में प्रकाश हो गया था और कमल उसके चेहरे में घूर रहा था।

'कमल तुम, कैसे हो ?'

'तो तुम आ गई नीला ?'

कुछ देर तक दोनों मौन रहे और नीला उसके पास आकर बैठ गई। कमल उठना चाह कर भी लेटा रहा। उसकी दाढ़ी कुछ बढ़ी हुई थी, बाल रूखे थे और चेहरा उदास था। वह पहली दृष्टि में बीमार सा लगता था। कमल उठ बैठा।

'लेटे रहो कमल। तुम बीमार हो ? क्या हुआ है तुम्हें ?' नीला के चेहरे पर कुछ चिंता और ममता का ऐसा भाव था कि कमल का सारा क्रोध एक बारगी ही धुल गया।

'पता नहीं, मेरा मन बीमार है।' नीला अज्ञानता की मुद्रा में उसे निहारती रही।

'कमल मुझे क्षमा नहीं करोगे ?'

'सिवाय इसके और कर भी क्या सकता हूँ नीला।' उसने कुछ ऐसे ढंग से कहा कि नीला द्रवित हो गई, उसकी आँखें छलछला आईं। कमल उठ बैठा और रसोई में चला गया। वहाँ उसने नौकर से दो गिलास

शिकंजी बनाने को कहा और गुसलखाने में चला गया। उसने जल्दी से हजामत बनाई और नहाया और चिकन का कुर्त्ता तथा पायजामा पहन कर वापस अपने कमरे में लौट आया, वह दोनों शिकंजी के गिलास भी लेता आया।

नीला उसके पलंग पर चित्त लेटी हुई थी। उसकी आँखें बंद थीं। पंखे की हवा में उसके बाल उड़कर मुख पर आ रहे थे और टेबुल लैंप के शेड में से छन कर आते प्रकाश में नीला का सौंदर्य मुखर हो उठा था। जैसे मत्स्य कन्या सागर की लहरों पर बहती चली जा रही हो। कमल ने धीरे से दोनों गिलास मेज़ पर रख दिए और बिना आहट किए पास की आराम कुर्सी पर बैठ गया। वह अपलक नीला को देखता रहा। नीला का वह रूप कमल के हृदय में समाता जा रहा था। तभी किसी ने उसे बाहर से पुकारा। कमल उठा और तभी नीला भी उठ बैठी। कमल बाहर चला गया। पुकारने वाला नीला का नौकर था।

''माताजी ने बीबीजी को तलाश करने भेजा है''

'उनसे कह देना बीबीजी यहीं हैं और खाना खाकर आएँगी, समझे'

'जी' नौकर लौट गया और कमल अन्दर लौट आया। नीला बैठी शिकंजी पी रही थी।

'क्षमा करना कमल, मैं सो गई थी,। आज मेरा मन कितना हल्का हो गया है।'

'तुम्हारा नौकर तुम्हें ढूँढने आया था' वह भी शिकंजी पीने लगा। एक साया-सा नीला के चेहरे पर से गुजर गया और जो मुद्रा कमल के सामने थी उस पर अपराध और भय के सूक्ष्म से चिन्ह थे। कमल इस मुद्रा के अर्थ समझ नहीं सका क्योंकि वह नीला को निकट पाकर इतना खुश था कि उसने ऐसी किसी भी बात पर सोचना उस समय उचित नहीं समझा। वह पूर्ववत नीला की ओर देखता रहा। वह बहुत आहिस्ते आहिस्ते नीला के बालों और उसके चेहरे की ओर देखता हुआ नीचे की ओर देखता चला जा रहा था। उसकी निगाह नीला की सम श्वासों से गिरती उठती छाती पर टिक गई। उसके मन में कोई विकार उत्पन्न

नहीं हुआ, उसे इसका ध्यान तो अवश्य आया और वह मुस्कुरा दिया।

'नीला' वह आगे कुछ न बोल सका। एक खुशी ने, एक उमंग ने उसके शब्दों का स्वर छीन लिया था। नीला अपने पैरों की ओर देख रही थी। दोनों मौन थे और संतुष्ट थे और प्रसन्न थे। कमल उठा और रसोई में से एक परसी थाली उठा लाया। और नौकर दो गिलास और बरफ मिले पानी का एक जग रख गया। दुबारा प्लेटों में अचार, सलाद मीठा रख गया। नीला और कमल एक थाली में खाने लगे। नीला ने एक निवाला कमल के मुँह की ओर बढ़ा दिया। मुख में लेते समय नीला की उंगलियाँ कमल के ओठों को छू गई। नीला का मुख आरक्त हो गया और कमल का सारा शरीर रोमांचित। नीला के मन का कपट और आक्रोश दोनों धुल गए और दोनों फिर प्रेम की स्वप्निल दुनिया में खो गए। कमल खा चुका था और उसके हाथ खींचते ही नीला निवाले देने लगी।

'बस नीला'

'अभी से साथ छोड़ गए ?'

'अपराध तुम करो और खामयाजा मुझे उठाना पड़े, वाह।' नौकर ने रसोई से आवाज दी—'और क्या लायें भैया ?'

'बस दादा चार ठौ गिलौरी मघई के ले आओ।'

दोनों हाथ धोकर आए। कमल आराम कुर्सी पर बैठ गया और नीला आई तो उसी कुर्सी के हत्थे पर बैठ गई। उसका शरीर जैसे ही नीला से छुआ कि झनझना उठा। उसने उठकर नीला को अपनी बाहों में भर लिया। उसने नीला की आँखों में देखा, वासना के गुलाबी डोरे तैर रहे थे। उसके होंठ चुम्बन के लिए व्यग्र मालूम दे रहे थे। कमल ने एक बार कसकर उसे सीने से लगाया और दोनों बाहों में थामकर पलंग पर बैठा दिया। दो क्षण उसके कंधे पर हाथ रखे उसकी आँखों में देखता रहा और फिर अपने स्थान पर बैठ गया। उसने सिगरेट सुलगा ली। नीला निढाल होकर पलंग पर लेट गई। दोनों मौन बैठे थे। कमल सोच रहा था, नीला उसके कितने निकट है फिर वह क्या

बात है जो नीला को उसके लिए अप्राप्य बनाए हुए है। कमल, इस बीच की लक्ष्मण रेखा से संतुष्ट था, प्रसन्न था। और नीला ? वह शायद भविष्य की सुखद कल्पना में इस स्थिति से संतुष्ट होने के लिए मन को कैसे तैयार कर लेती होगी। नौकर पान ले आया था। दोनों ने पान खाए।

'अब तुम्हें घर छोड़ आऊँ, मौसी प्रतीक्षा कर रही होंगी'

'चलिए'

दोनों पैदल ही चल दिए। नीला का घर ज़्यादा दूर नहीं था। दोनों ही मौन चले जा रहे थे। नीला अपने अपराधी मन के कारण और कमल नीला को पुनः पा जाने की खुशी में खोया हुआ। मौसी बरामदे में बैठी प्रतीक्षा कर रही थीं। रात ज़्यादा नहीं हुई थी। गरमी में नौ तो जल्दी ही बज जाते हैं।

'आओ बेटा कमल, तुम तो उस दिन के बाद आए ही नहीं। मैं नीला की अनुपस्थिति से चिन्तित हो जाती हूँ। जब से तुम घर से लौटे हो, मेरी चिंता कुछ बढ़ गई है। तुम्हारे संरक्षण में नीला का कोई अनिष्ट नहीं देखती। नौकर तो मैंने इसलिए भेजा था कि नीला की माँ का तार शाम को आया है कि मैं उसे अल्मोड़ा भेज दूं या खुद ले आऊँ—अरे तुम अब तक खड़े ही हो, बैठो न बेटा।' नीला के मुख का रंग उड़ गया। वह उदास मन अन्दर चली गई।

'मेरे पास कुर्सी खींच लो।' फिर कुछ रुककर आवाज़ दबाकर मौसी धीरे से बोली, 'इस बार तुमने घर पर अपने माता पिता से बात अवश्य चलाई होगी। उनका क्या मत रहा ?'

'किस विषय में मौसी जी ?' आशय को समझते हुए भी कमल ने ऐसे कहा जैसे वह सारा पाठ ही भूल गया हो।

अरे भइ तुम भी अजीब हो, अरे यही नीला और तुम्हारे विषय में।'

'मौसी जी मेरी हिम्मत तो पिताजी से बात करने की हुई नहीं, माताजी के सामने संकोच होता है।'

'मेरी इच्छा थी कि कुछ विचार हो ही जाता, नीला की माँ भी यही चाहती हैं।'

'मेरी माताजी अवश्य कह रही थीं कि मैं अब विवाह कर लूँ किन्तु पिताजी की इच्छा है कि मैं बी० ए० कर लूँ तब मेरा विवाह हो। नीला के लिए अपना विचार दबी ज़बान से मैंने माताजी को बतलाया था लेकिन मौसी जी, एक बात है कि मैं नीला को अब तक नहीं समझ पाया हूँ जो नीला अब तक मेरे निकट रही है और जिसमें मैं अपनी पत्नी को देखने का प्रयत्न करता हूँ, वह सहसा मेरे प्रति इतनी उदासीन क्यों हो गई। आज चार दिन में साक्षात्कार हुआ है।

मौसी सहसा ही गम्भीर हो गई और उनकी यह मुद्रा कमल को कुछ खटकी। उसने एकदम बात बदल ली।

'हम लोग कमल अल्मोड़ा जा रहे हैं। छुट्टियाँ हैं ही, मैंने सोचा मैं भी कुछ दिन बहिन के पास रह आऊँगी।' कमल गुमसुम बैठा रहा।

'अच्छा तो अब आज्ञा दीजिये चलूँ, नमस्ते' उसने सहसा ही कहा।

'अच्छा जाओगे? खुश रहो बेटा' और मौसी उठ कर अन्दर चली गई।

कमल ने सिगरेट जलाई और विचारमग्न धीरे धीरे बरामदे की सीढ़ियाँ उतरता हुआ बंगले के फाटक की ओर बढ़ गया। रातरानी की भीनी महक की तरंगों से वातावरण मादक बना हुआ था। कमल के लिए आज उस सुगंध में मस्ती नहीं थी, वरन उदासी थी। तभी उसके कंधे पर कोमल सा स्पर्श हुआ। वह अचकचा कर मुड़ा, नीला खड़ी थी।

'कमल तुम मिले और फिर बिछुड़े' उसने बहुत धीरे से कहा।

'नहीं तो, नीला तुम कौन सदा वहीं रहोगी। मैं भी तो अल्मोड़ा आ ही सकता हूँ। फिर हम दोनों मन से तो एक दूसरे के निकट हैं। सदा ही निकट हैं।'

'मैं तुमसे बिछुड़ने की सोच ही नहीं सकती।'

कमल मौन रहा पिछले चार दिन उसके मन पर बोझ बने हुए थे

फिर नीला का सहसा अल्मोड़ा जाना और मौसी की उखड़ी उखड़ी बातचीत कुछ तो अर्थ रखते ही हैं। कमल सहसा रोष से भर उठा।

'तुम इन चार दिनों कहाँ थीं ? मैं तो लौटते ही तुम्हारे घर पर आया था, मौसी से मिला था। मैं मान नहीं सकता कि मेरे लौट आने की सूचना तुम्हें न मिली हो। तब कमल से बिछुड़ने की वेदना तुममें अब सहसा कैसे उभर आई ?' नीला अवाक् और मौन कमल की ओर पथराई सी निगाहों से देखती खड़ी रही।

बोलो न नीला।' नीला फिर भी मौन रही। उसका बांया हाथ कमल के कन्धे पर अटका हुआ था, वह धीरे से फिसल कर नीचे लटक गया।

'ठीक है नीला, तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं या कोई बात है जिसे तुम मुझ से छुपाना चाहती हो। तो अब जा रहा हूँ नीला, इस रहस्य का पता लगाऊँगा और यदि मैं तुम्हारे सुखमय भविष्य में व्याघात हुआ तो तुम्हारे मार्ग से हट जाऊँगा। वह एकदम मुड़ा और चल दिया। सड़क पर मुड़ते हुए कमल ने देखा, बरामदे से छनकर आते हुए धूमिल प्रकाश में, नीला यथास्थान पाषाण प्रतिमा की तरह निश्चल खड़ी है और रातरानी की गंध की लहर कमल के आसपास बिखरती निकल गई। वह आवेश में भरा तेज़ तेज़ कदमों से बढ़ चला। घर पहुँच कर कमल निढाल होकर अपने बिस्तर पर लुढ़क गया। काफी देर तक वह इसी प्रकार लेटा रहा। उसने करवट ली और तभी उसके गाल से कोई ठंडी सी मुलायम चीज़ छू गई। कमल ने हाथ बढ़ाकर टेबुल लैम्प जला दिया। उसने देखा उसके तकिए पर कुछ मोगरे के फूल और पंखुड़ियाँ पड़ी थीं। ये नीला की वेणी से झरे फूल थे। उसने उन्हें समेट कर हाथ में ले लिया और नाक के पास ले गया, वे उसके ओठों को छू गए। कमल के हृदय में एक टीस सी उठी, उसके गले में एक गोला-सा अटक गया। एक पल के लिए तो उसने जैसे नीला को क्षमा कर दिया, किन्तु दूसरे ही क्षण उसने उन फूलों और पंखुड़ियों को हथेली में मसल डाला और खिड़की के बाहर फेंक दिया।

तभी कमल के कानों में कुछ शब्द पड़े। वह तंद्रा से जाग गया। मुड़ कर देखा, चिताम्बरे खड़ा कह रहा था,

'लंच का वक्त हो गया, आप नई चलेंगा ?'

'जी नहीं, मेरी इच्छा नहीं है। आप खाइए' और चिताम्बारे चला गया।

खड़क-खड़क-खड़क-खट। कमल फिर वर्तमान में लौट आया था। उसे लगा जैसे सारी घटना चलचित्र के समान उसके मानस पट पर उतर आई थी और सहसा ही वह क्रम टूट गया। गाड़ी अपनी रफ़्तार से चली जा रही थी। वह यादों में कितना तल्लीन हो गया था खो गया था। कमल ने फिर आंखें बंद कर लीं और असली घटनाओं को फिर अपने मानस पट पर उतारने लगा।

उस दिन नीला और उसकी मौसी शाम की गाड़ी से काठगोदाम जाने वाली थीं। दिन भर कमल के मन में बवंडर उठता रहा। वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि वह नीला से मिले या नहीं। वह लाख प्रयत्न करने पर भी नीला को अपने मन से निकाल नहीं पा रहा था, और न ही अपने हृदय से वह उसके प्रति आक्रोश को निकाल पाया था। शाम तक वह उसी मनःस्थिति में रहा। आखिर उसने बड़ी कठिनाई से यह निश्चय कर लिया कि वह नीला से नहीं मिलेगा। वह नहाया, उसने कपड़े बदले और हजरतगंज की ओर चल दिया। कुछ देर वह निरुद्देश्य इधर उधर भटकता रहा और फिर कॉफ़ी हाउस में चला गया। वह इत्तिफाक से उसी स्थान पर जा बैठा जहाँ वह और नीला अक्सर बैठा करते थे। उसने कॉफ़ी का आर्डर दे दिया। उस स्थान और वातावरण ने फिर उसके मन में नीला की याद को उभार दिया। वह एक बेचैनी सी अनुभव करने लगा। उसने घड़ी देखी, गाड़ी छूटने में अभी एक घंटा था। उसने जल्दी जल्दी कॉफ़ी पी। बैरा अब तक बिल नहीं लाया था। उसे इस प्रकार समय जाता अच्छा नहीं लगा, वह कुछ झुंझला गया। तभी वेटर बिल ले आया। उसने पैसे चुकाए और तेजी से कॉफ़ी हाउस से बाहर निकल आया। उसने सड़क पर

जाता एक खाली रिक्शा देखा और झपट कर उसमें बैठ गया।

'चारबाग छोटी लाइन का स्टेशन' रिक्शा चल दिया। कमल सोचने लगा कि नीला के प्रति उसके कल के व्यवहार में कितना वैचित्र्य था। कुछ ही घण्टों में ख्यालातों में कितना अंतर आ गया। भावनाएँ कितनी बार सँवरी और कितनी ही बार बिखरीं। और नीला के साथ अपने अंतिम व्यवहार के विषय में वह मन में युक्ति करने लगा। उसने सारी घटनाओं पर फिर विचार किया। ऐसा भी हो सकता है कि परिस्थितियाँ ही ऐसी बनती चली गई हों कि कुछ गलतफहमी हो गई हो। लेकिन नीला ने अपनी सफाई में एक भी शब्द क्यों नहीं कहा? क्या उसकी अंतरात्मा में अपराध की भावना दबी हुई थी? या उसके वासना के उद्रेक को कोई सहारा देनेवाला मिल गया था जिससे वह कमल को भूल गई? क्या वह उसके प्रति निष्ठावान नहीं रही? यदि ऐसा ही था तो कल उसका व्यवहार उसके प्रति इतना आत्मीय और प्रेममय कैसे रहा। क्या अपने ऐसे व्यवहार से वह कमल को भ्रम में रखना चाहती थी? नहीं नहीं, नीला इतनी चालाक नहीं हो सकती। स्टेशन आ गया था। कमल ने रिक्शा विदा किया और अंदर चला गया। वह अपना एक-एक क्षण संजो रहा था, कृपण के समान। उसने प्लेटफार्म टिकिट लिया और प्लेटफार्म पर चला गया। वह फर्स्ट सेकन्ड क्लास के हर डब्बे में झाँकता जा रहा था। तभी उसकी निगाह कुछ दूर प्लेटफार्म पर खड़ी नीला पर पड़ी। उसका चेहरा उदास था। न जाने किस भावना से प्रेरित भीड़ में प्लेटफार्म के प्रवेश द्वार की ओर उत्सुकता से देख रही थी। कमल ने अपनी चाल तेज़ कर दी। मुसाफिरों, कुलियों, खोंचों वालों से बचता वह नीला की ओर बढ़ रहा था। जैसे ही नीला की निगाह उस पर पड़ी, उसका मुर्झाया चेहरा खिल उठा।

'मुझे आशा नहीं थी कि तुम आओगे कमल'

'मैं स्वयं भी एक घण्टे पहले तक निश्चय नहीं कर सका था।'

'तुम अलमोड़ा नहीं आ सकते क्या कमल?'

'तुम मेरे सिवाय किसी और के विषय में जब सोचना छोड़ दोगी तो कमल सदैव तुम्हारे ही पास होगा नीला।'

नीला मौन हो गई। उसकी आँखें डबडबा आईं। कमल वहाँ से मुड़कर एक फल बेचने वाले के पास चला गया। उसने एक टोकरी में कुछ दशहरी, सफेदा और लंगड़ा आम और कुछ बट्टी खरबूजे चुनवा लिए। वह टोकरी उठाए डिब्बे में चला गया। सीट के एक कोने में मौसी बैठी एक पत्रिका पढ़ रही थीं।

'नमस्ते मौसीजी' मौसी ने पत्रिका से निगाह उठाई।

'अरे कमल ये क्या ले आए?'

'रास्ते के लिए थोड़े से फल हैं'

'भई तुम तो बड़ा तकल्लुफ करते हो'

'मन यही चाहा'

'अभी तो गर्मियों की छुट्टियाँ हैं। तुम भी यदि अलमोड़ा आ जाते तो कितना अच्छा रहता।'

'मैं तो फिर घर जाने की सोच रहा था, मौसी जी। छुट्टियों में लखनऊ में मेरा एक मात्र आकर्षण नीला ही थी इसलिए घर से चला आया था। खैर सोचूँगा यदि पिताजी से स्वीकृति और खर्चा मिल गया तो शायद आ भी सकूँ।' इतना कह वह डिब्बे से नीचे नीला के पास उतर आया। नीला और कमल दोनों ही मौन खड़े थे। प्लेट-फार्म पर बहुत चहल पहल थी। दोनों कुछ उदास थे।

'गुमसुम क्यों हो कमल?'

'कहने को कुछ है नहीं।' कमल ने उत्तर दिया।

'क्या हम कभी आजीवन साथ रह सकेंगे?'

'असम्भव तो नहीं है नीला। लेकिन अब यह तुम्हारे सोचने की बात रह गई है।'

कमल बहुत कुछ कहना चाह कर भी कुछ नहीं कह सका। नीला ने अपने आप को बहुत कुछ सुनने के लिए भले ही तैयार न कर पाया हो, किंतु वह चाहती थी कि अगर कमल अपने मन की भड़ास निकाल

लेता तो उन दोनों के बीच अन्दर ही अन्दर जो एक दूरी सी बन गई थी वह खतम हो जाती और तनाव मिट जाता। खासकर ऐसे समय जबकि वे दोनों अनिश्चित काल के लिए बिछुड़ रहे हैं। नीला उसका मुँह ताकती खड़ी रही-सहसा कमल बोला. 'नीला, तुम मुझे पाना चाहती हो ? अपने सारे जीवन को मुझ से बाँध लेना चाहती हो ? क्या अपने वर्तमान को ढालने का तुम्हारा स्वयं का कोई कर्तव्य नहीं है ?' तभी गाड़ी ने सीटी दी। नीला इस सारे समय गम्भीर बनी रही।

'प्रयत्न करूँगी कमल। मैं तुम्हारे लिए, सिर्फ तुम्हारे लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हूँ और गाड़ी में चढ़ गई। तभी मौसी बोलीं,

'आना अवश्य भैया, अच्छा रहेगा।'

'प्रयत्न करूँगा मौसी जी।' गाड़ी धीरे धीरे प्लेटफार्म से खिसक रही थी। कमल गाड़ी के साथ चलने लगा।

'आपकी यात्रा सुखद हो' गाड़ी की गति बढ़ गई थी। कमल पीछे छूटता गया। वह अपना हाथ हिला रहा था। नीला निर्जीव सी उदास निगाहों से एकटक उसकी ओर देख रही थी। उसकी आँखों में आँसू थे। कमल का भी गला भर आया। वह मुड़ा और भीड़ में खो गया।

गाड़ी रुक गई थी। कमल अपने स्वप्न से जागा। बड़ौदा आ गया था। वह उठा, उसने एक अंगड़ाई ली और प्लेटफार्म पर उतर गया। उसने एक पैकेट सिगरेट का खरीदा और उसमें से एक सिगरेट निकाल कर जला ली। उसने देखा, नीला और चिताम्बरे डाइनिंग कार से उतर कर उसी की ओर आ रहे हैं। वह एकटक नीला के चेहरे की ओर देखने लगा। यह वही लड़की है जिसे एक बार कमल ने बेहद प्रेम किया था। जिसे जीवन साथी के रूप में उसने कई बार देखा था। जिस लड़की को लेकर उसने कई सपने संजोए थे। आज इसके जीवन का साथी कौन है ? इसने जीवन में निर्बाध बहने की एक भूल की और अब बराबर बहे जा रही है। अन्दर और बाहर में कितना अन्तर है, कमल ने नीला में आज यह स्पष्ट देखा और अनुभव

किया। धन, वैभव और समाज में मान के ऊपरी आवरण में, मुस्कुराते चेहरे के पीछे अंदर कितनी वेदना, निराशा और अनिश्चितता छुपी हुई है। वे दोनों उसके निकट आ गए थे। जाने किन ख्यालों में कमल ने सिगरेट की डिब्बी जेब से निकाली और उसे खोलकर चिताम्बरे की ओर बढ़ा दी। चिताम्बरे ने एक सिगरेट निकाली और तभी कमल ने माचिस की तीली जलाकर उसकी ओर बढ़ा दी।

'तो बम्बई में ठहरने का किधर का तय किया कमलाकांत जी ?'

'आपके साथ।'

'सच ?' विस्मय में सहसा ही नीला बोल उठी। उसके चेहरे पर क्षण भर को चमक आ गई।

'आइ एम रियली ग्रेटफुल टु यू' चिताम्बरे ने कहा। पास ही एक ठेले में से उठाकर नीला एक पत्रिका देख रही थी।

'अरे इसमें तो आपका लेख छपा है कमल जी' वह अपने बटुए में से पैसे निकालने लगी, तब तक कमल ने रेजगारी भरी हथेली ठेले वाले की ओर बढ़ा दी थी। ठेले वाले ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा फिर नीला की ओर और कुछ रेजगी उठा ली।

'अरे अरे मैं दे रही हूँ न।'

'मित्र की ओर से एक तुच्छ उपहार' कमल ने कहा।

'तो आप लेखक भी हैं' चिताम्बरे बोला।

'कभी-कभी सामाजिक समस्याओं पर अपने विचार लिख दिया करता हूँ। कुछ कहानियाँ और दो उपन्यास भी लिखे हैं।'

'वेरी गुड, इट्स युअर एन अदर क्वालिटी विच हैज़ कम टू लाइट।'

'बम्बई में साहित्यकारों की गोष्ठी में जाने का आखिर मेरा क्या प्रयोजन था ?' नीला और चिताम्बरे हँसने लगे। तीनों डिब्बे में चढ़ गए। चिताम्बरे ने आग्रह किया।

'आइए कमलाकान्त जी, हमारा साथ बैठिंगा कुछ गप लगाइंगा'

'यदि आपत्ति न हो तो मुझे क्षमा कीजिएगा, मैं आराम करना

चाहूँगा' कुछ सोचकर कमल ने कहा। कमल, पुरानी यादों में कुछ ऐसा खो गया था कि उनसे मुक्त नहीं हो पा रहा था। वे उसके मन पर सुख स्वप्नों-सी छा गई थी और वह उनसे मुक्त होना भी नहीं चाहता था। वह अपने जीवन की सारी विगत घटनाओं का पर्यवेक्षण करना चाहता था।

'ज़रूर ज़रूर, जैसा आपका मर्ज़ी' कमल अपनी सीट पर बैठ गया। नीला और चिताम्बरे आगे चले गए। गाड़ी चल दी।

कमल ने फिर आँखें बन्द कर लीं और वह विगत जीवन की आगे की घटनाओं के विषय में सोचने लगा। अल्मोड़ा से नीला का प्रथम पत्र आया था। कमल ने उसे कई बार पढ़ा। प्रेम पत्र था, उसमें याचना थी और कमल के अभाव के कारण सूनेपन का उल्लेख भी। कमल को कोई उत्तर सूझ नहीं पड़ा। कुछ दिन बाद नीला का दूसरा पत्र आया और फिर तीसरा। अब प्रायः हर दूसरे दिन उसका एक पत्र आ जाता था। वही कमल के अभाव की शिकायत, वह उसके पत्रों का उत्तर क्यों नहीं दे रहा है? वह क्या अब भी उससे नाराज़ है? उसने उसे अब तक भी क्षमा नहीं किया है? क्या कमल को उस पर दया नहीं आती? जब पहाड़ों पर बादल उतर आते हैं और वह अपने कमरे में बैठी आतिशदान में चटखते अंगारों को देखती है, बुझते हुए लकड़ी के कोयलों को देखती है और उन पर जमती राख की परत को देखती है तब उसका मन उदास हो जाता है, उसे कमल की बहुत याद आती है। कमल इन पत्रों को कई कई बार पढ़ता और उन्हें अपनी मेज की दराज़ में सहेज कर रख देता। वह क्या उत्तर दे? उसे भी नीला का अभाव बहुत खटकता था। नीला के आचरण को लेकर कमल का मन एक अजीब-सी दुविधा में फँसा था। कई बार प्रबल इच्छा होते हुए भी वह नीला के पत्रों का उत्तर न दे सका।

उसी दिन उसने अपने पिता को भी पत्र लिखा और उसमें अल्मोड़ा नैनीताल आदि जाने की स्वीकृति चाही। इसी पत्र में उसने अपने और नीला के विषय में सविस्तार लिख दिया। उसने इस स्पष्टवादिता

के लिए पिता से क्षमा मांगी, साथ ही लिखा कि उसके सिवाय कोई अन्य मार्ग उसे दिखाई नहीं दिया। यह उसके जीवन का प्रश्न था।

नीला का एक पत्र और आया। उसमें बड़ी शिकायतें की गई थीं। उसने लिखा था कि उसकी मौसी कौसानी जाना चाहती थीं लेकिन उसने साफ कह दिया है कि वह कमल के आए बगैर कहीं नहीं जायेगी। वह दिन भर घर में ही रहती है, कहीं बाहर जाने को मन ही नहीं करता। रात दिन वह उसी के विषय में सोचा करती है।

कमल के पिता का भी उत्तर आ गया। उन्होंने कमल को अलमोड़ा जाने की स्वीकृति दे दी थी और खर्च के लिए पाँच सौ रुपया भेजा था। उनने नीला के साथ कमल के विवाह के सम्बन्ध में लिखा था कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं हो सकती। कमल को यह याद रखना चाहिए कि वे घर में ऐसी बहू चाहते हैं जो गृहस्थी के उत्तरदायित्व को निभा सके। जो परिवार की मर्यादा और अनुशासन को निभा सके। उन्हें कमल पर विश्वास है, वे उसके द्वारा नीला के चुनाव को बुरा नहीं मानते, किन्तु अभी उसकी बुद्धि परिपक्व नहीं है, वह अब भी भावना में बह सकता है। इसलिए वे और उसकी माता स्वयं लड़की को देखना चाहते हैं। कमल नीला की माता को बातचीत चलाने के लिए कह सकता है। प्रस्ताव उनकी ओर से ही आना चाहिए, यही लोक मर्यादा के अनुकूल है। फिर वे लखनऊ आकर लड़की को देख आयेंगे और सारी स्थिति को समझ बूझकर बात पक्की कर सकेंगे। इस पर भी उनका यह दृढ़ मत है कि कमल पहले बी० ए० करले, उसके बाद ही विवाह हो सकेगा। कमल को इस उत्तर से प्रसन्नता ही हुई। वह अब व्यग्रता से मनीआर्डर के आने की प्रतीक्षा करने लगा। उसने नीला को अपने अलमोड़ा पहुँचने की सूचना नहीं दी। वह अचानक उसके पास पहुँचना चाहता था। नीला को कितना विस्मय और प्रसन्नता होगी।

सहसा ही नीला के पत्र आना बन्द हो गए। कमल इसका कारण नहीं समझ सका। शायद नीला उसके मौन से हताश हो गई हो या

पहाड़ की ठंडी हवा के कारण वह बीमार भी हो सकती है। उसे ख्याल की एक ऐसी झलक आई कि कहीं नीला किसी अन्य युवक की ओर तो आर्कषित नहीं हो गई? नीला में यह बहुत बड़ी कमज़ोरी थी, ऐसा कमल अब कुछ-कुछ मानने लगा था। उसमें वासना का उद्रेक बड़ा प्रबल होता था। वह चमक-दमकपूर्ण, आनन्दमय जीवन के प्रति अपने प्रलोभन पर नियन्त्रण नहीं रख पाती थी। इस विचार मात्र ने कमल की मनःस्थिति को असंतुलित कर दिया। वह विचलित हो उठा। नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। उसने नीला के सारे पत्रों को निकाल कर फिर पढ़ा। वह ऐसी स्थिति की अपने मन में थोड़ी-सी भी कल्पना नहीं कर सकता था, न करना ही चाहता था। तीन चार दिन बाद उसका मनीआर्डर भी आ गया। तैयारी में कुछ दिन लग गए। इस प्रकार एक सप्ताह का समय निकल गया। नीला का इस बीच भी कोई पत्र नही आया था। उसका नीला के पास अल्मोड़ा जाने का उत्साह कुछ कम सा हो गया था। उसके मन में वह उल्लास नहीं रह गया था फिर भी वह जानना चाहता था। जिस दिन वह रवाना होने वाला था, नीला की मौसी का एक पत्र आया। उसमें उन ने लिखा था कि नीला की माता जी उससे मिलने के लिए उत्सुक हैं इसलिए वह शीघ्र अल्मोड़ा आ जाय। यह पत्र तो कमल के लिए प्रश्नवाचक चिह्न बन गया। यह सब क्या हो रहा है? नीला की खामोशी और उसकी माता का बुलावा, वह कुछ समझ नहीं पा रहा था। उसके हृदय के एक कोने से कभी-कभी यह विचार अवश्य उठ आता था कि कुछ गड़बड़ अवश्य है लेकिन वह नीला को अपने से अलग कभी भी सोचने को तैयार नही था। यहाँ इस स्थिति में उसकी भावना प्रबल हो उठती थी, वह सम्भावित सत्य की उपेक्षा कर जाता था, इसलिए भावुकता के आवेग में, विचार जैसे उठते थे वैसे ही जहाँ के तहाँ दफन हो जाते थे।

कमल व्यर्थ खर्चा करने के पक्ष में नहीं था। दूसरे, इन दिनों पहाड़ों पर जाने वालों की भीड़ भी कुछ कम हो चली थी। इसलिए वह तीसरे दर्जे में सफर कर रहा था। तीसरे दर्जे में तो भीड़ साधा-

रणतया अधिक होती ही है। कमल ने अपने लिए एक डब्बे में ठीक-सा स्थान बना लिया था। जब गाड़ी चली तो कमल ने डब्बे के चारों ओर निगाह दौड़ाई। कितनी विविधता होती है इस दर्जे में। तरह-तरह की शक्लों के, तरह-तरह की वेषभूषा के, तरह-तरह की प्रकृति के पुरुष स्त्री, युवक, युवती, बालक-बालिका इस दर्जे में सफर करते हैं। कमल इस मजमे में आते ही सारे ख्यालातों के दबाव से सुलझ गया। वह डब्बे के वातावरण में रस लेने लगा। जब रात ढलने लगी और डब्बे के यात्री उनींदे होने लगे तो कमल पर फिर उदासी छाने लगी, उसे नीला के विचार फिर घेरने लगे। उसने जेब से सिगरेट निकाली और दूसरी जेब से माचिस निकालने के लिए मुड़ा तो उसकी निगाह डब्बे की दीवार पर गई। वहाँ कुछ वाक्य लिखे थे जिनमें पहला था डब्बे में सिगरेट न पीने की हिदायत। माचिस उसके हाथ में ही रह गई। उसने मुँह से सिगरेट निकाल ली। फिर डब्बे में निगाह दौड़ाई तो कई बीड़ियाँ और सिगरेट सुलग रही थीं। उसने अनगिनत बार रेल यात्रा की थी और कई बार इस हिदायत को पढ़ा था और सैंकड़ों सिगरेट इन डब्बों में फूँक डाली थीं। उसकी हँसी निकल गई। आज उसके मस्तिष्क में कौन-सी शिरा झंकृत हो गई कि वह इस आचार-संहिता पर सोये मन से अमल कर उठा। हँसते-हँसते उसने सिगरेट दुबारा मुख से लगा ली और उसे सुलगा कर हौले-हौले पीने लगा। उसने फिर एक बार डब्बे का सिंहावलोकन किया और सामने उस पार वाली सीट पर कोने में बैठे एक जोड़े पर उसकी आँख अटक गई। युवक और युवती। साधारण वेशभूषा, साधारण बनाव-श्रृंगार लेकिन उनका घुल-मिलकर अनुराग भरी चितवनों का आदान-प्रदान करना कमल को चुभ गया। उसे नीला की याद बहुत ज़ोर से आने लगी। उसके हृदय में एक टीस उठी। क्या वास्तव में नीला उसके प्रति बेवफा हो गई होगी और यदि यह सत्य है तो कमल उसे किसी गैर के साथ देखना कैसे गवारा कर सकेगा? उस समय उसके मन की क्या दशा होगी ? वह क्या करेगा ? इस विचार मात्र से वह सिहर उठा।

उसने अपने सिर को एक झटका दिया और दूसरी सिगरेट जला ली। वह नीला के ही ख्याल में रत, सोता जागता, आशा निराशा के भावों में डूबता उतरता, गाड़ी के साथ, नीला की ओर बढ़ा जा रहा था। जिस स्टेशन पर भी गाड़ी रुक जाती थी, डब्बे का वातावरण हिल उठता था। शोरगुल, उतरा-चढ़ी, लड़ाई झगड़ा और जैसे ही गाड़ी चलती थी, फिर अलसाया वातावरण!

कमल जब सोकर उठा, सुबह हो गई थी। उसका बदन दुख रहा था, आँखें जल रही थीं। थकावट अवश्य थी लेकिन कुछ सो लेने से वह कुछ ताज़गी सी भी महसूस कर रहा था। वह उठकर संडास में गया और उसका जी मचलने लगा। संडास की दीवार पर एक वीभत्स रेखाचित्र अंकित था और कुछ बहुत ही अश्लील वाक्य लिखे थे। कमल को पेशाब करना ज़रूरी थी, वह उसने किया और लौट आया। हलदानी स्टेशन पर जब गाड़ी रुकी तो कमल दाँतों को ब्रुश कर रहा था। वह गाड़ी रुकने से पहले ही नीचे उतर गया और दौड़ कर नल पर जाकर कुल्ली करने लगा। उसने खूब मुख साफ किया, तब भी संडास का घिनौना ख्याल उसके दिमाग से नहीं निकला। उसने अपना चेहरा और सर भी धोया और तौलिये से पौंछ कर अपने बालों में कंघी फेरी और प्लेटफार्म पर डब्बे की ओर बढ़ आया। उसने कुल्हड़ में चाय ली और पीने लगा। चाय बड़ी स्वाद लगी, अजीब सौंधी महक थी उसमें। उसने चारों ओर देखा। सामने हिमालय के चरण जमे थे और प्रथम पंक्ति के पहाड़ों के भागों पर मेघ झुके हुए थे। कमल का मन उल्लास से भर उठा। उसने चारों ओर आँख भर देखा, चाय खतम करके कुल्हड़ फेंका, सिगरेट जलाई और डब्बे में चढ़ गया। ज्यों ज्यों उसे नीला के निकट पहुँचने का आभास हो रहा था, उसे कुछ घबराहट-सी हो रही थी। उसे एकाएक देखकर नीला कितनी खुश होगी? सहसा उसे ख्याल आया कि अगर वैसा ही कुछ हुआ जैसा महीना भर पहले लखनऊ में हुआ था तो क्या होगा? इस विचार के आते ही कमल फिर उदास हो गया। गाड़ी हिमालय की गोद में

समाती जा रही थी। वातावरण सारा का सारा बदल चला था। धान के खेतों की हरियाली और मेड़ों पर क्रोटन की बाड़ में नारंगी फूलों के गुच्छे एक अनोखा काण्ट्रास्ट पैदा कर रहे थे। आखिर काठगोदाम आ गया। पानी बरस कर खुला ही था। सुबह की धुली हुई धूप में सारा दृश्य चमक रहा था। कमल गाड़ी से उतरा। उसके पास एक बिस्तर, एक सूटकेस, एक बैग और फलों का एक टोकरा था। उसने कुली के सिर पर सामान रखवाया और वेटिंग-रूम की ओर चल दिया। चौकीदार ने उसे कुछ शंका की दृष्टि से देखा, लेकिन सामान और वेशभूषा से कमल पहले दर्जे का यात्री जँचता था। उसने चौकीदार की हथेली में एक अठन्नी दबा दी। सामान करीने से अन्दर जमवा दिया गया। हालाँकि कमल अपने गन्तव्य पर पहुँचने के लिए उतावला था, लेकिन उसे अभी फारिग होना था। वह गुसलखाने में चला गया। वह फारिग हुआ, उसने शेव किया, नहाया और कपड़े बदल कर वह बाहर आया। उसने समर का पतलून पहन लिया था, एक स्वेटर और जर्किन ऊपर निकाल लिए थे, साथ ही बरसाती भी। वह जलपान-गृह में चला गया, जहाँ उसने मक्खन लगे गरम टोस्टों और चाय का नाश्ता किया। इन सब कामों से निपट कर वह अलमोड़ा जाने वाली मोटर की तलाश में बाहर निकला।

मोटर जाने में अभी एक घंटा शेष था। उसने टिकट लेकर अपना स्थान सुरक्षित करवा लिया और वैसे ही नैनीताल रोड पर चल दिया। उसे यह स्थान एक नये संसार सा लगा। मोटरों और माल-गाड़ियों के अलावा यहाँ कुछ अधिक नहीं था। हिमालय का प्रवेशद्वार, स्वर्ग और मृत्युलोक का मिलन स्थल, पहाड़ी और मैदानी दोनों समाजों का समन्वय स्थान, वास्तव में कमल के लिए यह नई दुनिया थी। कुछ मोटरों के कारखाने थे। पहाड़ी कुलियों के छोटे गंदे होटल थे, कुछ छोटी मोटी दुकानें थीं, जिन पर किराना, साबुन, सिगरेट, बीड़ी, माचिस, चाय आदि मिलती थी। कमल ने एक दुकान से गोल्ड-फ्लेक का एक पैकेट खरीदा और एक सिगरेट जला कर वापस लौट आया। वह सीधा

स्टेशन चला गया और कुली से अपना सामान उठवा लाया। अलमोड़ा जाने वाली मोटर लग गई थी। उसने अपना सामान रखवाया और फिर टहलने लगा। स्टेशन के सामने टेकरी पर कुछ बंगले बने थे। उसे वे बड़े भले लगे। इस सब के बावजूद भी वह मन में एक रिक्तता अनुभव कर रहा था। नीला का ख्याल आते ही फिर एक बैचैनी।

आखिर मोटर रवाना हुई। काठगोदाम का बाज़ार पार करके मोटर घुमावदार सड़क पर हिमालय की छाती पर चढ़ चली। कमल बड़े मनोयोग से दृश्यावली को निहारता रहा। सड़क के किनारे पहाड़ी ढलानों पर हरियाली लहलहा रही थी। उभरी हुई, छोटी, बड़ी, खड़ी, चपटी और गोलाई लिये चट्टानें, वर्षा और काई से काली पड़ गई थीं, जिन पर कहीं कहीं हरी काई भी चिपकी हुई थी। चट्टानों के आसपास उगे कई प्रकार के फर्न बड़े सुन्दर लगते थे। एक के बाद एक दृश्य पीछे छूटता जाता था। मोटर एक घूम के बाद दूसरी घूम पर मुड़ती पहाड़ों पर चढ़ती चली जा रही थी। पहाड़ों की चोटियाँ बादलों से आच्छादित थीं। ढलानों की मखमली हरियाली पर देवदार के पेड़ झूम रहे थे। बीच बीच में दो पहाड़ियों की गोद में पहाड़ी झरने बड़े वेग से बहते चले जा रहे थे। दूर नीचे वादियां फैल गई थीं, जिन में सीढ़ीनुमा खेतों में धान अपनी तोतापंखी हरियाली छटा में लहलहा रहे थे। कमल जी भर कर उन्हें देख भी नहीं पाता था कि दृश्य बदल जाता था। बादलों की छाया फिर उदासी समेट लाई। जैसे जैसे मोटर ऊपर चढ़ रही थी, ठंडक बढ़ने लगी थी। कमल ने स्वेटर पहिन लिया। रात की जगार और इस शीतल वातावरण के कारण उसकी आँखें झपने लगी थीं। और उसका सर सीट की पिछली गद्दी पर लुढ़क गया। मोटर के रुकने के साथ ही कमल की नींद खुली। भुवाली। वह नीचे उतर आया और सिगरेट पीने लगा। अजीब शांत उदास, गतिहीन मरीज़ाना फिज़ा, जैसे वहाँ के हर व्यक्ति को और हर वस्तु को टी. बी. हो गई हो, या यह कमल के मन में बसी बात हो, भुवाली में टी. बी. का मशहूर सेनिटोरियम जो है। इस बार मोटर खेरना में

रुकी। यह स्थान उसे बड़ा भला लगा। सच्चा पहाड़ी वातावरण था। वह एक छोटे से होटल के सामने जा खड़ा हुआ। वहाँ कुलियों की संख्या अधिक थी। वह उन्हें देखता रहा। एक नया संसार, एक नया वातावरण। मोटर ने भोंपू बजाया, कमल इस दृश्य में खोया सीट पर जा बैठा। मोटर फिर आगे रवाना हुई। रानीखेत। फिर घुमावदार रास्ते, चीड़ और देवदार के वन, गहरी घाटियाँ और खड्डे, पहाड़ी झरने, वादियों में लहलहाते धान के खेत, बादलों की आँखमिचौनी,, छाया और उजाला और मोटर अल्मोड़ा पहुँच गई।

कुलियों ने मोटर को घेर लिया, वे अपने लाइसेंस गाड़ी में ठूँस रहे थे। कमल ने अनिश्चित मन से एक टिकिट ले लिया और वह मोटर से बाहर कूद आया। अजीब तरह की सर्दी थी। उसने जर्किन पहन लीया। अब अह उद्विग्न होने लगा, नीला के इतने निकट होने के ख्याल से उसका दिल धड़कने लगा। अल्मोड़ा--नीला। तभी कुली मोटर पर से चिल्याया।

'हूजूर कौनसा सामान है'

'बिस्तर, सूटकेस और टोकरी' कुली ने बिस्तर सूटकेश पर हाथ लगा कर दिखाया, कमल ने सिर हिला दिया। कुली ने दूसरे कुली की सहायता से सामान नीचे उतार लिया।

'कहाँ चलेगे हुजूर'

'मिसेज जोशी का बच्चों का स्कूल, क्या लोगे'

'हम डेढ़ रुपया लेगा साब' कमल ने अपने कुली की ओर रहस्य भरी निगाह से देखा, वह समय नहीं गंवाना चाहता था। उसने अपने कुली से ही कहा : 'चलो चलो, ठीक पैसे लेना।'

'मेरबानी हजूर। हम सीधा जाऊँ या साथ चलेगा'

'साथ चलो, मैंने जगह नहीं देखी है।'

शहर को आड़ा पार करके वे दूसरी घाटी की ओर उतर गए कुछ नीचे, चीड़ के सघन बन के बीच एक खुले स्थान में तीन मकान दिखाई दिए। बीच का मकान बड़ा था और उसी से लगभग सटा हुआ

एक छोटा मकान। चारों ओर खुली जगह में बच्चे खेल रहे थे। एक कोने में एक छोटा मकान था, जिसके सामने दूब और फुलवारी थी। कमल को वह एकान्त स्थान बड़ा मनोहर लगा। यही मिसेज़ जोशी का स्कूल था। कमल का दिल और भी धड़कने लगा। वह कल्पना करने लगा कि नीला उस काटेज से निकल रही है और तभी उसकी निगाह कमल पर पड़ती है। वह प्रसन्नता और उत्साह से उसकी ओर दौड़ पड़ती है लेकिन ऐसा कुछ हुआ नहीं। काटेज का मार्ग अलग था, लेकिन उसी से एक रास्ता स्कूल की ओर खुलता था। कमल कुली के आगे आगे कम्पाउण्ड में घुसा। मकान या बरामदे में उसे कोई दिखाई नहीं दिया। वह संकोच से दबने लगा। वह सीधा यहाँ किस प्रेरणा से चला आया ? क्यों किसी होटल में नहीं ठहर गया ? जाने ये लोग उसका इस तरह यकायक आना ठीक समझें या नहीं। उन्होंने संकोचवश उसे ठहरा ही लिया तो बात छुपी नहीं रहेगी, तब वह क्या करेगा ? लेकिन अब क्या हो ?

वह एक छोटे से बरामदे के सामने पोर्च जैसी जगह में खड़ा था। कुली ने सामान बरामदे में रख दिया था। अब भी वहाँ कोई नहीं था। कमल का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। वह किंकर्तव्यविमूढ़ की तरह खड़ा था। तभी बगल के शीशे जड़े बरामदे के हिस्से से एक प्रौढ़ा महिला, हाथ में कुछ कागज पत्र लिये निकलीं, उनके चेहरे पर प्रश्नवाचक मुद्रा थी। कुछ कठोरता लिये अन्यमनस्कता। उनने सामान की ओर देखा और कमल ने उनकी ओर। साँवला रंग, भारी शरीर, खिचड़ी बाल, चेहरे पर ममतामयी कठोरता, जो किसी भी ईमानदार अनुशासनप्रिय अध्यापिका के चेहरे पर मिल सकती है। सामान देखकर उनकी भृकुटी चढ़ गई और उनने प्रश्नभरी निगाह से कमल को देखा। कमल को पसीना आ गया। एक क्षण को ख्याल आया, कहाँ फँस गया किन्तु उसने दोनों हाथ जोड़ दिये, 'नमस्ते, मैं कमलाकांत मिश्र हूँ।' महिला के चेहरे का तनाव ढीला पड़ गया और उस पर स्नेहमयी मुस्कुराहट फैल गई।

'अरे तुम ? मैं नीला की माँ हूँ। पहुँचने की सूचना भी नहीं दी ?' फिर पुकार कर बोलीं, 'अरे नीला, देख कौन आया है।'

कमल को कुछ तसल्ली हुई, उसने कुली को डेढ़ रुपया दिया। उसने झुक कर सलाम किया, 'सलाम हजूर, बकशीश, गरीब आदमी है हुजूर' कमल ने उसके हाथ पर एक चवन्नी रख दी, वह सलाम करता हुआ चला गया। सामने मौसी खड़ी थीं। कमल ने हाथ जोड़ कर नमस्कार किया।

'खूब आये बेटा कमल अचानक ही ?'

'जी सोचा था, सब को आश्चर्य होगा, थोड़ा आनन्द आयेगा'

'अच्छा मैं तो स्कूल चलती हूँ। कमल, तुम घर की तरह निश्चिन्त होकर नहाओ खाओ।' इतना कह कर नीला की मां स्कूल की ओर चली गई। कमल को कुछ ऐसा लगा कि नीला की मां मौसी की अपेक्षा कुछ रूखे स्वभाव की हैं। तभी उसने देखा, सामने नीला खड़ी है। सफेद साड़ी में लिपटी, एक कोटी पहने हुए। उसके चेहरे पर एक अपराधी जैसा भाव था, शर्म थी, पीड़ा भी और कुछ उदासी थी। कमल को देखते ही उसकी आँखें नम हो गई।

'नीला, कमल को पिछले कमरे में पहुँचाओ, सामान रखवा दो। कमल बेटा तुम नहालो फिर भोजन करो, तैयार है।' इतना कहकर मौसी अन्दर चली गईं। नीला और कमल एक दूसरे के आमने सामने खड़े थे। मौन, भाव-विभोर से। तभी अन्दर से नौकर आ गया और सामान उठाकर अंदर ले गया।

'देखो, ये टोकरी मौसी जी के पास ले जाना' कमल ने कहा।

'आओ कमल' और वह नीला के पीछे-पीछे चल दिया।

जिस कमरे में वे पहुँचे वह खाने के कमरे से लगा हुआ था और मकान के पिछवाड़े था। बाँई ओर कमरे से लगा हुआ गुसलखाना था और दाहिनी दीवार में चौड़ी काँच की खिड़की थी जो नीचे घाटी में झाँकती थी और दूरस्थ पहाड़ों की शृंखलाओं का दृश्य अपनी चौखट में जोड़े हुए थी। खिड़की पर मोटा पर्दा लगा था और उसके बिलकुल

नीचे, दीवार से सटी लकड़ी की एक लम्बी सीट थी, जिस पर गद्दियाँ लगी हुई थीं। एक ओर एक पलंग बिछा हुआ था। पलंग के सिरहाने की दीवर में, पलंग से परे एक आतिशदान था। उसके पास दो गद्देदार कुर्सियाँ रखी थीं। दूसरी ओर एक राईटिंग टेबुल और कुर्सी थी। पलंग के परे दूसरी ओर दीवार से लगी दो अलमारी थीं और गुसल-घर का दरवाज़ा था। कमल खिड़की के पास सीट पर बैठ गया। उसने पर्दा हटा दिया और वह बाहर का दृश्य अवाक् अपलक देखता ही रह गया। खिड़की के बाहर सामने नगाधिराज हिमालय की धवल रुपहरी चोटियाँ चमक रही थीं। कितनी विशाल थी यह हिमाच्छादित पर्वत शृंखला, कितना भव्य था यह दृश्य, कितना महान था वह गगन चुंबी रजतखंड। कमल उस महानता, विशालता को देखकर अवाक् रह गया। वह कुछ समय के लिए नीला को भी भूल गया।

'तो तुम आ गये कमल' कमल मुड़ा। नीला उदास, पीत मुख, कांतिहीन कुर्सी में पड़ी हुई थी। कमल ने सिगरेट सुलगाया और नीला की कुर्सी के हत्थे पर बैठ गया।

'मेरा आना क्या तुम्हें रुचा नहीं ?' कमल बोला। नीला चुप रही।

'नीला मैं तुम्हारे लिए एक शुभ संदेश लाया हूँ' नीला ने मुड़कर उसके मुख पर देखा। कमल उठा और सूटकेस में से एक पैंकेट निकाल लाया। वह उसने नीला की गोद में रख दिया और उसके हाथ में एक अंगूठी पहिना दी। नीला ने प्रश्नभरी दृष्टि से कमल के चेहरे में देखा।

'नीला मेरे माता पिता हमारे सम्बन्ध के लिए सहमत हैं। कुछ औपचारिक बातें वे पूरी करना चाहते हैं। तुम इस परीक्षा में सफल हो सकोगी ?' नीला मौन रही। कमल उसके सामने, फर्श पर बिछे एक पहाड़ी ऊनी कालीन पर बैठ गया था। नीला का चेहरा भावहीन था। कमल को विस्मय हुआ और कुछ वेदना भी हुई। वह अब तक नहीं समझ सका था कि नीला को क्या हो गया। कमल का दिया पैंकेट अब तक उसकी गोद में पड़ा था और वह अंगूठी की ओर एक-

टक देख रही थी। नौकर ने दरवाजे से आवाज़ देकर खाने के लिए बुलाया। नीला उठी। उसने वह पैकेट कस कर छाती से दबा लिया। उसकी आँखें भर आईं। वह मुड़ी, कमरे से बाहर निकल गई। कमल उसके पीछे-पीछे विचारमग्न चल दिया। डाइनिंग टेबुल पर एक थाली रखी थी। कमल कमरे में अकेला था, केवल नौकर खड़ा था। वह बैठ गया और खाने लगा। इतने में मौसी आ गई और कुर्सी खींच कर कमल के दाहिनी ओर टेबुल की बाजू में बैठ गई।

'कहो बेटा कमल तुमने क्या विचार किया है?'

'मैंने पिताजी को लिखा था। उन्हें नीला के मेरे साथ सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन उनका अभी तो वही निश्चय है कि जब तक मैं बी० ए० न कर लूँ, मेरा विवाह न हो। स्वयं मैं भी यही विचार रखता हूँ। जो पत्र उनने मुझे लिखा है, वह मैं आपको दिखा दूँगा। वे इस प्रसंग में क्या करने की अपेक्षा रखते हैं, यह भी आपको मालूम हो जायेगा। एक बात जो मेरे, आपके तथा सभी के विचार करने की है, वह यह कि जिस प्रकार की पत्नी की अपेक्षा मुझे तथा मेरे परिवार को है वह गुण कितनी मात्रा में नीला में विद्यमान हैं। यदि नहीं है, तो आप उसमें ऐसे गुणों की स्थापना में कितना सहयोग दे सकेंगी। और मुझे सोचना है कि उसे इन सारी परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में मैं कितना कामयाब हो सकूँगा, यही निर्णय मेरे माता पिता आप लोगों तथा नीला से मिलकर करना चाहते हैं।' कमल इतना कहकर भोजन करने में व्यस्त हो गया। जब उसने मौसी को मौन पाया और उनकी ओर देखा तो उन्हें चिंतित और विचारमग्न पाया।

'नीला की मां को उसका विवाह शीघ्र कर देने की चिन्ता है, इसलिए हम लोग शीघ्र ही तुम्हारे माता पिता से मिलेंगे, आगे तुम्हें सोचना है।'

'इस विषय में यदि आप उचित समझें तो मैं नीला से भी राय कर लूँ। जहाँ तक नीला को अपनाने का प्रश्न है, वर्तमान स्थिति में तो मैं तैयार हूँ।''

कमल भोजन करके अपने कमरे में चला आया। वह लेट गया और सोचने लगा कि यह सब क्या हो रहा है। नीला का व्यवहार इतना विचित्र है। मौसी शादी के लिए बराबर चिंतित हैं। वे तो कई दिनों से हैं। आज इस व्यग्रता में क्या नवीनता या विचारणीय बात आ सकती है ? अभी तक कमल नीला के विचार नहीं जान सका था न ही उसकी मां के, न उसकी मां से बात करने और उन्हें समझने का उसे मौका ही मिला था। उसे कुछ शंका अवश्य हुई, जैसी उसे पहले भी एकाध बार हो चुकी थी, कि नीला के आचरण में कहीं कोई कमज़ोरी अवश्य है और वह उसके प्रति निष्ठावान नहीं है। यह विचार दिमाग में आते ही उसे नीला से पहली मुलाकात के प्रारम्भिक शब्द 'आई लव यू' याद आ गए और उनके हल्केपन को याद कर उसको ग्लानि होने लगी। वह नीला में इतना भूल गया था कि उसके प्रति ऐसा कोई भी विपरीत विचार उसके मन में ठहरता नहीं था। यही सोचता कमल सो गया।

उसे चाय पीने के लिए जगाया गया। मुँह हाथ धोकर उसने घड़ी देखी तो पाँच बजे थे। उसकी इच्छा घूमने की थी, अतः उसने कपड़े बदले और डाइनिंग रूम में चला आया। वहाँ नीला की मां, मौसी और नीला उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नीला उसे आते देख उठ कर चली गई। पीछे नौकर चायदानी को टीकोज़ी से ढाँककर ले आया। नीला ने चारों के लिए चाय बनाई। सब मौन थे।

'लो कमल, कुछ नाश्ता लो' इस बार नीला की मां ने कहा। कमल ने एक एक नमकीन बिस्कुट और चीज़ का टुकड़ा ले लिया और चाय पीने लगा। छुपी निगाहों से नीला की ओर देखा। उसे लगा कि वह रोई है। उसकी आँखें कुछ सूजी हुई और लाल थीं। वह जब भी कमल की ओर झाँक लेती थी, उसकी दृष्टि बड़ी कातर लगती थी। कमल को यह मौन खल रहा था। उसे बहुत ज़्यादा संकोच सा हो रहा था।

'बहिन और नीला का विचार आसपास के कुछ दर्शनीय स्थानों

में घूमने का था। मैं तो स्कूल की वजह से जा नहीं सकती हूँ। बहिन ने सोचा यदि तुम आ जाते तो यह यात्रा और भी आनन्ददायी होती, इसीलिए तुम्हें पत्र लिखा गया था। हमें बड़ी प्रसन्नता है कि तुम आ गए। अब तुम, बहिन व नीला सुविधानुसार कौसानी का कार्यक्रम बनाओ। फिर नैनीताल भी हो आना। रानीखेत तो मार्ग में आयेगा ही। पहले तुम अल्मोड़ा घूम लो। कुछ आराम भी कर लो। इच्छा हो तो तुम और नीला अभी घूम आओ।' इतना कह कर नीला की माँ उठ गई। नीला भी अंदर चली गई। कमल बाहर फुलवारी में निकल आया। आसमान में बादल छितरे हुए थे, जैसे रूई के गाले हवा में उड़ रहे हों। पहाड़ के पीछे उतरते सूर्य का पीला प्रकाश फैला हुआ था। रंग बिरंगे फूल हल्की हवा में लहरा रहे थे। पहाड़ की ढलानों पर चीड़ की गहरी हरियाली और उनकी चोटियों पर तैरता पीला प्रकाश। नीला ओवरकोट पहन कर निकल आई थी और वे दोनों चल दिए। सड़क पर आकर वे मुड़े और पहाड़ की चोटी की ओर बढ़ गए। मार्ग में दोनों मौन रहे। ऊपर बांछ के छोटे बड़े पेड़ दूर दूर उगे हुए थे। उनके बीच में हरी घास फैली हुई थी और सिलेटी पत्थर की चट्टानें कहीं कहीं उभरी हुई थीं।

वे दोनों ऊपर जाकर एक चट्टान पर बैठ गए, कमल ने सिगरेट जलाई और धीरे धीरे पीने लगा। सामने नगाधिराज हिमालय की भव्य धवल चोटियां क्षितिज पर एक रेखा बनाती चली गई थीं जिनसे बादल आँखमिचौनी खेल रहे थे। अस्ताचलगामी सूर्य का पीला प्रकाश उन चोटियों पर स्वर्णिम छटा बिखेर रहा था। जहाँ कमल और नीला बैठे थे उनके पैरों से आगे ढलान गहराई तक चला गया था। उस ढलान पर काफी नीचे तक हरी घास उगी हुई थी। नीचे चीड़ और बांछ के पेड़ों की गहरी हरियाली थी और इस हरियाली की रेखा के बाद सीढ़ीनुमा फैले धान के खेत थे। जहाँ ढलान खत्म होता था, एक रुपहली रेखा बल खाती, पहाड़ों में मुड़ती, लुकती छुपती जा रही थी और उसके पार सीढ़ीनुमा खेतों

के ऊपर फिर पहाड़ उठ गया था। खेतों के बीच बिखरे छोटे छोटे मकानों की सिलेटी और लाल छतें बड़ी सुन्दर लग रही थीं। वे जहाँ बैठे थे, उससे कुछ नीचे, कुछ पहाड़ी स्त्रियाँ घास के बड़े बड़े गट्ठे पीठ पर लादे दुर्गम पहाड़ी पगडंडियों पर जाती हुई नीचे की ओर उतर रही थीं। सारा वातावरण शांत था। बसेरे पर जाते पक्षियों का कलरव, और नीचे कोई गरीबी में मस्त किसान या ग्वाला अपनी बाँसुरी पर एक दर्द भरी आवाज़ में पहाड़ी तान छेड़ रहा था, जो दोनों पहाड़ों से टकरा कर गूंज रही थी, उन तक पहुँच रही थी। सहसा नीला अपना सर कमल के कन्धे पर रखकर रोने लगी।

'क्या तुम मुझे अब भी अपना सकोगे कमल ?' नीला का अपराधी मन बिना बोले रह नहीं सका।

'मैंने तुम्हें त्यागा ही कब है नीला ?' कमल ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा, 'क्या हुआ है तुम्हें ? रोती क्यों हो ?'

'मैंने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया है कमल'

कमल अवाक् रह गया, वह गम्भीर हो गया। उसने सोचा कि अच्छा होता यह बात अप्रकट ही रहती, भ्रम का वातावरण ही बना रहता लेकिन अब इस सत्य को वह कैसे अस्वीकार करे ? और नीला ने आज इसे कैसे स्वीकार लिया, किस भावना, किस विश्वास के बल पर ? कमल को क्रोध आ गया।

'यह विश्वासघात मेरे साथ तुमने पहली बार किया है ? नहीं ऐसा दुबारा और शायद चौथी पाँचवी और अनेक बार हुआ है। मैंने इसकी हल्की-सी झलक कहीं और कभी अपनी कल्पना में देखी थी। मैं तुमसे इतना अनुरक्त हूँ कि वास्तविकता का आभास होते हुए भी मैंने कभी उसे मन में ठहरने नहीं दिया, भावना और सुखद कल्पना में मैं सदैव उसे भुलाता रहा, उसकी उपेक्षा करता रहा हूँ। अब फिर क्षमा क्यों, कैसी ? तुम किस बन्धन में बंधी हो नीला ? तुम तो स्वतन्त्र हो। मुझ पर यह आघात तुमने क्यों किया ? तुम खामोश अपने मार्ग पर चल देतीं, अपने उस सुख की खोज में, जो तुम्हें मेरी अपेक्षा किसी और से

अधिक मिलता है, मिल सकता है। मैं मार्ग से एक ओर हट जाता और अब भी हट जाऊँगा। फिर यह आघात क्यों किया तुमने? इस सत्य को भ्रम ही जो रहने देतीं? उसी में मुझे सुख था। आज भी मैं अपने मन को यह समझाने के लिए तैयार हूँ नीला कि मैं अब तक एक सुखद स्वप्न देख रहा था। तुम्हारी एक याद रह जायेगी जो कालान्तर में धुल जायेगी, पुँछ जायेगी और स्मृति-पट पर तुम्हारी एक परछाई रह जायेगी। प्रिय से प्रियतर सदा के लिए बिछुड़ जाते हैं, संसार में यही तो होता है, यही चिरंतन सत्य है।' कमल ने एक निश्वास छोड़ी, 'सब खत्म हो गया।'

'नहीं कमल नहीं, मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकती। मैं तुम्हारे बिना रह नहीं सकूँगी। लेकिन कमल तुम मुझे क्षमा कर दो, मैं अपनी कमजोरी पर विजय नहीं पा सकी हूँ। तुम कितने अच्छे हो, कितने अजीब हो, औरों से कितने अलग हो। तुम्हारे व्यक्तित्व में कितना प्रभाव है, कितनी शालीनता है, कितना आकर्षण है। तुम कितने स्निग्ध हो, कितने शीतल हो कमल। मैं तुममें इतनी रत हूँ कि अपना हृदय और मुख उघाड़ने का साहस कर रही हूँ, इस आशा से कि तुम मुझे क्षमा कर दोगे। मुझ में एक आग सुलग उठती है और तुम्हारी शीतलता उसे बुझा नहीं पाती। मैं अपनी ही आग में झुलस जाती हूँ और तब उससे डरने भी लगती हूँ, फिर झुलसती हूँ और डरती भी हूँ, किन्तु फिर भी मैं आग की ओर बरबस खिंची चली जाती हूँ। जब तक तुम मेरे पास होते हो, मुझे किसी प्रलोभन से भय नहीं होता, मुझ में अपनी वासना को पी जाने की शक्ति होती है, और तुम्हारे अभाव में ऐसी परिस्थितियों में मैं अपने पर से नियन्त्रण खो बैठती हूँ। फिर मैं अपनी दशा पर सोचती हूँ, पश्चात्ताप करती हूँ लेकिन मैं अब तक नहीं समझ सकी हूँ कि मुझे क्या हो जाता है, एक अजीब पागल-पन। मुझे क्षमा नहीं करोगे कमल?' नीला ने कुछ ऐसी कातरता से कहा कि कमल क्रोध को भूलने सा लगा। वह कुछ समय मौन बना कुछ सोचता रहा। फिर बोला, 'कभी इसके परिणामों पर भी विचार

किया है नीला ? और यह भी कभी सोचा है कि तुम्हारी इस अज्ञानता का परिणाम मुझ निरपराध को भी भुगतना पड़ सकता है ?'

कमल इतना कहकर चुप हो गया। नीला हतप्रभ-सी उसके मुख की ओर देखने लगी। कमल ने उसकी ओर देखने की चेष्टा तक नहीं की। उसने सिगरेट सुलगाई, और सर उठाकर सामने, दूर क्षितिज पर सोने के ढेरों की ओर एकटक देखता रहा। कितना वैभवमय आकर्षण ! कितनी बड़ी मृग-मरीचिका ! वह फिर कहने लगा, 'नीला ! तुमने अपने भविष्य के विषय में भी सोचा है ? तुम जीवन भर के लिए कमल से बंध जाना चाहती हो, यह बात नहीं है। जिसे तुम चाहती हो, उसके लिए तुम निष्ठापूर्वक प्रतीक्षा नहीं कर सकतीं। आखिर क्यों ? तुम में आत्मनियन्त्रण कब आयेगा, और यदि नहीं आया तो ? मैं तुम्हारे लिए स्वयं अनेक वेदनाएँ सह सकता हूँ नीला, लेकिन तुम यदि अपनी परिधि से निकल गई तब मेरा क्या होगा ? आज हम तुम अपने भविष्य के राजमार्ग के द्वार पर खड़े हैं। तुम्हें तो मैं क्षमा करता ही रहा हूँ नीला लेकिन तुमने मुझे कभी क्षमा नहीं किया है। मैं अपराधी हूँ तुम्हारी भावनाओं का निरादर करने के लिए। काश मैं भी भावना में बह सकता। अपने पर नियन्त्रण खो देता तो तुम खुश हो जातीं ? आखिर पारस्परिक अनुराग की सीमा से हम परे क्यों जायें ? हम सामाजिक प्राणी हैं, एक मर्यादा को समाप्त कर दूसरी का निर्माण करते समय हमें समाज को मान्यता देनी ही पड़ेगी, उसकी अनुमति लेनी ही होगी।' कमल फिर चुप हो गया इस बार उसने नीला की ओर देखा। उसकी आभा फीकी पड़ गई थी, वह विचारमग्न अभी तक कमल के कन्धे से सर टिकाए बैठी थी। हमेशा की तरह आज न जाने क्यों कमल उसकी इस मुद्रा से पिघला नहीं, उसके मन की भड़ास निकली नहीं थी। वह कैसे नीला की भर्त्सना करे, उसे शब्द नहीं मिल रहे थे। उसने सिगरेट नीचे डालकर रौंद दी और कहने लगा, 'तुम मुझ से बस क्षमा ही चाहती हो या और कुछ ? लेकिन इससे होगा क्या ? तुमने अपना कर्त्तव्य भी कभी सोचा है ? तुम मुझे कितना सह-

योग दे रही हो और दोगी ? अब भी तो कुछ नहीं हुआ है नीला। यदि मेरी बनना चाहती हो तो मेरे अनुकूल अपने को ढालो और यदि किसी और की बनना चाहती हो तो तुम्हें उसके अनुकूल बनना चाहिए, तब मुझे छोड़ो। तुम्हें किसी की तो बन कर रहना ही है। यही नारीत्व का आदर्श है और यही उसका आदर। नीला ! तुम अपने भावी जीवन के विषय में सोचो, समाज में अपने स्थान के विषय में सोचो। मैं और क्या कहूँ नीला ? मुझे तुमसे स्नेह है, सहानुभूति है।' वह चुप हो गया। न जाने किस भावना से प्रेरित हो उसने नीला को अपनी बाँई बाँह से अपने पास समेट लिया। नीला सिसकने लगी। संध्या की छाया पहाड़ों की दून में गहरी होती जा रही थी, सिमटती जा रही थी। बाँसुरी का स्वर फिर से उभर आया था। मकानों से धुंआ उठकर बादलों में मिल जाता था। दूर, बहुत दूर वे स्वर्ण खंड-से लगते हिमाच्छादित पहाड़ रंग बदल रहे थे। गुलाबी, जामुनी आभा से अब नीलिमा में बदल रहे थे। रूई के गालों के समान बादल, वादियों में यों हौले हौले उतर रहे थे, जैसे बहुत थक कर अपने रैन-बसेरों में केवल रात काटने के लिए लौट रहे हों।

'कमल मेरे रहनुमा' नीला ने एक सिसकारी भरी और कमल के कन्धे पर बोझ देती हुई उसका हाथ थामे उठ खड़ी हुई। कमल भी खड़ा हो गया। न जाने क्यों कमल को इस रहनुमाई की बात पर इतना तेज़ गुस्सा आया कि उसे लगा कि एक शोला उसके सर में भक्क से निकल गया है। एक क्षण के लिए उसके मन में आया, नीला को उस ढलान से नीचे धकेल दे। उसने अपने सर को एक झटका दिया और नीला की ओर देखा। वह उदास खड़ी थी। कमल का क्षणिक आवेश नीला की उदासी से विलीन हो गया। उसे नीला पर अब तरस आ रहा था।

'चलो नीला ठंड बढ़ रही है' नीला मौन उसके साथ चल दी।

रात के भोजन के बाद नीला उठकर अपने कमरे में चली गई। नीला की माँ ने कमल को सम्बोधन कर कहा,

'बहिन ने मुझे बताया कि नीला और तुम्हारे सम्बन्ध के विषय में तुम्हारे पिताजी के क्या विचार हैं। यदि तुम्हें आपत्ति न हो तो अपने पिताजी का पत्र लेकर बैठक में आ जाओ। मैं तुमसे कुछ बात करना चाहूँगी।'

कमल को नीला के मां की इस सम्बोधन में अधिकार, भावना और आदेश की झलक दिखाई दी। कमल को शुरू ही से वे रोबदार लगी थीं। वे गम्भीर और स्पष्टवादी भी थीं। कमल इस आदेश से कुछ घबराहट-सी अनुभव करने लगा। कमल अपने कमरे में चला गया। उसने पत्र लिया और कुछ सोच कर वहीं बैठ गया। एकाएक बैठक में जाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। उसने सिगरेट जलाई और पत्र पढ़ने लगा। पत्र पढ़कर वह कुछ आश्वस्त हुआ। उसे लगा कि उसने अपने कमरे में अपेक्षाकृत अधिक समय लगाया है। उसने सिगरेट बुझा कर डिब्बी में रख दी और बैठक में चला गया। बाहर बादल घिरे हुए थे। हवा चल रही थी और फुहारें पड़ रही थीं, सर्दी थी। बैठक में आतिशदान में आग जल रही थी। कमरा काफ़ी गर्म था। वहाँ नीला की मां अकेली आतिशदान के पास एक बड़ी गद्दीदार कुर्सी पर बैठी थीं।

'आओ कमल, वह कुर्सी खींच लो' कमल ने बजाय कुर्सी के एक बोल्स्टर खिसका लिया और ऐसे ढंग से बैठ गया कि माता जी से साक्षात्कार भी रहे और वह आग भी सेकता रहे। उसने पत्र नीला की माँ को दे दिया। नीला की मां ने पत्र गौर से पढ़ा और कमल को वापस लौटा दिया। उनने अपने कन्धे पर शाल को ढीला किया और कुर्सी में पीछे की ओर झुक कर आँखें बन्द कर लीं। वे कुछ क्षणों तक ऐसी ही बैठी रहीं, फिर उनने आँखें खोली और कुछ आगे झुक आईं।

'कमल मैंने तुम्हारी बाबत अब तक सिर्फ सुना ही था, देखा तुम्हें आज ही है। नीला ने मुझे बतलाया है। तुम पहले युवक हो जिसके विषय में उसने मुझसे कुछ कहा है। दूसरी बहिन है, जो सदा तुम्हारी स्तुति करती रही है। नीला अभी बच्ची है, बहिन ने ज़माना देखा है।

उनका दृष्टिकोण किसी युवक को देखने और समझने का अलग है और उनके मत में वज़न है। वे कुछ भावुक अवश्य हैं। इसलिए मुझे खुद उत्सुकता हुई तुम्हें देखने की और समझने की। हालांकि हमारा परिचय बहुत सूक्ष्म है फिर भी मुझे तुमसे मिलकर प्रसन्नता ही हुई है। तुम्हें मैंने आज के युवकों से भिन्न पाया है। मुझे तुम्हारे पिताजी के विचार भी उचित और अच्छे लगे हैं। मैं तुमसे कुछ खास बात करना चाहती थी। तुम नीला से विवाह कर लो तो अच्छा है। उसका तुमसे लगाव है और तुम्हारा भी उससे। लेकिन यह सारे जीवन का प्रश्न है। इस लिए मैं कई बातें तुम पर विश्वास कर स्पष्ट कर देना चाहती हूँ ताकि तुम किसी भ्रम में न रहो और भविष्य के विषय में खुलकर सारी परि-स्थितियों के परिप्रेक्ष्य में विचार कर सको।'

'कुछ मैं भी निवेदन करना चाहूँगा'

'अवश्य कहो'

'जब से नीला से मेरा परिचय हुआ है, मेरा व्यवहार उससे बहुत साफ और स्पष्ट रहा है। मैंने उसे समझने का काफ़ी प्रयत्न किया है और उसे अवसर दिया है कि वह मुझे भी समझ सके। लेकिन शायद हम दोनों अब तक एक दूसरे को नहीं समझ सके हैं। नीला आज भी मेरे लिए रहस्यमयी बनी हुई है। उसका व्यवहार बीच बीच में बड़ा शंकास्पद रहा है किन्तु आज की स्थिति में भी मैं उसे अपनाने के लिए तैयार हूँ। मैं सिर्फ उसे अवसर देना चाहता हूँ कि वह अब भी अपने को मेरे अनुकूल ढाल ले। क्या उसके वर्तमान और भावी जीवन के लिए आप उत्तरदायी नहीं हैं?'

कमल ने देखा उसकी इस चोट ने नीला की मां को और गम्भीर बना दिया। वे कुछ देर मौन रहीं, विचारमग्न, फिर बोलीं,

'कमल! तुम एक समझदार और चरित्रवान् लड़के हो। मैं तुम में एक पुत्र पाने की आशा रखती हूँ। मैं मानती हूँ कि मैं नीला को अनुशासन में नहीं रख सकी' कुछ देर मौन रहकर वे बोलीं, 'क्या तुम जन्म-जात और उत्तराधिकार में मिले संस्कारों में विश्वास करते हो?

मैं आज तक भी इन बातों में विश्वास पैदा नहीं कर सकी। और इस दृष्टिकोण से मैंने कभी भी नीला के लालन-पालन का प्रयत्न नहीं किया, और मैं सोचती हूँ कि यहीं मैंने भूल की है' वे कुछ देर रुकीं और फिर कहने लगीं,

'मैं तुम्हारे सामने एक बहुत बड़ा रहस्य आज प्रकट करने जा रही हूँ, क्योंकि न जाने क्यों मुझे तुम्हारे चेहरे और व्यक्तित्व में एक ईमानदारी दिखाई देती है। इस रहस्य को न तो नीला जानती है और न ही उसकी मौसी।—नीला मेरी लड़की नहीं है।' वे इतना कहकर एक दम चुप हो गईं और एक गहरी साँस छोड़कर कुर्सी में लेट गईं, जैसे उन पर लदा भार उतर गया हो। सारा वातावरण भारी-सा और गम्भीर हो गया। बाहर हवा का वेग बढ़ गया था। खिड़कियों की सदों से छन कर हवा सांय सांय कर रही थी। कमल को कुछ सिहरन-सी हुई, उसने आतिशदान में लकड़ियों को अखोरा, आँच फिर तेज़ हो गई। लकड़ी कुछ चटख कर लौ देने लगी। नीला की मां ने बदन पर शाल को उलटा पलटा।

'अभी और भी कुछ शेष है माता जी?' कमल ने मौन भंग किया।

'पूरी कथा ही शेष है, जिसे मैं तुम्हें सुनाना चाहती हूँ।'

'मैं अभी आया।'

इतना कह, कमल उठकर डाइनिंग रूम में चला गया। उसने सिगरेट जलाई। उसका दिमाग सुन्न हो गया था, वह कुछ सोच ही नहीं पा रहा था। ओह बेचारी नीला! एक उपेक्षिता बच्ची। उसके मन में नीला के प्रति दया और सहानुभूति एकाएक ही उमड़ आई थी। उसने इस स्थिति में अपने को नीला के और निकट पाया। इस रहस्योद्घाटन की यह कैसी प्रतिक्रिया? सिगरेट पी कर कमल फिर बैठक में जा बैठा। बैठक में दीवार पर केवल एक बत्ती जल रही थी, उसका मैला पीला प्रकाश कमरे को धूमिल बनाए हुए था। कुछ जलती लकड़ियों के थरथराते प्रकाश में आतिशदान के सामने रखी कुर्सी के पैरों की परछाइयाँ जैसे कमरे के फर्श पर नाच रही हों। कमल अपने स्थान

पर बैठ नीला की मां के मुख पर देखने लगा। वे चुपचाप आँखें बंद किए, पीछे सर झुकाए, बैठी थीं। उनका चेहरा भावहीन और गम्भीर था। आहट पा, सर उठाकर उनने कमल को देखा और फिर आसपास झाँका और ज़रा आगे झुक आई।

'आगे आ जाओ बेटा।' यह बेटा शब्द कमल ने उनके मुख से पहली बार ही सुना था। उसने उनके चेहरे पर वात्सल्य का भाव उतर आया देखा। कमल आगे खिसक आया। नीला की मां कहने लगीं :

'उन दिनों मैं राजपूताने की एक बड़ी रियासत में कन्या विद्यालय की प्रिंसिपल थी। मैं वहाँ की राजकुमारी को पढ़ाती थी। मेरे राजकुमारी के ट्यूटर बनने से पूर्व एक अंग्रेज़ महिला उसकी ट्यूटर थी। उस अंग्रेज़ महिला का महाराजा से अनुचित सम्बन्ध था। जब उसका ऐसा ही सम्बन्ध महाराजा का ए० डी० सी बन गया तो उसे निकाल दिया गया। उसके स्थान पर मुझे रखा गया। राजकुमारी की आयु उस समय लगभग सत्रह साल रही होगी। जिन संस्कारों में वह पली थी और जैसी शिक्षा और आचार उसे अपनी अंग्रेज़ गवर्नेस से मिले थे, उनके कारण वह काफ़ी शोख, उद्दण्ड और अहंभावी थी। शुरू में उसके व्यवहार में मेरे प्रति घृणा उच्छृंखलता और विद्रोह था। लेकिन धीरे-धीरे वह मुझसे खुलने लगी। इस प्रकार साल भर से ऊपर हो गया था और उसका मेरे प्रति संकोच लगभग मिट गया था और हम दोनों में आत्मीयता बढ़ चली थी। कुछ दिन से मैं उसके शरीर में परिवर्तन देख रही थी और एक दिन मैंने इसका उल्लेख उससे किया ही। पहले तो वह सकुचाई किन्तु बहाना न पा उसे बतलाना ही पड़ा कि उसकी इस अवस्था से उसे निकालने का शीघ्र ही कोई उपाय होने वाला है और वह महाराजा और दूसरी महारानी के साथ विलायत जाने वाली है। भ्रूणहत्या के विचार ने मुझे विचलित कर दिया। मैं विधवा और निस्संतान हूँ। मैंने कई दिन तक इस स्थिति पर विचार किया और एक योजना बना ली, जिसे मैंने राजकुमारी को बतलाया। वह सहमत नहीं हुई। वह संतानोत्पत्ति के कष्ट से बचना चाहती थी, मगर दूसरे मार्ग में

मैंने जीवन का भय दिखलाया तो वह कुछ मानी। यह बात महाराज तक पहुँची और उनने मुझे बुलाकर योजना समझी। वे किसी भी प्रकार की शंकामूलक स्थिति के लिए तैयार नहीं थे। विदेश में बात छुप सकती थी। मैंने अब राजकुमारी को मृत्यु का भय दिखा कर जिद पर अड़ा लिया। मुझे सफलता मिली। मैं उस राजकुमारी को शिलांग ले गई, जहाँ उसे अपनी पुत्री घोषित किया और वहीं नीला का जन्म हुआ। रियासत में यह प्रसिद्ध हो गया कि राजकुमारी शिलांग में एक कान्वेन्ट में पढ़ने के लिए भर्ती की गई हैं और मैं उनके साथ उनकी गवर्नेस तथा ट्यूटर की हैसियत से गई हूँ। इस प्रकार एक डेढ़ वर्ष निकाला। छः सात मास बाद ही मैंने योजनानुसार, अस्वस्थता का बहाना लेकर अवकाश लेने के लिए लिखा पढ़ी शुरू कर दी। आखिर मुझे अवकाश मिल गया और उसके साथ ही मुँह बंद रखने के लिए काफी धन। मैं नीला को लेकर यहाँ चली आई और उस धन से यह जायदाद खरीद कर बच्चों की यह पाठशाला खोल ली है। संक्षेप में यही वह रहस्य है। नीला कुत्सित वासना की प्रतीक है और प्रबल वासना के कुछ अंश उसकी रगों में हैं।' वे चुप हो गईं।

'और नीला की असली माँ कहाँ है' कमल ने पूछा।

'उत्तर प्रदेश की रियासत हर्षनगर की रानी' और सहसा ही उनने अपनी जीभ दाँतों तले दबाली। कमल खामोश, उस रहस्य की गहराईयों में जैसे डूब गया हो। नीला की मां ने यह उबा देने वाला मौन भंग किया।

'अब बोलो कमल, क्या नीला अब भी तुम्हें स्वीकार है ?'

कमल एकदम कोई उत्तर नहीं दे सका। कुछ सोच कर बोला,

'यदि नीला अब भी मेरे प्रति निष्ठावान रह सके तो मैं उससे विवाह करने का वचन देता हूँ।'

'जीते रहो बेटा' उनने कुछ इस ढंग से कहा जैसे उन पर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो। उनने अपना दाहिना हाथ कमल के माथे पर रख दिया। उनके चेहरे की सारी कठोरता और रौब जैसे एकबारगी

ही धुल गया और सुमधुर ममता उनके मुख पर झलक आई, उनकी आँखें डबडबा आईं।

एक झटके के साथ कमल की तंद्रा भंग हुई। गाड़ी किसी स्टेशन के बाहर के सिगनल पर रुक गई थी। कारण समझ नहीं आया। प्रायः सभी मुसाफिर उत्सुक से नजर आए। कमल ने चिताम्बरे और नीला की ओर देखा, चिताम्बरे सीट पर नहीं था। नीला उत्सुकता से बाहर देख रही थी। कमल भी बाहर निकल गया। मालूम हुआ कि मालगाड़ी का एक डिब्बा अगले स्टेशन पर पटरी से उतर गया था। उसे उठाने के लिए मुख्य पटरी पर क्रेन लगी है, लाइन साफ होने में लगभग एक घण्टा लग सकता है। गाड़ी से बाहर काफ़ी यात्री एकत्रित हो गए थे। कमल विचारों में खोया पहले तो गाड़ी के पीछे की ओर निकल गया और चेहरों को, कपड़ों को, रंगों को देखता वह वापस लौट पड़ा और एक मिट्टी के ढेर पर बैठ गया। उसे खुली हवा बड़ी सुखद लगी, डिब्बे के घुटन से तो बहुत अच्छी। उसने सिगरेट जलाई और आराम से पीने लगा।

कमल अपने विचारों में इतना खो गया था कि वह अब भी अपने को गुज़रे ज़माने और पुरानी यादों से परे नहीं खींच पाया था। वास्तविक जगत का उसके मन पर असर कम था।

तो वह नीला और मौसी के साथ कौसानी गया था। कितना एकांत और सुन्दर स्थान था। जिस चोटी पर किसी समय के चाय-बगान के अंग्रेज़ मालिक का बंगला बना था, वह चोटी आगे फैली पहाड़ियों की चोटियों और घाटियों की लहरों से ऊपर थी। बंगले के पीछे की ढलान ऊपर उठ गई थी और देवदार के पेड़ों से ढकी थी। और ठीक सामने ? सामने जो पहाड़ आकाश को स्पर्श करते थे, वे नगाधिराज के भव्य धवल मस्तक थे, त्रिशूल नन्दादेवी, नन्दाकोट। कमल की सिगरेट समाप्त हो गई थी, उसके साथ ही विचार श्रृंखला भी टूटी। वह उठा। उसके बिलकुल सामने, खिड़की से नीला उसकी ओर झांक रही थी। उसे कुछ अजीब-सा लगा तो वह अनायास ही

उस खिड़की के सामने आ बैठा था। वह अपनी इस मनःस्थिति पर मुस्कुरा दिया। वह डिब्बे में जाकर अपनी सीट पर बैठ गया। हिमालय की वे भव्य, प्रभावकारी, हिममंडित चोटियाँ उसके मन पर छाई हुई थीं। उन्ही की याद में खोया कमल सीट में लेट सा गया और उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं।

जब वे कौसानी पहुँचे थे, लगभग चार बजे थे। यह मौसम पहाड़ों में अक्सर खुला नहीं रहता लेकिन भाग्य से आकाश में बादलों का जमाव कम था। दूर बाईं ओर बादल गहरे थे और वर्षा हो रही थी। बंगले में सामान जमवा कर तीनों बरामदे में आ बैठे जो त्रिशूल नन्दादेवी आदि पर्वत-मालाओं की ओर खुला था। नीला और मौसी एक कमरे में ठहरे थे और कमल दूसरे में। वे तीनों मौन, उस दृश्य को देख रहे थे। बादलों की ही चाल से, नीचे घाटियों से उनकी परछाइयाँ भाग रही थीं। एक छाया देवदार की हल्की चमकीली हरियाली को गहरे रंग में रंगती हुई आगे बढ़ जाती थी। और पीछे से लगा आता प्रकाश उन्हें जैसे धो पौंछ कर फिर उजला बना जाता था। सूर्य अस्ताचल की ओर जा रहा था। उसका स्वर्णिम प्रकाश हिममंडित शिखरों की रजत आभा में बदल रहा था और जैसे जैसे सूर्य रक्तरंजित होकर क्षितिज से ओझल होते होते अम्बर में रंग बदल रहा था, वैसे ही हिमांचल पर भी एक रंग जाता और एक आता था। बड़ा मनोहारी दृश्य था। बादल, आकाश से धीरे-धीरे नीचे घाटियों की ओर उतर रहे थे। जैसे गगन विहारी पक्षी अपने बसेरों में लौट रहे हों और देखते-देखते ही बादलों ने उन हिम-शिखरों को अपने आँचल में छुपा लिया। नौकर चाय ले आया था, उसकी सूचना ने तीनों का ध्यान भंग किया। नीला ने तीनों के लिए चाय बनाई और वे पीने लगे। मौसी ने मौन भंग किया। उनकी इतनी लम्बी खामोशी विस्मय-कारी थी।

'कितना सुन्दर स्थान है, कितना शांत वातावरण है, मन जैसे एकाग्र हो जाता है, समाधिस्थ हो जाता है।'

जी, तभी हमारे देश के विद्वान, विचारक, कवि गरा ध्यानावस्थित होकर चिंतन और मनन के लिए हिमालय को ही उपयुक्त स्थान मानते थे' कमल ने अपने विचार प्रकट किए।

'सचमुच यहाँ आने पर ऐसा मालूम होता है जैसे किसी नई दुनिया में आ गए हों।' मौसी ने उत्तर दिया। नीला मौन ही बनी रही। चाय समाप्त कर कमल उठ खड़ा हुआ।

'मैं जरा टहल आऊँ' और वह जाने के लिए मुड़ा। नीला बराबर उदास बनी हुई थी, इसलिए उससे चलने के लिए कहने का साहस कमल को हुआ नहीं। मौसी कहने लगीं :

'बाहर सर्दी बढ़ रही है नहीं तो मैं भी चलती। तुम घूम आओ, मैं खाने की जुगाड़ लगवाती हूँ।' अभी अंधेरा नहीं हुआ था। कमल चलने के लिए मुड़ा।

'मैं भी चल रही हूँ' नीला बोली और कमल की बगल में आ गई। वे सरकारी डाकबंगले के अहाते में चले गए। वहाँ से पहाड़ के दोनों ओर का दृश्य दिखलाई पड़ता था। दक्षिण में एक चौड़ी घाटी थी जिसमें होकर एक पहाड़ी नदी बह रही थी। उसके किनारे एक छोटा-सा गाँव था। चारों ओर पत्थरों की दीवारों से घिरे खेत थे और दूर दूर तक वही सीढ़ीनुमा खेत धान की हरियाली से खचित। घरों से धुंआ उठ रहा था। कोई व्यक्ति ऊँचे स्वर में पहाड़ी धुन गा रहा था। अंधकार सिमट रहा था। गाँव में घर आते मवेशियों की आवाज़ें तथा पुरुष स्त्रियों का सम्मिलित स्वर घाटी में गूंजता, जैसे पाताल से आता सुनाई पड़ रहा था। दोनों दूसरी ओर मुड़ गए। नीचे सड़क की घूम पर कुछ मकान बने थे, कुछ दूकानें भी थीं, जिन पर पहाड़ी कुली बैठे चाय और बीड़ी पी रहे थे। कुछ होटल के चूल्हे के आगे बैठे स्वेटर बुन रहे थे और उनके सरल, मुस्कुराते चेहरे अंतर्वेदना को छुपाए, चमक रहे थे। तभी बादल उतर आया और सारा दृश्य ओझल हो गया। सर्दी भी बढ़ गई थी।

'चलो नीला, अब क्या देखना है, इस कुहासे में ? बस हम दोनों ही

एक दूसरे को दिख रहे हैं।' नीला हँसी और उसने कमल के कन्धे पर हाथ रख दिया। कमल ने उसे अपने पास समेट लिया और दोनों इसी प्रकार हिले मिले वापस बंगले पर आ गए।

दोनों मौसी के कमरे में चले गए। कमरे में आग जल रही थी। उन लकड़ियों के जलने से एक अजीब गंध कमरे में फैल गई थी। कमरा गरम था। मौसी आग सेक रही थी। थोड़ी देर वे आपस में बातें करते रहे। नीला की उदासी अब भी बनी हुई थी। नौकर ने खाने की सूचना दी जो वहीं मंगा लिया गया। खाना खाकर कमल बाहर बरामदे में आ गया। उसे कॉफ़ी पीने की इच्छा हुई, वह अपने साथ कॉफ़ी रख लाया था। वह कॉफ़ी का डिब्बा लेकर रसोई में चला गया। नौकर को कॉफ़ी बना कर लाने की हिदायत देकर वह वापस लौट आया। एक आराम कुर्सी पर बैठकर उसने सिगरेट जलाई। बादल गहरे हो गये थे और उनके साथ ही अंधकार भी। कभी कभी हिम-शिखरों की झलक मात्र दिख जाती थी मानो घने मेघों में दूर कहीं हल्की सी बिजली चमक उठी हो। नीला धीरे से आकर उसके पास कुर्सी खींच कर बैठ गई।

'कमल तुम सहसा ही इतने बदल क्यों गए, तुम्हारा सारा उल्लास कहाँ गया ?'

'कहीं तो नहीं, यह बैठा तो है मेरे पास।' कमल ने हौले से नीला का कन्धा छू दिया। नौकर कॉफ़ी रख गया।

'देखो अगर न खाया हो तो खाकर सो रहो, बर्तन मैं अपने कमरे में रख लूँगा' कमल ने नौकर से कहा। वह सर हिला कर चला गया। कमल ने दोनों के लिए कॉफ़ी बनाई और पीने लगा।

'मैं अपने मन को चिर अपेक्षित सुख की प्राप्ति के लिए बाँधने के लिए तैयार कर रही हूँ।' नीला बोली।

'मैं प्रसन्न हूँ नीला, तुम अपने प्रयास में सफल रहो। यह प्रतीक्षा का समय लम्बा नहीं होगा, क्यों ?'

'मैं इन दिनों काफ़ी सोचती रही हूँ कमल। मैं समझती हूँ कि तुम्हारी

बन कर मैं सदा सुरक्षित और सुखी रह सकूँगी। लेकिन मेरा मन आज भी चंचल है। मैं उस पर नियंत्रण नहीं कर पाती हूँ। तुम्हारी निकटता से मेरा सारा शरीर रोमांचित हो उठता है और तुम्हें पाने की तीव्र लालसा मेरे हृदय में जाग उठती है। यह मेरी कमज़ोरी नहीं तो क्या है कमल ?' कमल ने नीला के कंधे पर अपनी बाँह फैला दी। उसका मन शांत था। वह नीला के स्पर्श से रोमांचित नहीं हुआ। सहसा नीला कमल के ऊपर आ रही। उसने कसकर कमल को अपनी बाँहों में जकड़ लिया और अपना मुख कमल के होठों पर रख दिया। उसके होठ फड़क रहे थे, जल रहे थे, और वह हाँफ रही थी। कमल इस अप्रत्याशित घटना से हतप्रभ-सा हो गया। उसने नीला के कंधे पकड़ कर उसे बलपूर्वक अपने से दूर करने का प्रयत्न किया। अब वह इसमें सफल नहीं हुआ तो नीला को अपनी बाँहों में समटे खड़ा हो गया। नीला लता के समान उससे चिपटी रही। यह सब कुछ इतना अकस्मात् हुआ और इसमें कमल को जो बल प्रयोग करना पड़ा, उसके परिणामस्वरूप उसका मन विचलित हो उठा था। नीला उसके इतने निकट होते हुए भी उसमें वासना नहीं जगा सकी थी। उसने बहुत धीरे से कहा,

'नीला ! होश में आओ। पागल हो गई हो क्या ?'

'काश तुम मेरे अन्दर की ज्वाला को समझ सकते। कमल मैं तुम्हें पाना चाहती हूँ।'

'मैं तुम्हारा ही हूँ नीला, लेकिन यह असंयत व्यवहार कैसा ? मैं प्रार्थना करता हूँ नीला विचलित न हो, शांत रहो, हमारे सम्मिलन का समय दूर नहीं है। शांत रहो नीला।' नीला बुरी तरह हाँफ रही थी। कमल ने उसे आराम कुर्सी पर बैठा दिया, वह उसके सर पर हाथ फेरने लगा। वह झुका और उसने नीला का माथा चूम लिया। कमल का सारा शरीर इस बार एकबारगी ही झन्ना गया। इस एक क्षण वह कुछ सोचता रहा फिर उसने नीला को उठाया।

'जाओ अब सो रहो' इतना कह कर उसने बाँह पकड़ कर नीला

को उठाया। बरबस ही उसने नीला का हाथ दबा दिया। उसका सारा शरीर रोमांचित हो उठा। उसे लग रहा था कि शायद अब वह अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रख सकेगा। उसने हौले से नीला को उसके कमरे में धकेल दिया और झपट कर अपने कमरे में चला गया। उसने अन्दर से दरवाज़े की चटखनी चढ़ा दी और ओढ़ कर पलंग पर लेट गया। उसका मन बेचैन था। शरीर अकड़-सा चला था और एक अजीब प्रकार का विद्युतमय प्रवाह उसकी शिराओं में दौड़ रहा था, जो उसे अप्रिय नहीं लगा। उसका दिल धड़क रहा था। वासना की तीव्र लालसा उसके मानस पर छा गई थी। वह सोचने लगा कि उसने नीला को क्यों जाने दिया। तृप्ति के लिए वह व्याकुलता अनुभव कर रहा था। उसके दिमाग में एक उन्माद-सा बस गया था, लेकिन अब वह बेबस था। वह बेचैनी से करवटें बदलने लगा। मौसी के खर्राटे उसे अस्पष्ट सुनाई दे रहे थे। उसी उन्माद और व्यथा में उसने दरवाज़े पर हल्की-सी दस्तक सुनी। उसने सोचा भ्रम है, क्योंकि नीला उसके मन पर छाई हुई थी और वह कल्पना में ऐसी ही कुछ बात सोच भी रहा था। फिर हल्की-सी दस्तक हुई और उसे कुछ ऐसा भ्रम हुआ जैसे कोई हौले से उसे पुकार रहा है। वह बिस्तर से उठा और दरवाज़े के पास गया। इस बार उसे भ्रम नहीं रहा, नीला ही उसे पुकार रही थी। वह बहुत ही उत्तेजित हो गया। उसके मस्तिष्क में एक बार बिजली-सी कौंध गई कि वह दरवाज़ा खोल दे और नीला को दबोच ले, उसका हाथ अनायास ही चटखनी पर चला गया लेकिन दूसरे ही क्षण वह मुड़ा। उसका सर भन्ना गया, वह विपरीत दिशा में चल दिया। गुसलखाने में से होता हुआ वह बंगले के बाहर निकल गया। बाहर पहुँचते ही उसे शीतल वायु का झकोरा लगा और वह सिहर उठा। उत्तेजना और आवेश में उसका शरीर काँप रहा था, उसे अपने पर क्रोध आया। कायर, आदर्शवादी। वह तेज़ी में बंगले के पीछे की ढलान पर चढ़ गया और एक देवदार के पेड़ का दासना लगाकर बैठ गया। बाहर के शीतल वातावरण में उसकी उत्तेजना शांत होने

लगी। शरीर अवश और शिथिल हो गया। वह संज्ञाहीन-सा सामने अंधकार में देखने का प्रयत्न कर रहा था। चारों ओर गहरा कुहासा छाया हुआ था। गहरी निस्तब्धता थी जिसे बीच-बीच में सियारों की चीख भंग कर देती थी। न जाने कितनी देर कमल इसी स्थिति में बैठा रहा। बूँदा बाँदी शुरू हो गई थी, कमल को ज़ोर की सर्दी लगने लगी। उसे लगा कि उसकी हड्डियों तक सर्दी घुस गई है और उसकी बोटी-बोटी काँप रही थी। तभी उसने नीचे घाटी से आती मुर्गे की बांग सुनी, उसकी चेतना लौटी। ऐं ? सबेरा हो गया ? वह उठा और वापस बंगले की ओर चल दिया। उसका सारा शरीर काँप रहा था, पैर लड़खड़ा रहे थे। वह अपने बिस्तर में घुस गया और सिगरेट सुलगा कर पीने लगा। उसने रात की सारी घटना पर विचार किया। प्रलोभन, लालसा और वासना पर अपनी इस विजय पर असंतोष हुआ फिर उसका मन पुलकित हो उठा। मगर उसका सर दर्द से फटा जा रहा था। वह बेचैनी से करवटें बदलने लगा। इसी अवस्था में न जाने कब उसकी आँखें झंप गईं। नौकर के आवाज़ देने पर उसकी नींद खुली। उसने कठिनाई से उठकर दरवाज़ा खोला। नौकर ने चाय को पूछा तो ठहर कर लाने को कह वह फिर लेट गया। नौकर दरवाज़ा अटका कर चला गया, कमल फिर सो गया।

इस बार उसकी नींद खुली तब नीला उसके सिरहाने बैठी उसके सर पर हाथ फेर रही थी। कमल ने आँखें खोल दीं, जो बुरी तरह जल रही थीं फिर भी इसकी आँखों में विजय का गर्व था। उसने नीला के मुख पर देखा, उसकी आँखों में निराशा मिली लज्जा थी। फिर भी प्रशांत महासागर के समान शांति और विश्वास फैला हुआ था उसके मुख पर। कमल के प्रति प्रशंसा, आदर और अनुराग मिश्रित चिंता की रेखाएँ भृकुटियों पर स्पष्ट थीं। कमल ने आँखें बन्द कर लीं। जलन से उनकी कोरों पर आँसू ढल आए। नीला ने अपनी मुलायम अंगुलियों से उन्हें पोंछ दिया।

'तुम्हें ज्वर हो गया है कमल, कैसा जी है ?'

'ठीक है नीला, मेरी रानी' और वह सोचने लगा कि नीला के मुख पर यह विरोधी भाव कैसा। निराश कामातुरा की मुद्रा और विरोधी व्यवहार तो कुछ विस्फोटक ही होना चाहिए था। ऐसा क्यों ? कितना विचित्र और अस्वाभाविक, अप्रत्याशित। लेकिन मनुष्य क्या किन्हीं निर्धारित सिद्धान्तों में बंध भी सका है ? कितना वैचित्र्य है उसके स्वभाव में।

खड़क-खड़क-खड़क-खट---डीलक्स फिर चल दी थी। कमल उठ कर बाहर चला गया और सिगरेट पीने लगा। खिड़की से बाहर के दृश्य भागते चले जा रहे थे। वही पेड़ पौधे और तार के खम्भे। उसके मन पर विगत काल की घटनाएँ कुछ इतनी गहरी छा गई थीं कि वह उनसे निकल नहीं पा रहा था। उसने अपने विचारों को एक झटका दिया। चलते ख्यालातों से निकलने का बस एक ही मार्ग-उसकी समझ में आया और वह अपने परिवार के विषय में सोचने लगा। उसकी पत्नी की छवि जैसे साकार होकर उसके कल्पना पट पर उभर आई। इससे उसे सान्त्वना मिली, शांति मिली, और बारी बारी उसके बच्चों के चेहरे उसके मानस पट पर आते और जाते रहे। वह फिर अपनी सीट पर आकर बैठ गया।

तो वह उसी अवस्था में अस्वस्थ हो कौसानी से नैनीताल आ गया था। वह दो दिन बीमार रहा, उसने खाना छोड़ दिया था, केवल चाय और कॉफ़ी लेता रहा। नीला बराबर उसके पास बनी रही। साधारण उपचार और आराम से कमल स्वस्थ हो गया था। वह होटल से उठ कर तालाब के किनारे जाकर बेंच पर बैठ जाया करता था। नीला उसके पास बनी रहती थी, उसे विचार आता था कि बेचारी उसके कारण घूम फिर भी नहीं पाती इसलिए वह आग्रह कर नीला को घूमने भेज देता था। वह आगामी दो दिन बाहर नहीं जा सका था। कभी मौसी और नीला साथ जातीं और कभी नीला अकेली। दूसरे दिन नीला देर से होटल लौटी। कमल ने उसकी प्रतीक्षा में भोजन नहीं किया था। जब नीला आई तो कमल को उसकी मुखमुद्रा

कुछ बदली सी नज़र आई। नीला उसके मन में इतना बस गई थी कि उसकी बदली हुई सूक्ष्मतम भंगिमा भी उससे छुपी नहीं रहती थी। बड़ी आत्मीयता से वह नीला को संबोधन कर बोला, 'नीला आज बड़ी देर कर दी, मुझे जोर की भूख लगी है। आओ खाना खा लें'

'मैं खा चुकी हूं, तुम खा लो' कुछ बेरुखी से नीला ने उत्तर दिया या शायद कमल को ऐसा आभास हुआ। कमल की उपेक्षा-सी करती नीला इठलाती अपने कमरे में चली गई। कमल को एक धक्का सा-लगा, वेदना हुई। उसने उखड़े उखड़े मन से खाना खाने का प्रयत्न किया जो खाया नहीं गया, और अपने कमरे में जाकर लेट गया। उसे नींद नहीं आई। उसने सोचा नीला को फिर से यह क्या हो गया है, वह उसके सम्मोहन से फिर निकल रही है। क्या कारण हो सकता है आखिर इसका ? उसके द्वारा नीला के स्त्रीत्व की जो उपेक्षा हुई है वह या उसकी अतृप्त वासना की यह प्रतिक्रिया है ? कहीं ऐसा तो नहीं है कि उसकी दबी वासना ने उसे फिर किसी युवक की ओर आकर्षित कर दिया है ? वह अपने अस्वस्थ शरीर के कारण, थके मन से अधिक नहीं सोच सका। मन में एक प्रश्न रखे और बेचैनी लिये वह सो गया।

वह प्रातः जल्दी उठकर घूमने जाना पसन्द करता था। वह अब लगभग स्वस्थ था। नीला उस समय तक उठ नहीं पाती थी और वह अकेला ही जाता था। उस दिन भी वह घूमने अकेला ही चला गया। बादल आकाश में ऊपर उठ गए थे, मौसम साफ और अच्छा था। जब वह घूमकर लौटा सूरज पहाड़ों से ऊपर चढ़ आया था। आज उसे अपेक्षाकृत कुछ देर हो गई थी। जब वह चाय पीने मेज़ पर बैठा तो केवल मौसी ही वहाँ थी, नीला नहीं थी।

'मौसी आज नीला नहीं है'

'वह घूमने चली गई है, कह रही थी कि शायद तुम रास्ते में उसे मिल जाओ तो दोनों साथ लौट आयेंगे।'

'अब तो काफ़ी समय हो गया है' कमल बोला।

'हाँ चलो, हम लोग तो नाश्ता कर ही लें।' वे नाश्ता करने लगे।

नीला का व्यवहार दो एक दिन से बदला हुआ था। कमल को सूनापन और उदासी घेरती जाती थी। नाश्ता करके वह मन बहलाने के ख्याल से फ्लैट की ओर चला गया। रिंक में स्केटिंग हो रहा था। उसे स्केटिंग का शौक था। वह स्केट बाँध कर डामर की सड़कों पर दौड़ लेता था। वह रिंक में चला गया। कुछ लोग स्केटिंग कर रहे थे। वह भी स्केट बंधवा कर हॉल में उतर आया। एक चक्कर के बाद ही उसके पैर जम गए। वह हॉल में सबसे अच्छा स्केटिंग कर रहा था। इतने में एक स्थानीय व्यक्ति उतर आया। वह कमल से स्केटिंग में बीस था। दोनों आपस में होड़-सी करने लगे और अपने हुनर का प्रदर्शन करने लगे। दर्शक प्रशंसा करने लगे थे। तभी कमल ने देखा नीला एक युवक के साथ गैलेरी में आ रही है। युवक हर्षनगर का राजकुमार, कुख्यात लम्पट। कमल को जैसे किसी ने झंझोड़ दिया, नीला इसके साथ ? और, और,—कमल इससे अधिक नहीं सोच सका। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया और पैर लड़खड़ा गए। वह मुड़ा और सीधा वहाँ आ गया, जहाँ नीला और उसका साथी बैठने जा रहे थे। जैसे ही नीला की निगाह कमल पर पड़ी, वह एकदम सफेद पड़ गई। कमल उनके पास ही कुर्सी पर बैठ गया। नीला बुरी तरह घबरा गई थी और धर्म-संकट में जकड़ गई थी। कमल की मुद्रा विकृत हो गई। उसके चेहरे पर क्रूर मुस्कान आई और नीला की ओर देखते हुए उसका एक होठ बुरी तरह मुड़ गया। अपनी इस मन:स्थिति और मुद्रा को छुपाने के लिए उसने सिगरेट मुख में लगाकर जला ली।

'आप तो बहुत अच्छा स्केटिंग करते हैं, आप यहाँ के तो नहीं हैं, मैंने आपको लखनऊ में यूनिवर्सिटी में देखा है। आपका परिचय ?' उस राजकुमार ने एक साथ ही ये प्रश्न कमल से कर डाले।

'मेरा परिचय आपको ये देंगी' कमल ने अपनी ईर्ष्या पर नियंत्रण रखते हुए चेहरे को बहुत ही संयत बनाते हुए मुस्कुराकर नीला की ओर इशारा किया। उसकी मुस्कुराहट की विकृति और भंगिमा का आवेश नीला से शायद छुपा नहीं रहा। वह झपट कर रिंक में उतर

गया। उसने पहाड़ी साथी के आग्रह पर बेमन से एक राउण्ड लिया और स्केट्स जमा कराने चला गया। वह वहाँ से सिनेमा की गेलेरी से हो कर बाहर निकल गया और तेज कदमों से सचिवालय की ओर बढ़ गया।

उसके मस्तिष्क में तूफान उठा हुआ था। तो क्या पहले भी नीला का इसी लड़के से सम्बन्ध रहा है? दोनों में यौन सम्बन्ध भी रहा ही होगा, लड़का बड़ा लम्पट है। वे पारस्परिक रक्त सम्बन्ध के विषय में अनजान हैं और नीला शायद यह भी नहीं जानती होगी कि वह लड़का उससे आयु में छोटा है। यह कैसा संयोग? कमल का सर चकराने लगा। वह परेशान झुंझलाया हुआ, आहत, तेज़-तेज़ कदमों से चलने लगा। उसके सामने नीला और उसके सौतेले भाई राजकुमार की आकृतियाँ उभरी हुई थीं जो उसके मानसिक संतुलन को ज़ोर से झक-झोर रही थीं। वह विचारों को एक दिशा में केन्द्रित नहीं कर पा रहा था। वह चढ़ाई चढ़ रहा था और तेज़ चाल के कारण हाँफ रहा था। वह बाँए मुड़ा और निरुद्देश्य अशांत मन पहाड़ पर चढ़ने लगा। वह चलता ही गया, चलता ही गया। उसके सामने मार्ग नहीं था, आस-पास हिमालय की दृश्यावली नहीं थी, रमणीयता नहीं थी, बस एक तूफान था, वीरानी थी। उसका मन जो उजड़ गया था। वह उस स्थान पर पहुँच गया जहां पहाड़ समाप्त होता था, 'लैंड्स एंड।' उस कगार के नीचे बादल भरे हुए थे। कमल की एकबारगी इच्छा हुई कि वह इन बादलों के सागर में छलांग लगा ले, और वे बादल ऊपर को उड़ चले। और उन्ही बादलों के समान कमल के मन से कूदने का ख्याल भी उड़ने लगा और अब कमल अपनी इस क्षणिक मानसिक कमज़ोरी पर मुस्कुराया। फिर उसके मन पर नीला और राजकुमार छाने लगे और उसे लगा मानो दोनों उसकी ओर व्यंग्यपूर्ण मुस्कराहट से देख रहे हैं। वह आवेश से भर गया, उसका मन उखड़ गया। वह मुड़ा और फिर चल दिया। वह मार्ग नहीं जानता था, जिधर रुख हुआ चल दिया, चलता ही रहा। चीड़ के वनों के बीच, खुले दूब के टापू कितने

मनोरम और सुन्दर थे लेकिन कमल के लिए सब व्यर्थ। एक स्थान पर कुछ पिकनिक करने आए लोग बैठे थे। आदमियों से उसे चिढ़ होने लगी थी, वह निर्जनता चाहता था। वह फिर आगे बढ़ने लगा, इस बार और तेज़ कदमों से चढ़ता उतरता वह चला जा रहा था। उसके पैर दुखने लगे थे, तेज़ प्यास लग आई थी, कनपटी की धमनियाँ चटकने लगी थीं, लेकिन वह चलता ही जा रहा था।

'डोरोशी सीट'। यहाँ एक पहाड़ी कुछ चाय का सामान लिये बैठा था। बहुत से सैलानी एकत्रित थे, बने सँवरे लोग, रंगी पुती, औपचारिकता का निरर्थक प्रदर्शन करती इठलाती स्त्रियाँ। उसे इन सब से नफरत होने लगी थी और जैसे जैसे वह उनके हाव भावों को देखता रहा, उसकी घृणा बढ़ती ही गई। कितनी बनावट है। असत्य का कितना मोटा आवरण है इनके ऊपर। कितना कठोर फिर भी लुभावना आवरण। बाहर कुछ, भीतर कुछ। नीला? हाँ नीला। क्या वह भी इसी तरह किसी कठोर और लुभावने आवरण में ढकी नहीं है? लेकिन आज उसका आवरण जैसे उतर गया। घृणा और क्रोध से कमल का चेहरा विकृत हो गया। वह पहाड़ी चाय वाले के पास बैठ गया। समाज के इस प्राणी में उसे कुछ आत्मीयता दिखाई दी। एक बाबू को अपने निकट बैठते पा उसे कुछ संकोच हुआ। शायद यह अनुभव उसके लिए नया और अप्रत्याशित था। कमल ने पानी मांगा और दो गिलास पी गया, मन कुछ शांत हुआ। दिमाग में अब भी तूफान था। उसने फिर पानी मांगा और एक गिलास और पी गया। उसने एक कप चाय ली, उसे खतम कर सिगरेट जलाई और फिर चल दिया। तेज़ चलने से उसे थकावट होने लगी थी लेकिन उसकी गति मंद नहीं हुई। वह अब पैर घसीट कर चल रहा था, थके भारी कदम, अब और उठने से जवाब दे रहे थे पर वह चल ही रहा था। वह विचारों में खोया, चलता हुआ, तल्ली ताल आ गया। मोटर स्टेण्ड पर आकर जैसे उसकी चेतना एकाएक लौटी, उसे एकदम वहाँ से दूर भाग जाने का विचार आया। उसने गाडी जाने का समय पूछा, एक घण्टा था। उसने कोठगोदाम का टिकिट

ले लिया।

उसके मानस पट पर नीला, उसके मित्र, मौसी और उसकी माँ के चित्र तेज़ी से आ जा रहे थे। कोई नाव वाला पहाड़ी युवक, बाँसुरी पर विरह की दर्द भरी धुन बजा रहा था। वह यहाँ 'सीज़न' में नाव चला कर धन जमा कर रहा था और दूर किसी गाँव में उसकी प्रेयसी या नवोढ़ा पत्नी उसकी प्रतीक्षा कर रही होगी। अरमानों से भरा वह युवक उस दर्द भरी तान में आगे की जाने किन सुखद कल्पनाओं में अपने को भुलाए था। और कमल व्यग्रता से मोटर के रवाना होने की प्रतीक्षा कर रहा था।

मोटर चली और पहाड़ी घुमावदार सड़क पर काठगोदाम की ओर दौड़ चली। नीला की मूर्ति कमल की आँखों के आगे बार बार आ खड़ी होती थी और जैसे वह याचना कर रही हो, क्षमा मांग रही हो, और अपनी बेबसी में कमल का गला भर आया। नीला पीछे छूट गई थी और बहुत धीरे धीरे कमल के जीवन में भी वह पीछे छूट गई बहुत पीछे। दिन गुज़रते गए, स्मृति धुंधली पड़ती गई और उस दिन के बाद नीला उसे आज दिखी थी, आज मिली थी, वर्षों बाद लगभग बीस वर्ष बाद।

खड़क-खड़क-खड़क-खट·······गाड़ी बम्बई के उपनगरों में प्रवेश कर चुकी थी। जैसे वह घटना समाप्त हुई थी, यह सपना भी एक बारगी ही टूट गया। कमल अपनी सीट पर सीधा बैठ गया। उसने मुड़कर नीला को देखा, खूब गौर से, जैसे वह इस सारे कथानक का उपसंहार हो। तो यह वही नीला है। बीस वर्ष पूर्व की नीला। जो उसके जीवन में रोमांस बन कर आई थी और झंझावात बन कर निकल गई और तब कमल पतझड़ में शाखा से टूट कर गिरे एक पत्ते के समान, अस्त व्यस्त, थपेड़े खाता उड़ गया था। वह खिड़की के बाहर देखने लगा। नारियल के पेड़ों के झुरमुटों से, कहीं कहीं गुलमोहर के पेड़ों की छाया में कुछ नये पुराने बंगले-नुमां मकान झाँक रहे थे। डिब्बे में हलचल बढ़ गई थी। अनेक व्यक्ति सामान समेटने में व्यस्त थे।

महिलाएँ अपने कपड़े या बाल या शृंगार को सँवार रही थीं। सारा वातावरण ही बदल गया था। रेल्वे स्टेशनों का दृश्य सामान्य से कुछ भिन्न लगता था। एक के बाद एक स्टेशन आ रहे थे। लोकल गाड़ियाँ आ जा रही थीं। कमल ने अपना बेग उतारा, उसमें जाकेट, शाल, किताब और अखबार रख लिये और निश्चिन्त हो पुनः बैठ गया। गाड़ी बम्बई सेंट्रल में पहुँच ही रही थी कि नीला उसके पास आकर खड़ी हो गई।

'तो हमारे साथ ही ठहर रहे हो न कमल ?'

'हाँ।' कुछ अन्यमनस्क, किंकर्तव्यविमूढ़ से बने कमल ने कहा। उसने गौर से नीला की आँखों में देखा और उसके अन्दर एक हूक सी उठी, गले तक आई और कमल उसे दबा गया। गाड़ी ठहर गई। कमल और नीला प्रायः साथ साथ प्लेटफार्म पर उतरे। चिताम्बरे अपना सामान लेने ब्रेक की ओर चला गया। कमल और नीला गेट की ओर बढ़ रहे थे।

'नमस्ते दादा। अच्छा भाभी जी भी साथ हैं? नमस्ते।' एक पन्द्रह सोलह साल के लड़के ने नीला की ओर गौर से देख कर दोनों हाथ जोड़ दिए। नीला मुस्कुराने लगी।

'आपने भाभी के आने की तो सूचना ही नहीं दी।' इस बार कमल भी हँसा और बोला :

'ये भाभी नहीं हैं, दीदी हैं। और सुनाओ सतीश माताजी तो ठीक हैं? और तुम्हारे क्या हाल हैं?'

'सब कृपा है आपकी' नीला की ओर देखकर कुछ झेंपते हुए सतीश ने कहा : 'भाभी जी को तो आप लाते ही नहीं, मैं देहली गया तब भी दर्शन नहीं कर सका, आप तो बस वादा करके ही रह जाते हैं कि अगली बार लाऊँगा।'

चिताम्बरे कुली पर सामान रखाए आ गया था।

'सतीश, भई इस बार मैं इन लोगों के साथ ठहर रहा हूँ। तुम माता जी से कह देना। मैं अभी चार दिन बम्बई में हूँ। अंतिम दो दिन

तुम्हारे साथ भी रह लूँगा।' कमल ने सतीश का कंधा थपथपाया। सब बाहर आ गए थे। सतीश कुछ निराश हुआ।

'जी, जैसी आज्ञा, माताजी तो इन्तज़ार कर रही होंगी।'

'मैं फारिग होकर वहीं आ रहा हूँ, भोजन भी तुम्हारे साथ ही करूँगा, क्यों चिताम्बरे साहब इजाज़त है न ?'

'ठीक अय, जैसा आपको ठीक लगे, मगर ठेरेंगा अमारे साथ।'

'यह तो है ही' कमल ने कहा। सतीश प्रणाम करके अपनी कार में चला गया। चिताम्बरे के ड्राइवर ने आगे बढ़कर कमल का बैग थाम लिया और एक अजीब निगाह उस पर डाली। चिताम्बरे की कार बड़ी सुन्दर मंझोले आकार की थी, शायद किसी दूतावास या वाणिज्य-वास से ली होगी। नीला और कमल को पिछली सीट पर बैठा कर, चिताम्बरे स्वयं ड्राइवर के पास बैठ गया। गाड़ी चल दी। नीला लगातार कमल की ओर देख रही थी। वह प्रसन्न थी, लेकिन गम्भीर बनी हुई थी। अब वह बीस साल पहले की नीला नहीं थी। चिताम्बरे ने अंग्रेज़ी में प्रश्न किया।

'कमल आपका क्या कार्यक्रम है ?'

'कल मैं प्रायः दिन भर व्यस्त रहूँगा।'

'उसके बाद ?'

'दोपहर में एक बैठक होगी, उस दिन शाम और अगले दो दिन मैं खाली हूँ शायद अगले दिन कोई गोष्ठी रख ली जाय।'

'कमल, मैं आपसे परिचय कराने के लिए कुछ मित्रों को दावत पर बुलाना चाहूँगा।'

'जैसी आपकी इच्छा, मुझे तो इसमें कोई रुचि नहीं, लेकिन यदि आपकी रुचि ही है तो परसों शाम का समय ठीक रहेगा।' फिर रुककर उसने कहा, 'क्षमा कीजिए आखिर बुला किसे रहे हैं आप, कितने व्यक्ति होंगे ?'

'यही कुछ व्यापारी मित्र और कुछ अधिकारियों को सपरिवार बुलाने का विचार है। कोई छः या आठ व्यक्ति कुल होंगे' चिताम्बरे ने

कहा।

'मेरी एक प्रार्थना है। मेरी इच्छा है कि मेरा परिचय आप केवल साहित्य प्रेमी के रूप में ही दें, एम० पी० के रूप में नहीं।' कमल ने आग्रह भरे स्वर में कहा। इस बार कुछ विस्मय करते हुए चिताम्बरे ने मुड़ कर पूछा :

'क्यों ?'

'वैसे ही, व्यक्ति के साधारण परिचय और विशेष परिचय से वातावरण में कुछ अन्तर तो आता ही है। मुझे साधारण परिचय देकर जो कुछ देखने सुनने को मिलता है, उसमें मेरी रुचि है, मुझे आनन्द अनुभव होता है। अस्वाभाविक औपचारिकता और कृत्रिम वातावरण से मैं ऊब गया हूँ।' फिर कुछ रुक कर बोला : 'हाँ, मेरे अधिकार का परिचय न देने से आपके अहं को शायद धक्का लगे अथवा आपका स्वयं का जो महत्व नहीं बन जायेगा, और इसका जो नुकसान आपको हो सकता है, उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ. लेकिन इस लाभ से आगे वंचित नहीं रहेंगे।' कमल हँसा। चिताम्बरे कुछ शर्मा-सा गया किन्तु उसने कमल का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। नीला इस बीच बराबर मौन बनी रही।

जिस मकान के आगे मोटर रुकी, वह एक बंगलेनुमा फ़्लैट का हिस्सा था। मोटर जहाँ रुकी थी, उसके बांई ओर प्रवेश द्वार था। एक छोटी-सी गैलेरी से होकर बैठक में प्रवेश होता था। वह बैठक आधुनिकतम हल्के फर्नीचर से, बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से सजी हुई थी। तार, लोहे की पत्ती और छड़ों की कलापूर्ण जाली के एक आधे पार्टीशन के पीछे, बैठक के ही हिस्से में डाइनिंग रूम था, उसके पीछे पेंढी और किचन था। दूसरी ओर एक दरवाज़ा बरामदे में खुलता था। जिस दीवार में दरवाजा खुलता था, वह सम्पूर्ण काँच की थी, याने लोहे के ढाँचे में काँच जड़े थे। बरमादे में एक ओर लोहे की कलात्मक जाफ़री पर बेल चढ़ी थी, जिसमें अंगुली के आकार के गहरे नारंगी रंग के फूलों के गुच्छे झूम रहे थे। दूसरी ओर एक बैड-रूम था जिसका दरवाज़ा

इस बरामदे में खुलता था। सामने छोटा-सा लॉन था, फूलों की क्यारियाँ थीं, क्रोटन के गमले और पहाड़ीनुमा पत्थरों की जमावट में केक्टस लगे हुए थे। बरामदे में कुछ गमलों में रंग बिरंगे अरबीनुमा पत्तों के पौधे लगे हुए थे, और तारों की चंद कुर्सियाँ पड़ी थीं। नीला और चिताम्बरे के बैड-रूम का दरवाज़ा बैठक में खुलता था। कमल को बरामदे से लगे कमरे में ठहराया गया। इसकी खिड़की बगीची की ओर खुलती थी और खिड़की में बाहर की ओर फूल लगे हुए थे।

कमल अपना सामान यथास्थान रखकर गुसलघर में चला गया। नहा कर कपड़े बदल बरामदे में आया तो नीला वहाँ पहले से ही बैठी थी। उसका सर खुला था और जूड़े में दाउदी के फूलों की वेणी बन्धी थी। उसकी निगाह नीला की वेणी पर टिक गई। कमल को लखनऊ की वह घटना याद आ गई जब उसे अपने तकिए पर एक दिन नीला की वेणी के मुर्झाए सुवासित फूल बिखरे मिले थे। कुछ ऐसे विचार उसके दिमाग में उपजे, जिनमें वह खो जाना चाहता था, झगड़े के बाद पुर्नमिलन और फिर बिछोह की वे स्मृतियाँ मधुर ही तो थीं, इसी नीला के बाबत जो सामने बैठी थी पर आज पराई थी। आहट पा उसने मुड़ कर कमल को देखा तब तक चिताम्बरे भी आ गया। वह कहीं बाहर जाने की पोशाक में था। उन लोगों ने चाय साथ पी।

'आपका क्या कार्यक्रम है ?' चिताम्बरे ने पूछा।

'मुझे मेरे मित्र के यहाँ जाना है, भोजन भी वहीं करूँगा। आप सुविधानुसार अपना कार्य कीजिए। लेकिन मुझे कब तक वापस लौट आना चाहिए'

'जब भी आना मांगता। हम आपको छोड़ देगा। नीला तुम ?' चिताम्बरे नीला की ओर देखकर, रहस्मयी मुद्रा में बोला।

'मैं यहीं ठहरूँगी कुछ आराम करना चाहती हूँ।' नीला ने उत्तर दिया।

'चलो नीला मेरे साथ, यहाँ अकेली क्या करोगी ? सतीश के परिवार से तुम्हारा परिचय भी करा दूँगा, भोजन भी वहीं करना' कमल

ने कहा।

'वाह यह खूब, मान न मान मैं तेरा मेहमान' नीला हँसी 'आप तो ऐसे कह रहे हैं जैसे अपने ही घर ले जा रहे हों।'

'मैं भी तो तुम्हारे यहाँ मान न मान मेहमान बन गया। वह मेरा घर ही सा है, तुम देखोगी। तो चलो' कमल ने आग्रह किया। नीला अन्दर किचन में चली गई, शायद नौकर को हिदायत देने। कमल और चिताम्बरे बाहर आ गए। ड्राइवर ने गाड़ी लगा दी। चिताम्बरे ने उसे छुट्टी कर दी और स्वयं गाड़ी चलाने लगा। कमल और नीला नेपियन सी रोड पर एक बहुत बड़े मकान के सामने उतर गए।

'गुड आइ कम टु पिक यू अप, एट व्हाट टाइम ?' चिताम्बरे ने पूछा।

'नो थैंक्स प्लीज़, वी विल मेनेज टु गो बैक।'

वे दोनों लिफ्ट से तीसरी मंज़िल पर पहुँच गए। लिफ्ट में से बाहर आए। वे बाईं ओर मुड़े और एक दरवाज़े पर लगी घण्टी का बटन दबाया। दरवाज़ा सतीश ने खोला।

'ओ हो। दीदी भी साथ हैं। आइए आइए' सतीश दोनों को लेकर बैठक में चला गया। बैठक अच्छी सजी हुई थी लेकिन अति आधुनिक नहीं थी। दोनों एक सोफा पर बैठ गए।

'क्या लीजिएगा दीदी ?'

'कुछ नहीं भाई, हम लोग चाय पीकर ही चले हैं' नीला ने उत्तर दिया।

'इन्हें तो खाना खिलायेंगे सतीश, चाय पानी से क्या पेट भरते हो ?' कमल ने हँसते हुए कहा।

सतीश की माँ बैठक में आईं। सफेद साड़ी में, मझोले कद की, गेहुँआ रंग की, वे बड़ी प्रभावशाली लगती थीं। आयु उनकी बहुत अधिक नहीं थी लेकिन वैधव्य के कारण वे आयु से अधिक वयस्क नज़र आती थीं। कमल ने चरण स्पर्श किया।

'जियो बेटा दुलहिन तो नीक रहें, बच्चा तो सब आनन्द में हैं ?'

'आपका आशीर्वाद है।'

'इस बार बम्बई मां तुम्हार नई बहिन कहाँ मिल गई'

'यही हैं चाची जी, नीलमणि चिताम्बरे, लगभग बीस वर्ष बाद अचानक कल गाड़ी में मिल गई' कमल ने परिचय देते हुए कहा, 'मेरे साथ लखनऊ में पढ़ती थीं'

सतीश की माँ ने नीला को आशीर्वाद दिया और गौर से उसके चेहरे पर देखा। उनकी भृकुटियाँ कुछ विकृत हो गईं। नीला के चेहरे पर एक हल्की निर्लज्जता और श्रृंगार कुछ ऐसा और तीखा था जो चाची के संस्कारों और पुराने विचारों से मेल नहीं खाता था। फिर बीस वर्ष के विशृंखल और विभिन्न पुरुषों के साथ विलासितामय जीवन गुज़ारने के कारण नीला के चेहरे पर स्त्री सुलभ शालीनता कुछ धुल पुंछ गई थी। कमल को उस पर दया आ गई।

चाची जी आप कुछ दुर्बल दिखाई देती हैं।' कमल ने बात का रुख बदलने के विचार से पूछा।

'अब ऐसा ही है भैया' सतीश की माँ ने गिरी हुई आवाज़ में कहा।

'हम लोग खाना तो खाएंगे ही, अभी समय भी काफी है, आज्ञा हो तो कुछ टहल आएं' फिर कुछ रुक कर बोला,

'मामा नहीं दिखाई दिए चाची'

'आने ही वाला होइए, तुम ज़रूर टहल आओ, मोटर लेय जाइ, सतीश चला जाई तुम्हारे साथ'

'हम पैदल ही टहल आते हैं' इतना कह कमल नीला को लेकर चल दिया। वे हैंगिग गार्डन के एक एकांत स्थान पर जाकर एक बैंच पर बैठ गए।

सामने विशाल महासागर फैला हुआ था, अशांत। ज्वार की ऊँची ऊँची लहरें हरहरा रही थीं। कमल के मन पर इस अगाध असीम जलराशि की विशालता का गम्भीर प्रभाव पड़ा। वह इस दृश्य से इतना प्रभावित हुआ कि कुछ क्षणों के लिए नीला का अस्तित्व ही भूल गया। प्रकृति के विशाल और विराट रूप का सदा ही कमल के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था और नियंता की सृष्टि के इन रूपों में

वह खो जाया करता था। नीला ने मौन भंग किया :

'तुम पर प्रकृति का ऐसा क्या प्रभाव है कि तुम उसमें बिल्कुल ही खो जाते हो ?'

'प्रकृति का नहीं बल्कि इसके नियंता का। सागर की अथाह विशालता का और नगाधिराज हिमालय की भव्यता का प्रभाव मेरे मन पर गहरा ही पड़ता है। मैं अवाक् रह जाता हूँ। तुम भी तो प्रकृति का ही स्वरूप हो नीला। तुम में भी तो मैं खोया ही रहा लेकिन प्रकृति की जो विशालता सामने फैली है, उसे मैं समेट नहीं सकता शायद इसी तरह तुम्हें भी समेट नहीं सका' कमल ने कहा।

'तुम नैनीताल से एकदम ही क्यों चले आए थे कमल ?'

'मेरे पास न तो इसका उत्तर है, न देने को कोई सफाई'

'मुझे तुम्हारा एक सहारा था। उसके आसरे मैंने कई बार उबरने का प्रत्यन किया लेकिन तुम मुझे मंझधार में छोड़कर चले गये और मैं आज तक उस धारा में बह रही हूँ। अच्छा होता डूब जाती।'

'तो तुम आज भी यही मानती हो कि तुम्हारी इस दशा के लिए मैं उत्तरदायी हूँ ?'

'न मानने का कोई कारण भी तो नहीं है' सागर की लहरों की ओर अपलक निहारते हुए नीला ने कहा।

'तो आखिर कैसे, क्यों ?'

'तुम कभी कभी कितने ईर्ष्यालु हो जाया करते थे कमल ? और यदि भावना में न बह जाते तो क्या आज मेरी यह दशा होती ? क्या तुम्हारा मेरे ऊपर कोई अधिकार ही नहीं था ? क्या तुमने एक बार भी मुझे बलपूर्वक रोकने की कोशिश की ? मुझे दंड दिया ?'

'मुझे क्या अधिकार था नीला, बल प्रयोग या दंड प्रयोग करने का ? क्या तुम में मेरी अंधनिष्ठा तुम्हारे मन परिवर्तन को रोकने के लिए काफी नहीं थी ? मैं अब कह सकता हूँ कि वास्तव में मेरी निष्ठा तुम्हें रोकने में सक्षम नहीं थी।'

'कमल...............'

'तुम शायद आज स्वीकार करो कि मैं सदैव तुम्हारे विषय में सब कुछ जानते हुए भी उसकी उपेक्षा करता रहा। शायद तुम यह तब भी जानती होगी। लेकिन तुमने मेरी भावना और निष्ठा की निरंतर उपेक्षा की। मैं उस समय तक सब सहता रहा और भूलता रहा, जब तक तुम्हारे नाटक परदे के पीछे खेले जाते रहे। लेकिन जब परदा एक बार उठा तो........।'

'बस करो कमल। लेकिन तुम प्रमाण पाकर मुझे मारते मुझे दंड देते, मैं सब सहन करती। तुमने तो वादा किया था मुझे अपने अनुकूल बनाने का। फिर बनाया क्यों नहीं, पलायन क्यों किया ?'

'जब बेबसी में मनुष्य के मन पर गहरा आघात लगता है तो वह या तो आत्महत्या करता है या फिर पलायन।'

नीला ने एक वेदना भरी निःश्वास छोड़ी और बोली,

'मैंने अपने को सामाजिक बंधनों में बाँध कर रखना कभी भी स्वीकार नहीं किया। अपने भावी जीवन का मार्ग चुनने में भी मुझे किसी का हस्तक्षेप गवारा नहीं था। मैं स्त्री के अबला और निराश्रिता कहलाने में भी विश्वास नहीं रखती थी। इस तरह मैं अपने विचारों और दृष्टिकोण से तो ठीक ही मार्ग पर जा रही थी। मेरी यह मान्यता रही है कि पुरुष-मात्र स्त्री जाति को सदैव ही गुलाम बनाए रखने, उसका शोषण और उसके जीवन से खिलवाड़ करते रहने की चेष्टा करता रहा है। लेकिन जैसे जैसे समय बीतता गया, मुझे स्वयं में भी कई दोष दिखाई देने लगे। क्या मैं किसी एक पुरुष की ही गुलाम बन कर नहीं रह सकती थी ?'

'जहाँ विवेक और सही दिशा में सोचने का अभाव होता है वहाँ नियंत्रण सहायक ही हो सकता है। अविवेक पुरुषों और स्त्रियों दोनों ही में किसी में अधिक और किसी में कम भी होता ही है। तो इस स्वच्छंद, नियंत्रण विहीन, अविवेकपूर्ण विचार से बिताए ज़ीवन के तुम पर जो परिणाम हुए वे तो तुम्हारे सामने आज स्पष्ट ही हैं ?

'तुम ठीक कह रहे हो कमल, लेकिन मैं तुम्हें उन पुरुषों में नहीं

मानती न मान ही पाई, जब जब भी मैंने तुम्हारे चरित्र और व्यक्तित्व के विषय में सोचा। उस समय से सोचा जब से मैंने सोचना सीखा, मैं तुम्हें इस समाज के इतर पुरुषों से ऊपर पाती हूँ। तुमने अभी जो कुछ कहा, उसे कह कर तुम बड़ी चतुराई से अपने अनुत्तरदायी व्यवहार से बच जाना चाहते हो।'

'तब ठीक है यही सही, मैं ही उत्तरदायी हूँ नीला।' कमल कुछ रुका, उसने नीला की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा और आगे कहने लगा, 'शायद जीवन में विविधता तुम्हारे लिए बहुत बड़ा आकर्षण था और उस आयु में, मनोदशा में तुम यौन मनोविकारों के विषय में सोच भी नहीं सकती थी। और भी कई कारण हैं तुम्हारे इस आचरण की पृष्ठभूमि में जो आज तक तुम्हारे लिए तो रहस्य हैं ही, मैं भी उनका विश्लेषण ठीक से नहीं कर सका।' इतना कहकर कमल एकदम मौन हो गया। नीला भी खामोश बनी रही। कमल ने सिगरेट जला ली। कुछ देर बाद नीला बोली,

'वह रहस्य क्या है कमल जिसका उल्लेख तुमने अभी अभी किया?'

'उसे रहस्य ही बना रहने दो नीला'

'जैसी तुम्हारी इच्छा' नीला ने फिर एक निश्वास छोड़ा।

दोनों कुछ देर चुपचाप बैठे रहे, अपने अपने में खोए।

सागर की उत्ताल हिलोरें, बड़े वेग से किनारे से टकरा जाती थीं और फिर कुछ ऐसी चपलता से पीछे सिमट सी जाती थीं मानो दुबारा और भी बड़ी चोट करने की तैयारी कर रही हों। कमल उनकी ओर अपलक निहार रहा था। वह सहसा नीला की ओर मुड़ा, और उसे एकटक अपनी ओर निहारते पा उसे विस्मय हुआ। वह बोला,

'इन बीस वर्षों में क्या करती रही हो? कुछ अपनी भी तो कहो ना।'

'क्या करोगे सुनकर कमल? रहने दो। वह सब तुम्हें सुना कर इस बार मैं तुम्हें खोना नहीं चाहूँगी'

'यह कैसे अनुमान लगाया तुमने? नैनीताल की परिस्थितियों

और आज की परिस्थितियों में कितना अन्तर है, तब के कमल में और आज के कमल में भी अन्तर है।' नीला कुछ देर चुप रही फिर ज़मीन की ओर निगाह कर बोली,

'अधिकार और धन का क्या मेल है कमल ? अधिकार से धन आता है या धन से अधिकार ? मैं इसे समझ नहीं सकी। मैंने दोनों रूप बहुत निकट से देखे हैं, अधिकार हो या धन, दोनों ही पतन के द्वार खोल देते हैं। तो मेरी कथा सुनो—वह ताल्लुकेदार का लड़का मुझे एक दिन कलकत्ते में अकेला छोड़कर कहीं चला गया। मैं उस बड़े शहर में निराश्रय और अकेली रह गई हूँ, इसका आभास मुझे दूसरे दिन हुआ जब वह रात तक नहीं लौटा। जिस होटल में मैं ठहरी थी, उसमें रहती हुई मैं चार दिन तक उस राजकुमार की प्रतीक्षा करती रही, वह नहीं लौटा। मैं घबरा गई, मेरे पास होटल का चार दिन का किराया देने तक का पैसा नहीं था, एक कठिन समस्या सामने थी। मैं अपनी माँ और मौसी से सहायता मांग सकती थी, मगर लज्जा, संकोच और मेरा अहं बीच में आए। पाँचवें दिन वही हुआ, जिसका मुझे डर था। होटल का मैनेजर सशंक हो गया था। उसने किराया मांग लिया, मैंने उसकी खुशामद की, मगर व्यर्थ। आखिर एक दिन का समय उसने मुझे दिया। मैंने उसी दिन कुँवर साहब के एक मुसलमान व्यापारी मित्र को टेलीफोन किया। इस व्यक्ति से कलकत्ता प्रवास में हम लोगों की घनिष्ठता हो गई थी। जब मैंने उसे अपनी कठिनाई बतलाई और सहायता की प्रार्थना की तो वह हँसा। वह हँसी जैसे चुभ गई। हँसी का वह लहज़ा आज भी याद है, कितनी कटु और व्यंग्यपूर्ण थी। और उसके शब्द 'तो आप कुँवर साहब की धर्मपत्नी नहीं हैं—अब खुलासा हुआ' मैं जलकर सिमट कर रह गई। उसने मैनेजर से बात की। एक हफ्ते बाद मैं होटल से एक मकान में पहुँचा दी गई। जिस दिन मैं उस मकान में पहुँची, उसी दिन उस व्यक्ति ने मेरे और उसके बीच की दीवार को तोड़ दिया। वह बड़ा कामुक था, कठोर था, मगर उसके व्यवहार में एक मुगल सामंत जैसी शालीनता थी, बोलचाल में नफासत थी, लेकिन उसकी

निगाहों में न जाने कैसी एक सम्मोहन शक्ति थी, कि हर तरह का मेरा दुराग्रह मोम जैसा पिघल जाता था। मैं उसकी शालीनता से आकर्षित, उसके वैभव पर मोहित, अपने सपनों की दुनिया में खोई हुई रहती थी। तब मेरे जीवन में एक और मोड़ आया और इस मोड़ पर आकर मैंने अनुभव किया कि धन से अधिकार कैसे प्राप्त किया जाता है।' वह कुछ थमी, उसने गला साफ किया और फिर कहना शुरू किया, कमल ने अब अपना रुख सामने की ओर से मोड़कर नीला की ओर कर लिया।

'उस मुसलमान व्यापारी का व्यवसाय बढ़ रहा था। राज्य बदल गया था, व्यक्ति बदल गए थे, अधिकार कुछ ऐसे अनाधिकारियों के हाथों में आ गया था जो धन के हाथों बिक रहे थे, और इस स्थिति में आकर मैंने देखा कि अधिकार से धन कैसे आता है!'

इतना कह, नीला ने कमल की ओर निहारा। वह न जाने कब से नीला की ओर टकटकी लगाए हुए था। नीला का मुख आरक्त हो गया। आखिर उसके अंतर की स्त्री-सुलभ लज्जा अभी पूरी तरह नहीं मरी थी।

कमल उसे चुप देख बोला, 'आगे क्या हुआ नीला?'

नीला मन में वेदना लिये भी मुस्कुराई, 'किसी शरीफ स्त्री के जीवन की काली कहानी उसी के मुख से कहलवाते तुम्हें लज्जा नहीं आती?'

कमल भी हँसा, 'मैं तो तुमसे एक कहानी सुनाने का आग्रह कर रहा हूँ। मुझसे भी शर्माओगी क्या?'

'तो सुन ही लो। जो दर्द मेरे अंदर ही अंदर टीस रहा है शायद वह बाहर निकल मुझे हल्कापन दे'—'मेरा आश्रयदाता, वह मुसलमान व्यवसायी अपने किसी आवश्यक कार्य से देहली गया और मुझे साथ ले गया। देहली में हम एक बहुत बड़े होटल में ठहरे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा और अगला काम बनाने के लिए यह आवश्यक था। उसे एक केन्द्रीय मंत्री से काम निकालना था। वह उससे और कुछ अन्य

वरिष्ठ अधिकारियों से बराबर मिलता रहा। दावतों और पार्टियों का क्रम चलता रहा और एक दो बार उस कार्य की सफलता के लिए मुझे भी माध्यम बनना पड़ा था। मैं इस प्रकार के जीवन की कुछ आदी हो चली थी। काम बनता जा रहा था, मेरा तथाकथित पति प्रसन्न था और मैं उस आमोदमय जीवन में प्रसन्न मन खोई हुई थी कि एक दिन शाम को वह मुझे अपने साथ उस मंत्री के बंगले पर ले गया। औपचारिक परिचय के बाद बातचीत चलती रही, तब मेरा साथी उठ कर बाहर चला गया। कमरे में मैं और मंत्री महोदय ही रह गए। उनने कुछ ऐसी लालसा भरी निगाहों से मुझे ताका जैसे भूखा भेड़िया मांस के लोथड़े को निहारता है। मैं ऐसी निगाहों को अब तक पह-चानने लगी थी। लेकिन मैं सिहर उठी और मेरा मन ग्लानि से भर गया। मंत्री महोदय बड़ी अदा से मुस्कुराते हुए उठे और अलमारी से व्हिस्की की बोतल, सोडा, बरफ और गिलास आदि निकाल लाए और मेरे पास सोफे पर आ बैठे। उनने दो गिलासों में शराब ढाली। मुझे पीने में तो आपत्ति नहीं थी, किन्तु वहाँ मैं इनकार कर गई, वे आग्रह करते रहे और मैं इनकार करती रही। तभी मेरा साथी अन्दर आ गया। जैसे वह कहीं छुपा हुआ हमें देख रहा था। उसने आते ही मुझे घूर कर देखा और मुझ पर आँखें गड़ा दीं, मैं सम्मोहित-सी हो पिघल चली। उसने आग्रह किया और मैंने यंत्रचालित-सा गिलास थाम लिया, वह भी हमारे साथ पीने लगा। हास-परिहास चलने लगा। जैसे-जैसे सुरूर बढ़ता गया, वातावरण कुछ हल्का-सा मुखर होने लगा। मंत्री बोला कि वह काम की अधिकता से इतना थक जाता है कि उसे मिटाने के लिए उसे कुछ लेना पड़ जाता है, जिसे वह केवल औषधि के रूप में ही लेता है, वह आदतन नशा नहीं करता और मादक पदार्थों के निषेध का पक्षपाती है। मैं अपनी हँसी को मुश्किल से रोक सकी, मेरा मन उसकी बनावट को देख घृणा से भर गया। सुरूर के साथ ही चेतना भी क्षीण होती जा रही थी, किन्तु मुझे आगे होने वाली घटना का आभास होने लगा था। मेरा साथी मुझे बराबर घूरे जा रहा था

श्रौर उसके सम्मोहन में मेरी चेतना शक्ति क्षीण होती जा रही थी, मैं अपने आसपास से कुछ बेखबर भी होती जा रही थी। मुझे लगा जैसे कमरे में चारों ओर पीली प्रकाशमान धूल-सी भरी हुई है, ऐसी और इतनी धूल जिसमें कमरे की हर वस्तु डूब गई है और वह धूल नाकों में भरकर जैसे साँस लेना मुश्किल कर रही हो। मेरा साथी मुझे घूरता हुआ उठकर चला गया।

उसके जाते ही वह मंत्री मुझ पर झुक आया। वह मुझसे कुचेष्टा करने लगा। उसे परे धकेल देने की इच्छा होते हुए भी मैं कुछ कर नहीं पा रही थी। मेरी चेतना खत्म हो गई थी, और मन तथा शरीर ऐसे निर्बल से हो गए थे कि हाथ हिलाने की शक्ति भी नहीं रही थी। नशे के साथ ही वासना की एक हल्की सिहरन मेरी रगों में प्रवाहित होने लगी थी। मंत्री उठा और मेरा हाथ पकड़ कर मुझे एक कमरे में ले चला। कुछ जानती और कुछ अनजानी-सी मैं, यंत्रचालित-सी घिसटती चली गई। मुझे जब होश आना था, वह तब आया जब मेरी गहराई को छुआ गया। मैं तिलमिला उठी। मेरा मन हुआ कि उस पशु का मुख नोंच लूँ, ज़ोर से चीखूं, लेकिन मैं निर्जीव-सी हो गई थी। वह उठा और बाहर चला गया।'

नीला बोलती बोलती फिर रुक गई और उसने दोनों हाथों से अपना मुंह ढक लिया। कमल का मुख आवेश में आरक्त हो गया, लेकिन वह गम्भीर, शांत और मौन बना रहा। सामने सागर थपेड़ों की चोट पर चोट किनारे पर मार रहा था। न जाने वह नीला के अहं का उपहास कर रहा था या उसकी बेबसी का। नीला ने ज़मीन पर आँखें गड़ाए हुए ही कहा,

'मुझे इस निर्लज्जता के लिए क्षमा करना, कमल। तुमसे कुछ छुपाने का मुझमें साहस नहीं है, न औपचारिकता ही।'

'बस या अभी और भी नीला' कमल ने दयार्द्र होकर कहा।

'अब पूरी कथा ही सुन लो न। हाँ, तो इस घटना से मेरे साथी का काम बन गया। वह बहुत प्रसन्न था। दूसरे दिन मुझे घूरते हुए और

सम्मोहित करते हुए उसने कुछ आदेश-सा देते हुए प्रस्ताव रखा कि मुझे अब से आगे उस मंत्री की हो कर रहना होगा। इस बार जाने क्यों मैं उसके सम्मोहन में नहीं आ सकी। मुझे क्रोध आ गया। तो मैं कठ-पुतली हूँ! मुझे तारों के सहारे उंगलियों पर नचाया जा सकता है! नहीं, नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं करूँगी। कभी नहीं। उसने मुझे समझाया, डराया, धमकाया, प्रलोभन दिया, लेकिन मैं साफ इनकार हो गई। उसने मेरे मुँह पर कस कर चाँटा मारा और मुझे नीचे गिराकर मेरे मुँह में कपड़ा ठूँस दिया और मुझे इस बुरी तरह पीटा कि मैं बेहोश हो गई। जब मुझे होश आया तो उसने मुझे तुरन्त कमरे से बाहर निकल जाने को कहा। यह उसका अन्तिम अस्त्र था और यही मेरी बेबसी थी, मजबूरी थी। शायद स्त्री जाति मात्र की हो, मैं नहीं जानती, किन्तु मैं जो कि स्त्री स्वातन्त्र्य की हामी थी, अपने इस जीवन की कुछ ऐसी आदी हो गई थी कि बिना किसी आश्रय के जीवित रहना मुझे दुसाध्य लगता था। मेरे पास अपना कुछ नहीं था और कोई सहारा भी नहीं था। वह दूसरे दिन चला गया और मैं उस मंत्री की रखैल बन गई। मैं दो दिनों तक निरन्तर रोती रही। तुम मुझे याद आए कमल और मेरी कल्पनाओं के अधिष्ठाता बने मेरे चारों ओर मंडराते रहे, मगर मैं तुम्हें छू न सकी, पकड़ना तो बहुत परे की बात थी। यहाँ मैंने देखा कि अधि-कार से धन और धन से क्या नहीं। यह मानव देह मात्र कितनी सुगमता से बेच दी जाती है जैसे प्राचीन काल में मिश्र, यूनान और अरब में मानव को गुलाम बनाकर बोली लगाकर बेचा जाता था, वही इस बीसवीं सदी में मानवता की दुहाई के युग में हो रहा था सरे बाजार नहीं, छुपकर। मैंने निकट से देखा है और अनुभव किया है कि उन आदर्शों की दुहाई देने वालों, मानवता का पाठ पढ़ाने वालों, धर्म, नैति-कता, ब्रह्मचर्य का उपदेश देने वालों की कुंठाएँ कितने विकृत रूप में उभरती हैं। उस कलेवर, उस नाम, उस प्रतिष्ठा, उस आदर्श और उस नेतृत्व के पीछे क्या छिपा है! वे दिन मेरे, बड़ी घुटन के दिन थे, वेदना के दिन थे, निराशा के दिन थे। केवल ऊपरी चमक दमक और बनावटी

उल्लास था। मैं इस जीवन से बुरी तरह ऊब गई थी। मैं अब किसी एक की होकर जीवन काट देना चाहती थी। ऐसे में मेरा परिचय चिताम्बरे से हुआ, उसमें कुछ ऐसी बात है जो उसकी कुरूपता, धन-लोलुपता, वासना से परे और ऊपर की चीज़ है और उसके इसी रूप में मुझे अपने लिए स्थायित्व की कुछ झलक मिली। तुम स्वयं उसका वह अंग कभी देख लोगे। लेकिन समय बीतता गया और उसके उस रूप में भी मेरी आस्था अब मिटती जा रही है। यह मेरी कहानी का एक हिस्सा और सुनोगे कमल?'

'बस नीला, बहुत हुआ।' कमल का गला भर्रा रहा था। नीला ने कमल के मुख पर देखा, जिसकी आँखों की कोरों में तरलता विशेष थी। दोनों एक दूसरे की ओर अपलक निहारते रहे। तब धीर और गम्भीर वाणी में कमल बोला,

'स्त्री पुरुष की यौन सम्बन्धी सामाजिक मान्यताएँ सदियों से एक विवादास्पद विषय बनी हुई हैं। जहाँ और जब भी यह सम्बन्ध अमर्यादित हुआ है, इसने समाज को विशृंखल ही बनाया है, और जहाँ या जब भी इस विषय को सामाजिक मर्यादाओं की रूढ़िवादी, अयुक्ति-युक्त जटिलताओं में जकड़ा गया है, इसके परिणाम बुरे ही निकले हैं। आज इस विषय पर ज़ोरों से विचार प्रगट किए जा रहे हैं, कारण कि नई सभ्यता उभर रही है, नया समाज ढल रहा है, और न केवल हमारे ही देश पर, वरन् अनेक एशियायी देशों पर पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। एक पक्ष का मत है कि रूढ़ियों और थोथी सामाजिक मर्यादाओं के बन्धनों से कुण्ठाएँ उभरती हैं और विकृतियाँ अन्दर ही अन्दर पनपती हैं। यह स्थिति तो समाज को और भी ज़्यादा खोखला और गलित कर सकती है। दूसरा पक्ष यौन सम्बन्धों में ऐच्छिक स्वतन्त्रता को दोषपूर्ण नहीं मानता, बल्कि स्वाभाविक मानता है और किसी भी प्रकार की रूढ़िवादी एवं अविवेकपूर्ण सामाजिक मर्यादाओं के बन्धन को निरर्थक मानता है। हाँ, इसके अमर्यादित और खुले रूप को यह पक्ष भी दोषपूर्ण मानता है। मेरे स्वयं के विचार में दोनों ही

विचार-दिशाएँ दोषमुक्त नहीं हैं। पाश्चात्य देशों में भौतिक विकास के परिवेश में यौन सम्बन्ध जटिल सामाजिक बन्धनों से मुक्त हैं, इसके परिणामस्वरूप समाज में विशृंखलता और एक विशेष प्रकार की अशांति बढ़ी है। कौटुम्बिक जीवन में स्थायित्व न रह जाने से उसका सुख प्रायः समाप्त-सा हो गया है। दूसरी ओर रूढ़िवादी मर्यादाओं के नाम पर अक्सर वासना कुंठित रह जाती है और अधिकतर यह भीतर ही भीतर पनपती है, यह स्थिति तो और भी ज्यादा खराब है। इससे अपराध वृत्ति बढ़ती है। समाज में, वर्ग, जाति और आर्थिक भेद भी इस स्थिति के लिए किसी हद तक उत्तरदायी हैं और इस सब के परिणाम भी ठीक नहीं निकल सकते। तब हो क्या? कौन से तरीके से यह स्थिति सुधरे, यह एक जटिल प्रश्न है। मेरा तो कुछ ऐसा विचार है कि इन दोषों से बचने के लिए प्राणीमात्र का मानसिक विकास और संतुलित आचरण ही हो सकता है। समाज के विकास के लिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों का संतुलन होना आवश्यक है, जो बिना उचित शिक्षा के सम्भव नहीं।' कमल इतना कह कर चुप हो गया। फिर कुछ सोचकर बोला,

'कैसी अरुचिपूर्ण बातचीत में तुम्हें उलझा लिया नीला, क्षमा करना, छोड़ो इस सब को। तुम तो यह बतलाओ कि आगे के लिए तो तुम अब निश्चिन्त हो न।'

'कुछ कह नहीं सकती अभी। लेकिन तुम जो मिल गए हो, कुछ आश्वस्त अवश्य हूँ। अच्छा आगे कहो। तुम बातें बनाने में बड़े पटु हो गए हो। खैर कहे जाओ।' नीला बोली। कमल ने एक सिगरेट और जलाया और बोला,

'तुमने कभी गीता पढ़ी है, नीला।'

'नहीं'

'मानव मात्र के आचरण को संतुलित रखने वाला एक ऐसा दर्शन इसमें है कि जिसके महत्व को आज पश्चिम वाले भी स्वीकार करने लगे हैं। देखो एक श्लोक है—

संगात्सं जायते कामः कामात्क्रोधो मि जायते ।
क्रोधाम्दवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्रमः
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धि नाशास्प्रणश्यति ।।

काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या आदि मानव मात्र की सहज प्रवृत्तियाँ हैं। जैसे हर प्रवृत्ति या वस्तु की अति नुकसानदे हो सकती है, उसी प्रकार इन प्रवृत्तियों की भी। इन कुछ प्रवृत्तियों की अति होने से या अनियंत्रित होने से व्यक्ति के साथ ही समाज पर भी बुरा असर पड़ता है।'

'इस श्लोक के अर्थ समझाओ न' नीला ने प्रश्न किया।

'शाब्दिक अर्थ सरल है। आसक्ति से काम, काम से क्रोध, क्रोध से मोह, मोह से स्मृतिभ्रम और स्मृतिभ्रम से बुद्धि नाश होता है अर्थात् विवेक अविवेक का ज्ञान समाप्त हो जाता है और इसके परिणामों को तुम कल्पना कर सकती हो। अतः मानव मात्र को समाज में रहते हुए, अपनी सारी सहज प्रवृत्तियों को भोगने के लिए विवेकपूर्ण आचरण करना अनिवार्य है वर्ना परिणाम यही निकलेगा कि आचरण में असंतुलन हो जायेगा, जीवन में अस्थिरता और अशांति बढ़ेगी और परिवार तथा समाज में विघटन बढ़ेगा।'

'अच्छा तो प्रेम और वासना में तुम क्या अंतर समझते हो ?'

'वासनामूलक आसक्ति को अक्सर लोग प्रेम मान बैठते हैं। आज समाज में प्रेम का जो नाटक दिखाई देता है, उसके मूल में यौन आकर्षण और वासना एक प्रमुख कारण है और इसी आसक्ति में जकड़े दोनों पक्ष जीवन बन्धन या विवाह बन्धन में बंध जाते हैं। यह परिणति भावनामूलक होती है। परिणाम यह होता है कि जैसे जैसे उभय पक्ष में यौन आकर्षण कम होने लगता है, परस्पर आसक्ति भी घटने लगती है। जीवन में वासना के प्रति आसक्ति का प्रतिफल इतना सरल लुभावना और मादक होने से, दोनों पक्षों में से किसी एक पक्ष का यह परस्पर आकर्षण दूसरी दिशा में भी मुड़ सकता है। या पुरुष और स्त्री समाज में ऊपर से निष्ठावान :पति पत्नी बने हुए भी अपने-अपने

जीवन में स्वतन्त्र चलते रहते हैं। वे भिन्न भिन्न स्त्री पुरुषों से सम्बन्ध बनाए रखने में आपत्ति तो नहीं मानते, लेकिन ऐसी स्थिति में उनमें एक दूसरे में न तो विश्वास ही रह जाता है और न समन्वय। यह क्रम फिर रुक नहीं पाता। परिणामस्वरूप सम्बन्ध विच्छेद होते हैं, पुनर्विवाह होते हैं और फिर सम्बन्ध विच्छेद। इसके माने यह नहीं कि समाज में निष्ठावान पति-पत्नी होते ही नहीं। मैं तो ऐसा समझता हूँ कि पाश्चात्य देशों में यौन मनोविकारों, अपराधों, सामाजिक जीवन में अस्थिरता के लिए ऐसी ही कुछ स्थिति किसी हद तक उत्तरदायी मानी जायेगी।' इतना कहकर कमल चुप हो गया और नीला के मुख पर देखने लगा। वह विचारमग्न बैठी थी।

'क्या कहती हो नीला, अब चला जाय न ?'

'एक बात और बतलाओ कमल, बिना वासना के प्रेम कैसे सम्भव है ? बहुत से लोग ऐसा मानते हैं कि प्रेम की चरम उपलब्धि वासना-तृप्ति है, तुम ऐसा यदि नहीं मानते तो भला क्यों ? मुझे यह समझाओ तब चलेंगे।' कमल ने घड़ी देखी अभी साढ़े सात बजे थे।

'मैं इस विषय में बिलकुल अपनी ही मान्यता तुम्हारे सामने रख रहा हूँ, जो हो सकता है, गलत हो। वासना का यौन आकर्षण चेतन और समान बुद्धि रखने वाले दो समान प्राणियों में उदय होता है। इसके विपरीत प्रेम तो भिन्न सेक्स के प्राणी अथवा जड़ वस्तु के प्रति भी विकसित हो सकता है। वासना का उद्रेक तो यौन आकर्षण के कारण तत्काल भी हो सकता है। लेकिन प्रेम के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता। मैं तुम्हें मिसाल देता हूँ, मान लो तुमने कोई पशु पाल रखा है, तुम्हारा उस पर प्रेम हो जाता है। यह प्रथम दृष्टि में तो होता नहीं, कालांतर में निकटता से यह प्रगाढ़ हो जाता है। जैसे तुमने एक कुत्ते का बच्चा पाला। उसमें तुम्हें रुचि अवश्य है किन्तु क्योंकि वह तुमने हाल में ही पाला है इसलिए तुम्हारे साथ उसके रहने का अवसर कम होने से, उससे तुम्हारी रुचि एक दम तो प्रेम में नहीं बदल जाती, यह कालांतर में होगा, जैसे जैसे वह तुम्हारे जीवन के साथ घुलता-

मिलता जायेगा। इसलिए तुम्हें उस कुत्ते के बच्चे के मरने पर इतना अफसोस नहीं होगा, जितना उसके बड़े होकर मरने पर होगा। इसी प्रकार होटल के कमरे से तुम्हें इतना लगाव नहीं होता जितना अपने मकान या कमरे से। इस प्रकार की मनोदशा के लिए अपनत्व के अलावा भी कई अन्य कारण उत्तरदायी हो सकते हैं अस्तु वासनामय आकर्षण से प्रेम को मैं भिन्न मानता हूँ। एक विशेष आयु में वासना का उद्रेक होता है। वही आयु हमारे यहाँ विवाह योग्य मानी गई है। लड़के और लड़की दोनों पक्ष के वयस्क स्वस्थ और सुन्दर जोड़ा ही सदा ढूंढते हैं। लेकिन ऐसा करते हुए दोनों की रुचि, रहन सहन और पारिवारिक मर्यादाओं को भी दृष्टि में रखा जाना चाहिए, इसमें लड़के और लड़की के स्वभाव की भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए और दोनों को एक दूसरे को देखने और समझने का अवसर भी मिलना चाहिए। विवाह सम्बन्धों में अर्थ को प्रधानता नहीं दी जानी चाहिए और जाति बन्धन यदि मिट सकें तो और भी उत्तम। अस्तु पुरुष का स्त्री के प्रति जो स्वाभाविक आकर्षण है, जो वासना है, वह इस प्रकार सामाजिक मर्यादाओं को मान्यता देते हुए ही तृप्त होगी। तृप्ति सदैव सुखदायक है और इससे परस्पर आकर्षण बना रहता है। परस्पर आकर्षण एक दूसरे को समझने में और परस्पर विश्वास में और धीरे धीरे परस्पर प्रेम में बढ़ता हुआ प्रगाढ़ प्रेम का स्थान ले लेता है। मेरा यह दावा नहीं है कि इस व्यवस्था में सभी व्यक्तियों का वैवाहिक जीवन सुखी होगा, किन्तु इसमें स्थायित्व अधिक होगा, तनाव और विघटन की सम्भावना कम। तुम क्या कहती हो इस विषय में ...'

'मेरे लिए तो ये विचार नये से हैं, तुमने सोचने के लिए एक नई दिशा अवश्य दी है। इसके व्यावहारिक पक्ष के प्रति कुछ भी शंकाएँ हों लेकिन लगती यह बात कुछ युक्तियुक्त है। यदि मैं इसे पहले ही जान और समझ सकती तो क्या तुम आज मेरे न होते ?'

'आज के अर्थमूलक समाज में इन मान्यताओं का कोई स्थान दिखाई नहीं देता। आज प्रायः हर जगह जीवन का लक्ष्य भौतिक प्रगति

के आधार पर व्यक्ति और समाज का विकास है अतः जीवन के हर कार्य को आर्थिक पहलू से देखा और तोला जाता है। फिर जिस गति से समाज आगे बढ़ रहा है, उसमें विराम या गतिरोध आने की सम्भावनाएँ बहुत कम हैं और आगे बढ़ने वाले इस ज़माने में ऐसी बातों को पिछड़ापन माना जाता है, भले ही वे युक्तियुक्त और उपयोगी क्यों न हों।' उठते हुए कमल ने कहा।'

'खैर चलो चाची इन्तज़ार कर रही होंगी।'

सतीश के घर पहुँच कर दोनों ने परिवार के साथ भोजन किया। सतीश के मामा भी आ गए थे। भोजन के बाद कुछ देर औपचारिक और पारिवारिक बातें होती रहीं और तब नीला और कमल टेक्सी से उसके घर लौट आए। इस समय दस बजे थे। चिताम्बरे अभी तक नहीं लौटा था। दोनों बैठक में बैठ गए। कमल ने सिगरेट जला ली। नीला उसकी पत्नी और बच्चों के विषय में पूछने लगी।

'क्या भाभी बहुत ही सुन्दर हैं, क्या बहुत प्रेम करती हैं तुमसे ?'

'सुन्दरता की परिभाषा विचित्र है, अपनी अपनी रुचि और आकर्षण बिन्दुओं का प्रश्न है, इसलिए कभी कभी बड़े ही विचित्र रूपों में व्यक्तियों की आसक्ति दिखाई देती है। जहाँ तक प्रेम का प्रश्न है, वह पारस्परिक और प्रगाढ़ है, कम से कम अब तक तो है ही।' कमल ने उत्तर दिया।

'आगे क्या कुछ शक है ?' नीला ने मुस्कुराकर कहा।

'यह तो मेरे परिवार में तुम्हारे प्रवेश के बाद ही पता चल सकेगा।' दोनों हँस दिए।

'अच्छा रुको नीला, तुम्हें तुम्हारी भाभी दिखलाता हूँ।' इतना कह कमल अपने कमरे में चला गया और एक पर्स जैसा फ़ोल्डर उठा लाया जिसमें उसकी पत्नी का तथा बच्चों का फोटो था। यह वह सफर में अक्सर अपने साथ रखता था। जैसे ही कमल बैठक में आया उसने देखा कि चिताम्बरे नीला के पास बैठा उससे छेड़छाड़ कर रहा है। कमल के प्रवेश करने की आहट पा वह कुछ संयत हुआ।

उसकी आँखों में नशा और कामुकता खेल रही थी। जैसे ही कमल निकट आया, वह उठा और कहने लगा :

'भोत रात होया, अब सोइगा, गुड नाइट मिस्टर कमल'

नीला को साथ आने का इशारा कर वह अपने कमरे में चला गया। नीला बेमन सी उठी, उसने एक अजीब कातर दृष्टि से कमल की ओर देखा, दोनों हाथ जोड़े और पैर घसीटती-सी अपने सोने के कमरे की ओर चली गई। कमल को नीला का इस प्रकार जाना कुछ अजीब-सा लगा। उसे कुछ ऐसा लगा जैसे कोई उसके अधिकारों का अति-क्रमण कर रहा है, उसकी अपनी कोई वस्तु उससे छीन रहा है। वह उदास मन अपने कमरे में जाकर सो गया।

प्रातः कमल जल्दी ही उठ गया था। नित्यकर्म से निवृत्त हो वह बाहर लॉन में टहलने लगा। लगभग आधा घंटे बाद चिताम्बरे के कमरे से तानपूरे के गम्भीर नाद में भैरवी के स्वर उसे उभरते सुनाई दिए। स्वर पुरुष का था। निःसंदेह चिताम्बरे ही गा रहा था। कमल कुर्सी बाहर रखकर बैठ गया। स्वर मधुर और आवाज़ गम्भीर और बंधी हुई थी। भैरवी के स्वरों में चिताम्बरे एक मराठी पद गा रहा था। भक्ति और करुण रस में वातावरण डूब सा गया था और कमल उन स्वरों में। कमल मुग्ध बना सोचने लगा कि मनुष्य के चरित्र में कितना वैचित्र्य है, कितना विरोधाभास है। चिताम्बरे जैसा कुरूप, कामुक, अर्थलोलुप और दूषित मनोवृत्ति का व्यक्ति और संगीत जैसी मधुर, सुकोमल और देवतुल्य कला की इतनी कुशल साधना। पर-मात्मा ही जाने, चिताम्बरे के अन्तर्मन का सही रूप उसके किस रूप में छुपा है। प्रायः पौन घंटे तक यह कार्यक्रम चलता रहा। कमल उसमें कुछ ऐसा आत्मविभोर हुआ कि आँखें बन्द किए मंत्रमुग्ध सा बैठा रहा। उसे पता ही नहीं चला कि नीला कब की उसके पैरों के पास आकर लॉन में बैठ गई थी। कमल को कोई मुलायम वस्तु उसके पैर को छूती सी लगी तो वह चौंक कर देखने लगा। नीला उसके पास बैठी थी और उसकी अंगुलियाँ अनायास ही कमल के पैरों को

छू गई थीं। कमल ने नीला की ओर देखा। वह थकी हुई थी। उसकी आँखें फूली हुई थीं जैसे अनिद्रा और रोने के कारण। कमल उसकी यह दशा देख द्रवित हो गया। भैरवी के स्वर और पद के शब्द जिन्हें कमल कम ही समझ पाता था, वातावरण को करुणामय बनाए हुए थे। कमल ने नीला की पीठ पर हाथ फेरा। उसके शरीर में एक सिहरन हुई, गला भर आया। 'हे करुणानिधान दया कर। यह व्यक्ति जो करुण, मधुर स्वरों में तुझे स्मरण कर रहा है, इस निरीह, बेसहारा अबला के प्रति कितना पशुवत है।' नीला के नैन झर रहे थे, कमल मुश्किल से अपने आँसू रोक सका।

चिताम्बरे का गायन समाप्त हुआ तो जैसे तंद्रा भंग हुई। नीला ने अपने नेत्र पौंछे और कातर दृष्टि से कमल की ओर देखा। आँखें मिलते ही कमल अपने आँसू नहीं रोक सका। नीला फिर सिसक उठी। कमल आवेग को रोकने, उठकर कमरे में चला गया। उसने गला साफ किया, मुँह धोया और पत्नी का फोटो लेकर बाहर आ गया। नीला एक कुर्सी और निकाल लाई थी, कमल ने अपनी पत्नी का फोटो नीला की ओर बढ़ा दिया और बैठ गया। नीला ने बड़े ध्यान से फोटो देखा, फिर वह बार बार कभी कमल और कभी फोटो की ओर देखती रही।

'कितनी सुन्दर और कितनी स्नेहमयी' इतना कह नीला ने वह फोटो अपनी चोली में छुपा लिया।

'नीला, क्या इतनी पसंद आई भाभी ?'

'जो मेरे कमल को अतीव प्रिय है, वह मुझे क्यों न होगी ?' नीला ने उल्लास भरे स्वर में कहा।

'यह आवश्यक तो नहीं नीला। फोटो तो लौटा दो।'

'मेरे मन की बात है कमल, फोटो मेरी थाती है।'

नाश्ता करके चिताम्बरे और नीला कमल को उसके बतलाए स्थान पर ले गए, जहाँ उस गोष्ठी का आयोजन था जिसमें कमल आमंत्रित था। कमल का जिस समादर से स्वागत किया गया, उसका प्रभाव

चिताम्बरे पर पड़े बिना नहीं रहा। कमल का परिचय एकत्रित महानुभावों से कराया गया। कमल ने चिताम्बरे और नीला का परिचय दिया। इस औपचारिकता के उपरान्त गोष्ठी का कार्यक्रम शुरू हुआ। विषय था, देश में हिन्दी का भविष्य, उसके राज्य भाषा बनने का प्रश्न तथा साहित्यकारों का देश और समाज के प्रति दायित्व। गोष्ठी के बाद जलपान हुआ और उपस्थित व्यक्ति आपस में बातें करने लगे। कुछ लोगों ने कमल को घेर लिया। एक ने प्रश्न किया,

'मिश्र जी आप तो लोक सभा के सदस्य हैं, हिन्दी के मामले में लोकसभा में आप हिन्दी का पक्ष किस प्रकार प्रस्तुत करना उचित समझते हैं ?'

'देखिए श्रीमान्, मैं हिन्दी का पूर्ण समर्थक हूँ। मेरी यह उत्कट अभिलाषा है कि हिन्दी को अधिक लोकप्रिय बनाई जाय और उसका उपयोग व्यापक बनाने के लिए यह उत्तम होगा कि उसे राज्य भाषा घोषित करने में अधिक समय न लगाया जाये। जहाँ तक हिन्दी के प्रश्न को लोकसभा में प्रस्तुत करने का प्रश्न है, मैं उसे प्रस्तुत करने के उग्र रूप या उस रूप के अंधानुकरण के पक्ष में नहीं हूँ। इससे भाषा का हित नहीं होने वाला।'

'लेकिन साधारण रूप में प्रस्तुत करने पर सरकार पर कुछ असर भी होगा और वह उसे मान ही लेगी क्या ?'

उग्र रूप से असर होगा यह भी तो आवश्यक नहीं। असर पैदा करने के लिए तो पक्ष को युक्तियुक्त ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। देश में इसकी व्यापक उपयोगिता की व्याख्या करते समय सपुष्ट प्रमाण और अकाट्य तर्क प्रस्तुत करना चाहिए।'

'लेकिन राज्य तो अपने पक्ष की बात दल के बहुमत के कारण मनवा ही लेगा।'

'यह तो ठीक है, लेकिन बहुमत अपने पक्ष में भी तभी बनाया जा सकता है जब कि विषय को प्रस्तुत करने का तरीका युक्तियुक्त और वजनदार हो। यह आवश्यक नहीं है कि शासन करने वाले दल के सब

सदस्य सरकार की हिन्दी की नीति से पूर्ण सहमत ही हों। वास्तव में ऐसे अनेक सदस्य हैं जो सरकार की इस नीति से सहमत नहीं हैं। उनका समर्थन तभी हो सकता है जब हमारी पहुँच सही हो। दूसरे तरीके से न तो पक्ष ही सबल बनेगा न अनुयायी ही बढ़ेंगे।'

'लेकिन इससे कुछ होगा नहीं'

'माना कि नहीं होगा, लेकिन बहुमत की उपेक्षा भी तो अधिक समय तक नहीं हो सकती। हिन्दी के प्रचार और प्रसार कार्य को बढ़ाइए, देश के कोने कोने में हिन्दी को पहुँचाइए। सरकार इससे तो आपको नहीं रोकती।'

'लेकिन यह काम तो कठिन है।'

'और लोकसभा में व्यर्थ वितंडावाद और उग्र प्रदर्शन करना भी तो युक्तियुक्त नहीं है। हर नागरिक अपना सब काम हिन्दी में करें। सरकार किसी भी नागरिक को अपने साथ हिन्दी में पत्र व्यवहार करने से तो नहीं रोकती'

'तो लोकसभा की कार्यवाही में आप कुछ नहीं करेंगे ?'

'करूँगा क्यों नहीं ? ऊधम अवश्य नहीं करूँगा। लोक सभा में अपना पक्ष रखने के साथ ही साथ मैं हिन्दी भाषा के प्रसार और उसके उपयोग को व्यापक बनाने के लिए प्रयत्न करना अधिक उपयोगी समझता हूँ।'

कमल इतना कहकर अधिक विवाद में न पड़ने के ख्याल से एक ओर मुड़ गया और उसने जाने की स्वीकृति मांगी। चिताम्बरे इस सभा और कमल के प्रति प्रदर्शित व्यवहार से काफ़ी प्रभावित हुआ था।

कमल दो दिन बहुत व्यस्त रहा। वह नीला के साथ अधिक समय नहीं बिता सका। नीला उन दिनों काफ़ी आश्वस्त और प्रसन्न बनी रही।

कमल से मित्रों का परिचय कराने के लिए चिताम्बरे ने आज भोज का आयोजन किया था। शाम छः बजे से मेहमान आने लगे थे। चिताम्बरे ने गहरे सिलेटी रंग का सूट पहन रखा था और बजाय टाई के बो

लगाए हुए था। नीला ने एक औसत दर्जे की भारी मगर सादा साड़ी पहन रखी थी। उसने शृंगार बहुत साधारण किया हुआ था। जिस समय नहा कर और कपड़े बदल कर कमल अपने कमरे से बैठक में आया, उस समय नीला और चिताम्बरे कमरे में बैठे थे और आवेश भरे ऊँचे स्वरों में परस्पर बहस कर रहे थे। कमल की ओर दोनों की पीठ थी। कमल कुछ रुक गया, बातचीत अंग्रेज़ी में हो रही थी। चिताम्बरे नीला के बनाव शृंगार से सन्तुष्ट नहीं था और उसे मेकअप न करने पर झिड़क रहा था। नीला अपनी ज़िद पर कायम मालूम पड़ती थी।

'तुम मुझे मज़बूर नहीं कर सकते, मुझे जैसा अच्छा लगेगा वैसे ही रहूँगी, मैं अब तुम्हारे हाथ की कठपुतली बनकर अधिक नहीं रह सकती। मैं वैश्या नहीं हूँ जो तुम अपना काम निकालने के लिए मेरी मज़बूरियों का फायदा उठाते रहो, अब बहुत हो चुका। मेरा यदि शरीर है तो मेरी आत्मा भी है' नीला आवेश में बोल रही थी, उसका स्वर रुआँसा सा,हो गया था। चिताम्बरे ने बड़े व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा,

'जान पड़ता है अपने आदर्शवादी मित्र के जाल में फँस गई हो, इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा यह समझ लेना नीलमणि।'

'मैं अस्वस्थ हूँ श्रीकांत मुझ पर दया करो, मुझे क्षमा करो। मैं भी इन्सान हूँ, मेरा भी मन है। मेरी भी इच्छाएँ और भावनाएँ हैं।' कातर हो नीला ने कहा। कमल का जी भर आया, उसे चिताम्बरे पर क्रोध भी आया वह इस विग्रह को बढ़ने देना नहीं चाहता था, इसलिए वह हल्के से खाँस कर उनकी ओर बढ़ गया। दोनों मौन हो गए। चिताम्बरे अपनी क्रूरता को पी गया, उसने अपनी मुद्रा को संयत किया। आवेश में नीला का चेहरा लाल हो गया था और उसकी भृकुटियाँ कुछ तनी हुई थीं। वह अपेक्षाकृत कुछ सुन्दर लग रही थी।

इतने में मेहमान आना शुरू हो गए थे। कमल से जब उनका परिचय कराया गया तो एक साहित्यकार और नीला के सहपाठी के रूप में कराया गया। उसके प्रति सभी की मुद्रा में न्यूनाधिक कुछ उपेक्षा थी। नीला सभी आगत पुरुष और महिलाओं से औपचारिक ढंग से

मिल बोल रही थी। कमल को सबका परस्पर व्यवहार बड़ा कृत्रिम-सा लगा, लेकिन उसके लिए यह नया नहीं था। कमल ने यह भी अनुभव किया कि नीला के व्यवहार में कुछ उदासीनता है। अंत में एक अधेड़ आयु के सज्जन आए, ऊंचे पूरे, भारी शरीर के। ये एक उच्च सरकारी अधिकारी थे। उनने नीला से हाथ मिलाया और कुछ इस ढंग से दबाया जो स्वयं नीला और कमल को भी अच्छा नहीं लगा। उनकी आँखों में कुछ इशारा सा और मुख मुस्कुराहट में कुछ अजीब सा फैल गया था। कमल को उनकी यह मुद्रा बड़ी फूहड़ और सस्ती लगी। नीला उनका परिचय कमल से कराने लगी। कमल को वह उस भेड़ के मेमने-सी बेबस लग रही थी जो अनायास भेड़िए के सामने पड़ गया हो। उन सज्जन ने कमल को बड़ी पैनी और उपेक्षा भरी निगाह से देखा और केवल एक-आध औपचारिक शब्द, बड़े ही खुश्क तरीके से कहकर आगे बढ़ गए।

कमल ने महसूस किया कि एक महिला उसे बराबर घूरे जा रही है। वह एक उद्योगपति की पत्नी थी। उसके पति विदेश यात्रा पर गए हुए थे, इसलिए वह इस पार्टी में अकेली ही आई थी। वह एक साधारण-सी रूप-रेखा की स्त्री थी। आयु उसकी चालीस के आसपास रही होगी। रंग साफ नहीं था, कुछ मैला गेहूँआ था, शरीर कुछ स्थूलता की ओर ढला हुआ था लेकिन मेकअप उसने भड़कीला कर रखा था। उसके चेहरे पर सम्पन्नता से लगी विलासिता के अलसाएपन की झलक स्पष्ट थी। जब वह उस सरकारी अधिकारी से मिल रही थी तो दोनों के चेहरों पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी। सब लोग बैठ गए थे और चिताम्बरे एक ट्रॉली में शराब की बोतलें, सोडा, हल्के पेय तथा बरफ आदि जमा करके ले आया था। सब लोग अपनी अपनी रुचि के अनुसार पेय ले रहे थे। नीला ने आधा गिलास बियर ली थी और उसमें लेमन और बरफ लिया था, कमल ने सेब का रस ले लिया। वह महिला, जो कमल को आने के बाद से ही घूर रही थी, अवसर पाते ही उसके पास आकर बैठ गई। कुछ लोग साहित्यिक चर्चा चलाने

लगे, किन्तु कमल को ऐसा लगा कि यह सब चर्चा केवल शिष्टाचार के नाते औपचारिक है और प्रायः सभी व्यक्ति साहित्य के अल्प ज्ञान के आधार पर अपने को उसका पंडित साबित करने का प्रयत्न कर रहे थे। कमल को यह नाटक बड़ा हास्यास्पद लग रहा था। जैसी कि उसकी ऐसे अवसरों पर बात करने की आदत थी, वह व्यंग्य और हास्ययुक्त बातें करता रहा, जिससे सब लोग हँसते रहे। सहसा एक महिला प्रस्ताव करती सी बोली :

'कोई कविता सुनाइए मिस्टर मिश्र'

'मैं कवि नहीं हूँ, इसलिए क्षमा चाहता हूँ' कमल ने कहा।

'आप साहित्यिक तो हैं न ?' उस महिला ने बड़ी शंकास्पद मुद्रा बना कर पूछा। कमल को उन पढ़े-लिखे कहे जाने वाले लोगों पर हँसी आने को हुई जिसे दबा कर वह बोला :

'यह आवश्यक नहीं कि हर साहित्यकार कवि ही हो'

कई लोग इस स्पष्टीकरण पर हँस दिए और वह महिला सकुचा गई। इसके साथ ही साहित्य पर बातचीत का सिलसिला टूट गया। सब लोग प्रायः व्यावसायिक बातों में ही उलझ गए। महिलाओं की बातचीत का विषय नया फैशन और नए चलचित्र था, जिसमें अंग्रेजी भाषी चित्रों की चर्चा विशेष थी। कमल को इस समाज के बीच आनन्द आ रहा था। वह सोचने लगा कि क्या इसी प्रकार की और इन्ही विषयों की चर्चा ही विकासवाद का प्रतीक है ? जहाँ देखिए, सभ्य कहलाने वाले समाज में, विदेशी साहित्य, विदेशी चलचित्र, विदेशी सभ्यता और संस्कृति ही तो चर्चा का विषय रहता है। बहुधा लोग विदेशी लेखकों की रहस्य रोमांच या वासनामूलक, दो चार किताबें पढ़ लेते हैं और फिर कुछ इस प्रकार चर्चा करने लगते हैं जैसे वे पाश्चात्य साहित्य के विद्वान आलोचक हों। हमारे समाज में पश्चिम का अनुकरण कितनी थोथी बुनियादों पर हो रहा है। विदेशों के ख्यातिनाम और प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाओं का कितने व्यक्ति अध्ययन करने का प्रयत्न करते हैं ? कमल ने एक सिगरेट जलाई।

उसने देखा कि उसके पास बैठी महिला अब भी बराबर उसे घूरे जा रही है। उसे महिला की दृष्टि कुछ अजीब बेधक-सी लगी, वह अपने अन्दर कुछ बेचैनी सी अनुभव करने लगा। आखिर इस स्थिति से मुक्त होने के लिए उसने संकोच त्याग सीधे उस महिला की आँखों में देखा। उस महिला की आँखों में कुछ नशीलापन सा उतर आया था और कमल से आँखें मिलते ही वह मुस्कुराने लगी।

'आप कहानियाँ लिखते हैं?' उस महिला ने प्रश्न किया

'जी'

'और उपन्यास ?'

'दो एक वे भी लिखे हैं' कमल ने उत्तर दिया।

'इस लिखने से आपको क्या आमदनी हो जाती है ?'

कमल हँस दिया। उसने मुस्कुराते हुए पूछा :

'हर बात को पैसों से क्यों तोला जाता है ? गुज़ारे के लिए आय के और भी तो साधन हो सकते हैं, और लेखन एक हॉबी के रूप में भी चल सकता है।'

'मेरा मतलब तो यह था कि आप यदि फिल्मों के लिए लिखें तो ख्याति और धन दोनों ही मिल सकते हैं। उस महिला ने कुछ आँखें सिकोड़ कर कहा। वह फिर बोली :

'हम लोग फिल्मों को फाइनेंस करते हैं। मैं चाहती हूँ आप जैसे प्रतिभाशाली युवक को भी इस लाइन में मौका मिले। मैं आपकी सहायता कर सकती हूँ।'

'मैं इस सहानुभूति के लिए आपका आभारी हूँ। मैं जैसा कुछ लिखता हूँ, वह शायद चलचित्रों के कथापट के अनुकूल नहीं है। मैं अपनी रचनाएँ आपको भेजूँगा, आप उन्हें देख लें। यदि वे आपको फिल्माने योग्य लगें तो मुझे बतलाइएगा। किसी के इंगित पर, उसकी इच्छा की चीज लिखना मेरे लिए सम्भव नहीं।'

वह महिला रहस्यमय ढंग से मुस्कुरा दी। उसने अपना गिलास दुबारा भरा जो अब तक आधा खाली हो चुका था। उस पर नशे का

प्रभाव स्पष्ट दिखने लगा था। उसकी आँखें आधी बन्द थीं और चेहरे पर लालसा के भाव कुछ उभर आए थे। वह कमल के पास सट आई। डाइनिंग टेबुल के ऊपर, उल्टे गिलासों नुमा लटकी तीन बत्तियों का तेज प्रकाश फैला हुआ था। बैठक में सोफे की बगल में स्टैंड पर खड़ा एक लैम्प फीका दूधिया प्रकाश दे रहा था। सारे कमरे में बहुत मंदा सा प्रकाश था। सामने ही, चिताम्बरे, सरकारी उच्च अधिकारी और एक अन्य व्यापारी काफ़ी घुल मिलकर बातें कर रहे थे। चिताम्बरे की मुद्रा बड़ी विनम्र और याचना भरी लगती थी। बगल में बाँई ओर नीला एक महिला के पास बैठी थी उसी ओर कमल, कुछ झुका हुआ सा बैठा था। नीला बियर पी चुकी थी, उसका मुख इस समय आरक्त हो गया था। कमल के बाँई ओर उसी सोफे पर बैठी महिला कमल पर अब और झुक आई। कमल को उसकी यह हरकत बुरी लगी, आखिर वह कहाँ तक सोफे के कोने में सिमटे चला जाये ? उसने नीला की ओर झाँका। नीला ने एक निगाह कमल के पास बैठी महिला पर डाली और कमल की ओर देखकर मुस्कुरा दी। उसकी निगाहों में चंचलता लिये कुछ ऐसा भाव था कि 'कहो बच्चू इस बार फँसे ?' कमल भी हँस दिया। तभी चिताम्बरे ने अभ्यागतों को भोजन के लिए कहा। सब डाइनिंग टेबुल के पास इकट्ठे हो गए और बुफे डिनर शुरू हुआ। कमल ने अपनी प्लेट में रुचि का भोजन इतनी मात्रा में ले लिया कि दुबारा न लेना पड़े और मेहमानों में कुछ हास्य के चुटकुले छोड़ता हुआ एक कुर्सी पर बैठ गया जो कमरे की दीवार से सटाकर रखी गई थी। वह अधिकारी टहलता हुआ कमल के पास आकर बैठ गया। उसने उपेक्षा से कमल की ओर देखा और अंग्रेज़ी में बातचीत आरम्भ की :

'आप क्या लिखते हैं और किस विषय में ?' उसने प्रश्न किया

'मैं कहानियाँ और उपन्यास लिखता हूँ और सामयिक समस्याओं पर यदाकदा लेख भी ?'

'लेखों का मुख्य विषय क्या होता है ?'

'मुख्यतया सामाजिक और आर्थिक विषयों पर लिखता हूँ। मेरा व्यक्तिगत विचार कुछ यों है कि साहित्य समाज के लिए उपयोगी और शिक्षाप्रद होना चाहिए। विकासवाद के अनुसरण से समाज अर्थमूलक बनता जा रहा है और उसमें कई दोष उत्पन्न होने लगे हैं। इन दोषों से समाज को बचाने के लिए उन्हें समाज के सामने रखना आवश्यक है। और साहित्य इस दिशा में एक साधन है।'

'तो आप सरकार की नीतियों की भी आलोचना करते होंगे?' उस अधिकारी ने प्रश्न भरी दृष्टि से कमल की ओर देखते हुए पूछा।

'जहाँ आवश्यकता समझता हूँ'

'ऐसा तो नहीं होना चाहिए। इस तरह तो सरकार की नीति के प्रति एक अविश्वास का वातावरण बनेगा।' उसकी इस समझाइश में अधिकार भावना स्पष्ट थी।

'हम प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था में रह रहे हैं। अपने मत व्यक्त करने की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त है। प्रजातन्त्र के लिए यह एक स्वस्थ परिपाटी है। इसका कुछ लोग अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न करते हैं और उनकी आलोचना केवल ईर्ष्यामूलक व्यक्तियों तक सीमित होती है। यह परम्परा न तो उचित है और न युक्तियुक्त ही। बहुत से पत्रों तथा प्रकाशनों द्वारा शासन की आलोचना बहुत ही निम्नस्तरीय होती है। अनेक सम्पादक या प्रकाशक अपने प्रकाशनों के माध्यम से बराबरी के पत्रों तथा लेखकों आदि पर कीचड़ उछालने का ही काम करते हैं। यह स्थिति बहुत दोषपूर्ण है। आजकल वासना प्रधान साहित्य की भरमार होने लगी है, ऐसा साहित्य छुप कर बेचा जाता है और छुप कर ही पढ़ा जाता है। उसकी बिक्री काफी होती है और इसलिए ऐसे प्रकाशनों का उद्देश्य अर्थ प्रधान होता है। ऐसा साहित्य समाज के लिए हानिकारक है किन्तु ऐसे प्रकाशक राजनैतिक प्रश्रय की ओट में निर्बाध गति से कार्य करते रहते हैं और कई प्रतिबंधों से बच जाते हैं। स्वस्थ, युक्तियुक्त और रचनात्मक आलोचना तो कभी भी दोषपूर्ण नहीं हो सकती।'

'मैं इस आलोचना की परिपाटी को उचित नहीं समझता। शासन की नीति की निरंतर आलोचना से देश की प्रगति में रुकावट आती है।' कमल हँस दिया उसने अधिकारी की ओर देखते हुए कहा :

'प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था में नीतियों और योजनाओं की युक्ति-युक्त आलोचना से कई रचनात्मक विचार सामने आते हैं लेकिन नौकरशाही के अंग होने से आपको कैसी भी आलोचना अप्रिय लग सकती है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नौकरशाही प्रवृत्ति से आप अब तक मुक्त नहीं हो सके हैं। प्रजातन्त्र में भी यह बू नहीं निकल सकी, इसका दुख है। आज भी शासन साहित्यकारों को उसी प्रकार खरीदने का प्रयत्न करता है जैसे कोई तानाशाही राज्य अपने देश के साहित्यकार को बांध लेना चाहता है जैसे रूस ने बोरिस पास्तरनाक को नोबल पुरस्कार नहीं मिलने दिया। इस दृष्टिकोण को क्या आप स्वस्थ मानते हैं ? जिस देश में साहित्य और कला को केवल प्रचार तक ही बांध लिया जाता है, उस देश का समाज सर्वतोन्मुखी विकास से क्या वंचित नहीं रहता ? गनीमत है, अभी भारत में ये बंधन कड़े नहीं हुए हैं। यह बात दूसरी है कि साहित्यकारों में स्वयं जीवन न हो और वे अर्थ, अधिकार और प्रतिष्ठा के लोभ में अपनी आत्मा को बेच दें' इतना कह कमल चुप हो गया और उसने गौर से उस अधिकारी की ओर देखा, जिसकी त्यौरी कुछ चढ़ गई थी।

'आपसे कुछ नये विचार जानने को मिले, फिर भी मैं आपके कथन से सहमत नहीं हूँ मिस्टर मिश्र'।

'अपने अपने विचार हैं महोदय, आवश्यक नहीं कि इनसे कोई सहमत हो ही।' इतना कह कर कमल उठ गया। उसने खाली प्लेट यथास्थान रखी और बैठक में चला गया। वहाँ ट्राली रखी हुई थी, उसने एक ग्लास में सोडा उँडेल लिया और धीरे धीरे पीने लगा। वही महिला कमल के पास वाले सोफे पर फिर आकर बैठ गई।

'इधर आ जाइए मिस्टर मिश्र' उसने चेहरे पर मुलायमियत और मुस्कुराहट लाते हुए कहा।

'मैं यहीं ठीक हूँ, धन्यवाद !' कमल को उससे कुछ ग्लानि होने लगी थी। वह उस महिला की चिपकन से कुछ तंग आ गया था।

प्रायः सभी अभ्यागत भोजन करके बैठक में आ गए थे। कमल सिगरेट जलाकर पीने लगा। चिताम्बरे और वह अधिकारी सिगार पी रहे थे। नीला जब आई तो चिताम्बरे ने उसे अपने और अधिकारी के बीच बैठा लिया। पीने का दौर फिर चला, लेकिन इस बार केवल दो तीन व्यक्ति ही ले रहे थे, जिनमें एक वह अधिकारी भी था। वह बड़ी लालसा भरी निगाहों से बराबर नीला की ओर देख रहा था और कमल को वे निगाहें अच्छी नहीं लगीं। तभी कुछ लोग विदा लेकर जाने लगे। कमल भी उन्हें बाहर तक छोड़ने गया। वह अधिकारी और महिला अभी बैठे ही थे। कमल को कुछ ऐसा आभास हो चला था कि वह महिला उसमें दिलचस्पी रखती है और अधिकारी नीला में। इस बार चिताम्बरे उठ कर अपने कमरे में चला गया था। डाइनिंग रूम की बत्ती बुझा दी गई थी। कमरे में केवल लैंप का प्रकाश रह गया था। सोफे पर नीला और वह अधिकारी पास पास बैठे थे। अधिकारी कुछ नशे में था और उसकी मुद्रा से ऐसा प्रगट होता था कि उसे कमल की उपस्थिति खल रही है। कमल समझते हुए भी नीला को इस स्थिति में न जाने क्यों अकेला छोड़ना नहीं चाहता था। तभी अन्यमनस्क-सी वह महिला उठी और उसने जाने की स्वीकृति चाही। नीला उसे विदा करने के लिए उठकर जाने लगी लेकिन उस अधिकारी ने नीला का हाथ पकड़ लिया। कमल ही उस कमरे में ऐसा व्यक्ति बचा था जिसे शिष्टाचार के नाते उस महिला को विदा करने जाना पड़ा।

'कल रात्रि में आप मेरे यहाँ भोजन कीजिए न' उस महिला ने आग्रहपूर्वक कमल से कहा।

'कल मैं एक अन्य स्थान पर आमंत्रित हूँ इसलिए क्षमा चाहता हूँ। निमंत्रण के लिए धन्यवाद।' कमल ने उसे टालने के ख्याल से कहा। महिला को कुछ निराशा हुई। उसने कमल का हाथ दबा दिया। कमल का मन ग्लानि से भर गया। उसने जैसे तैसे उस महिला को विदा

किया और वह कमरे में लौट आया। वह अधिकारी नीला पर झुका हुआ था और नीला उसे परे धकेल रही थी। कमल को यह बेताबी और बेतकुल्लुफी बुरी लगी। कमल को आता देख वह अधिकारी पीछे हट गया। उसका चेहरा नशे में तमतमाया हुआ था। उसने बड़ी ही क्रूर दृष्टि से कमल की ओर देखा। इतने में चिताम्बरे अपने कमरे में से बाहर आ गया। उसे देख कर वह अधिकारी उठ खड़ा हुआ और चिताम्बरे को सम्बोधित् करते हुए बोला :

'अच्छा अब मैं चलता हूँ, आप मुझसे कल आफिस में मिल लीजिए' इतना कह वह बाहर की ओर चल दिया। उसने कमल पर उपेक्षा भरी निगाह डाली और नीला को इस प्रकार देखा मानो उसे ज़िंदा ही निगल जाना चाहता हो। चिताम्बरे के चेहरे का रंग उड़ गया। वे दोनों चलते चलते कमल के इस समय के आचरण के सम्बन्ध में अपनी अपनी मनोदशा के अनुसार सोच रहे थे। चिताम्बरे खुशामद से हाथ मलते हुए बड़ा विनम्र चेहरा बनाए उस अधिकारी के साथ चल रहा था। नीला ने प्रशंसा भरी निगाहों से कमल को ताका और राहत की एक गहरी साँस ली। जब चिताम्बरे ने बैठक में प्रवेश किया, उसकी मुद्रा कठोर हो गई थी। वह नीला के पास बैठ गया।

'नीला तुम्हें क्या होगया है ?' चिताम्बरे ने रूखा सा प्रश्न किया। नीला ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह भावहीन नेत्रों से शून्य की ओर देखती रही। कमल ने अब उठकर जाना ही ठीक समझा। वह उठा और चिताम्बरे को सम्बोधन कर बोला 'रात काफ़ी हो गई है। अब सोया जाय। आज के आयोजन के लिए धन्यवाद।' उसने दोनों की ओर हाथ जोड़े और जैसे ही वह जाने के लिए मुड़ा नीला बोली :

'ठहरिये कमलजी, आज मैं आपके कमरे में सोऊँगी'

और वह उठकर कमल के कमरे में चली गई। चिताम्बरे अवाक् देखता रह गया। सहसा उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। कमल मुस्कुराया। उसने ट्रॉली में से एक गिलास उठाकर उसमें बरफ डाला और लेमन उँडेलकर चिताम्बरे के हाथ में थमा दिया और खुद सिगरेट

जलाकर बड़े इत्मीनान से बैठ गया।

'यह सब तुम्हारे बोये विष बीज हैं। क्या कर दिया तुमने नीला को? वह मुझसे इतनी बेरुखी हो गई?' चिताम्बरे ने भन्नाते हुए अंग्रेज़ी में कहा। कमल ने भी अंग्रेज़ी में ही उत्तर दिया :

'कुछ मानवीय मूल्यों को भी समझिए जनाब, आपने तो उसे जैसे एक जड़ वस्तु ही समझ लिया है। रुपए जैसी निर्जीव वस्तु के समान आप उसे भी उपयोग में लाना चाहते हैं। आखिर शरीर के अलावा भी उसका अपना कुछ है, मन है, आत्मा है। उसकी विवशताओं का अनुचित लाभ उठाना तो ठीक नहीं। उसने जितना कुछ आपसे प्राप्त किया है उससे बहुत कुछ अधिक आपको दिया भी है। उसकी उपेक्षा न कीजिए। अब शांत होइए और जाकर सो रहिए।'

चिताम्बरे का आवेश जैसे उतरा। उसने बड़ी अविश्वासपूर्ण मुद्रा में कमल की ओर देखा और बोला :

'और आप कहाँ सो रहे हैं?' कमल खिलखिला कर हँस दिया।

'आपके अधिकार का अतिक्रमण करने की मेरी किंचित भी इच्छा नहीं है, विश्वास न हो तो आपके साथ आपके कमरे में सो जाऊँ। आप निश्चिन्त हो सोइए, मैं यहाँ सोफे पर सो रहूँगा। अच्छा गुड नाइट' चिताम्बरे उठा और सर झुका कर अपने सोने के कमरे में चला गया। वह कमल को एक तकिया और कम्बल दे गया। कमल पैर फैला कर लेट गया। उसने एक अंगड़ाई ली। आज शाम की महफिल उसके मस्तिष्क में उभर आई। धन, यौन मनोविकार, नया समाज, नई सभ्यता। वह मुस्कुराया और निश्चिन्त हो सो गया।

प्रातः चिताम्बरे के आसावरी के स्वरों ने कमल को जगाया। वह आज देर तक सोता रहा था। आँख बन्द किए ही उसने अंगड़ाई ली, फिर आँखें मलीं और जैसे ही आँखें खोलीं, देखा सामने नीला बैठी मुस्कुरा रही थी। दोनों मौन एक दूसरे को देखते रहे। नीला प्रसन्न नजर आती थी, कमल आसावरी के स्वरों में खोया हुआ था। रात का दानव, प्रातः देवतुल्य आचरण। कमल कभी नीला के रात के व्यवहार

और कभी चिताम्बरे के व्यक्तित्व के विषय में सोचता रहा। उसका ध्यान एकाग्रित नहीं हो पा रहा था कि भजन समाप्त हुआ।

'आज तो बहुत प्रसन्न नज़र आ रही हो नीला' कमल ने प्रश्न किया।

'मैं अपनी विजय पर प्रसन्न हूँ। रात मुझे अपनी मनोदशा से बहुत संघर्ष करना पड़ा। मेरे मन में यह भी ख्याल आया कि श्रीकांत के साथ मेरे सम्बन्ध का भी अब अंत होने जा रहा है। लेकिन हमेशा की तरह मैं इस बार निराश नहीं हुई। मेरी मज़बूरियों ने मुझे जकड़ा नहीं। वास्तव में आज मैं प्रसन्न हूँ, बहुत प्रसन्न। क्योंकि मैं कुछ ऐसा अनुभव कर रही हूँ, कि आज अनायास ही मैं अपनी मानसिक दासता से मुक्त हो गई हूँ।'

नाश्ता करके कमल चाची के यहाँ चला गया। चिताम्बरे अपने काम पर चला गया। आज वह बहुत उदास दिखाई देता था। वह शायद सोचता हो कि नीला जैसा गल (चारा) डाल कर कमल जैसी मछली को फँसाने में उसे कोई लाभ नहीं होगा, दूसरी ओर नीला का एकाएक बदला हुआ व्यवहार और आचरण उसके लिए समस्या बन गया था।

चाची के यहाँ सामान रखकर नीला और कमल बाज़ार चले गए। कमल ने अपनी पत्नी और बच्चों के लिए कुछ उपहार और खिलौने खरीदे और नीला के लिए एक बढ़िया साड़ी। नीला जब कमल की पत्नी के लिए उपहार लेने लगी तो कमल ने मना कर दिया।

'तुम मुझसे छोटी हो और अब मेरी बहन हो। हम लोग तुमसे उपहार लेंगे या तुम्हें देंगे?'

'तो मैं भी यह उपहार नहीं लूँगी'

'वाह खूब, यह तो भाई की ओर से बहन को भेंट है।' नीला निरुत्तर हो गई। लेकिन कमल के बारबार मना करने पर भी नीला ने उसके बच्चों के लिए उपहार ले डाले और कमल को उन्हें स्वीकार करना पड़ा। दोनों ने अलीबाबा में लंच लिया और लंच के बाद कमल नीला को

उसके घर छोड़ आया। शाम को मिलने का वादा था। नीला आज बहुत प्रसन्न थी। नीला को घर छोड़ कमल सीधा चर्चगेट गया। मेल में उसने अगले दिन के लिए सीट रिज़र्व कराई और फिर सतीश के घर आ गया।

घर पहुँचते ही उसे संदेश मिला कि देहली से उसकी पत्नी का टेलीफोन आया है कि छोटे लड़के को टिटेनस हो गया है और वह फौरन लौट आए। कमल यह समाचार पा कुछ घबरा गया, उसे अपने बच्चों से विशेष मोह था। अगला सारा दिन उसे नीला के साथ बाहर बिताना था और नीला के भविष्य का कार्यक्रम बनाना था। नीला का अब अधिक समय तक चिताम्बरे के साथ टिका रहना सम्भव नज़र नहीं आता था। इस बार नीला स्वयं भी अपने विगत जीवन की पुनरावृत्ति के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी। नीला आश्वस्त और उत्साहित थी। लेकिन सब सोचा हुआ कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो गया और स्वयं कमल का मन भी। उसने तुरन्त नीला को फोन किया लेकिन वह नहीं मिली। उसने चिताम्बरे को फोन किया, वह भी नहीं मिला। उसके कार्यालय से केवल यही पता चल सका कि वह कहीं गया हुआ है और कब तक लौटेगा कुछ पता नहीं। वह आई० ए० सी० के दफ्तर गया और उसने शाम दिल्ली जाने वाले प्लेन में सीट बुक करवा ली। लौटते में चर्च गेट जाकर रिज़र्वेशन कैंसल करवाया। इस सारे समय उसे जब भी और जहाँ भी अवसर मिला, वह नीला या चिताम्बरे से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयत्न करता रहा किन्तु दोनों ही नहीं मिल पा रहे थे। नीला का चेहरा निरंतर कमल के मानस पट पर उभर उभर आता था, वह उससे मिलने के लिए व्यग्र था। उसके पास समय कम था। दिन ढल चला था। वह फिर नीला के घर पहुँचा लेकिन वहाँ ताला लगा हुआ था। निराश वह सतीश के घर लौट आया। एरोड्राम रवाना होने के अंतिम क्षण तक उसने नीला से सम्पर्क स्थापित करना चाहा, पर दुर्भाग्य, वह नहीं मिल सकी और नहीं ही मिली।

रात लगभग आठ बजे नीला खुश-खुश सतीश के घर पहुँची।

उसके हाथों में एक बंडल था। उसने दरवाज़े की घंटी का बटन दबाया। कुछ क्षणों में दरवाज़ा खुला और सतीश बाहर आया।

'आइए नीला बहन, दादा तो अभी-अभी दिल्ली फ्लाइ कर गए।'

'ऐं !' नीला एकदम हताश हो गई उसका चेहरा आभाहीन हो गया और उसके हाथ से बंडल छूट गया। आँखों के आगे निराशा के बादलों की कालिमा छा गई। वह दीवार से टिक गई। अनेकों विचार उसके मन में एक साथ ही घूम गए। कमल चला गया और अचानक। उसकी आँखों के आगे नैनीताल वाली घटना घूम गई। क्या हुआ कमल को इस बार ?

'अन्दर आ जाइए न नीला बहन' सतीश ने कहा।

नीला ने झुक कर बंडल उठाया। दोनों हाथों में बंडल थामे नीला मौन, किंकर्तव्यविमूढ़ सी दरवाज़े पर ही खड़ी रही। सतीश नीला की मुखमुद्रा और भावों को समझ पाने में असमर्थ था। वह अन्दर चला गया और नीला के लिए कमल जो पत्र दे गया था, वह ले आया।

'दादा आपके लिए यह पत्र दे गए हैं, अन्दर आ जाइए। इतमीनान से बैठकर पढ़ लीजिए।' नीला ने जैसे कुछ सुना ही न हो। उसने सतीश के हाथ से पत्र झपट लिया और बंडल को बगल में दबाकर दरवाज़े से आती रोशनी में ही पत्र खोल डाला :

'मेरी बहन नीला,'

मैं अचानक जा रहा हूँ। बिना तुमसे मिले। कितनी बेबसी और वेदना को हृदय में संजोए लिए जा रहा हूँ। तुम्हारी भाभी का टेलीफोन कॉल आया था, छोटे बच्चे को टिटेनस हो गया है। मैं रुक नहीं सकता था। एक ओर बच्चों की ममता थी और पत्नी की बेबसी, और दूसरी ओर तुम थीं। यह न समझना बहन कि इस बार मैं फिर नीला से दूर भागा जा रहा हूँ। तुम्हारे प्रति मन में कितनी वेदना लिये जा रहा हूँ, मेरा मन जानता है। मैंने रवाना होते होते, अंतिम क्षण तक तुम्हें ढूंढा है। निराश, यह पत्र ऐरोड्रोम पर लिख रहा हूँ। नीला, मेरी बहन ! दुनिया में बस तुम ही मेरी एक बहन हो। बहन के

लिए सारा स्नेह अपने में केन्द्रित कर लिये जा रहा हूँ। हताश न होना नीला, अब तुम इस संसार में बेआसरा नहीं हो। भाई के द्वार सदैव तुम्हारे स्वागत में खुले रहेंगे। मन में आस्था लिये जियो बहन और निराशा के क्षणों में मैं सदैव तुम्हारा हूँ। अभी विदा,

शुभेच्छु,

कमल

नीला ने एक दीर्घ निश्वास छोड़ी और पत्र तथा बंडल को छाती के साथ दबा लिया। दरवाज़े के पास, दीवार से सर टिकाए वह हताश, निश्चल और भावना-शून्य सी खड़ी थी, उसकी आँखों में आँसू डबडबा रहे थे।